chapter. 3

# अध्याय-३

## ' रघुवंश दीपक ' तथा उसके रचयिता

## अध्याय ३

## 'रघुवंश दीपक और उसके रचयिता'

पूर्ववर्ती अध्यायों में प्रस्तुत हिन्दी राम काव्य धारा के प्रबन्ध-काव्यों के अनुशीलन के आधार पर यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि 'रामचरित मानस' के परवर्ती राम-काव्य में, विशेष कर १८वीं शताब्दी तक की राम काव्य धारा पर महाकवि तुलसी दास जी की ही रचना पद्धति का अधिकांशत: प्रभाव है। इसके साथ ही हम यह भी लक्ष्य कर चुके हैं कि रीति कालीन प्रबन्धात्मक राम काव्यों में 'रघुवंश दीपक' ही ऐसा ग्रन्थ है जो 'रामचरित मानस' के बाद की सर्वाधिक सशक्त रचना है। हिन्दी राम काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ एवं महान प्रतिभावान कवि गोस्वामी तुलसी-दास जी ने अवधी के जिस परिमार्जित स्वरूप को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया, उसे उनके परवर्ती कवियों में से अनेक ने अपनी रचनाओं में स्वीकार कर परम्परागत दायित्व का निर्वाह किया है। 'रघुवंश दीपक' का इस दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है - क्योंकि उसमें प्रयुक्त अवधी का रूप 'रामचरित मानस' की ही भाँति अत्यन्त परिमार्जित एवं साहित्यिक है। इतनी महत्वपूर्ण कृति के होते हुये भी इस दिशा में हिन्दी साहित्य के अध्येताओं का ध्यान बहुत ही कम गया है। दीर्घ-कालीन उपेक्षा का कारण कदाचित् 'रामचरित मानस' जैसी रचनाओं का व्यापक प्रभाव ही रहा हो। इस काव्यगत मूल्यांकन परवर्ती अध्याय में किया जायेगा। सम्प्रति इस अध्याय में 'रघुवंश दीपक' ग्रन्थ के परिचय के साथ साथ उसके रचयिता, रचनाकाल तथा रचना के मूल स्रोत, रचना के उद्देश्य एवं रचना की नवीनता आदि से सम्बद्ध अध्ययन सूत्रों का विवेचन उपलब्ध सामग्री के आधार पर किया जायेगा।

### : रघुवंश दीपक सामान्य परिचय तथा उसका प्रकाशन :

रघुवंश दीपक का प्रथम प्रकाशन सन् १६५१ ई० में पब्लिक प्रेस, मुरादाबाद से श्री रामभरोसे लाल गुप्त के द्वारा हुआ। इस ग्रन्थ के संग्रह-

कर्ता स्वर्गीय लालता प्रसाद जी गुप्त श्री रामभरोसे लाल के मामा थे। प्रकाशन से पूर्व इस ग्रन्थ का परिचय यद्यपि हिन्दी साहित्य के बहुत से विद्वानों को था किन्तु उसकी विस्तृत जानकारी अथवा विस्तृत चर्चा तथा सम्यक् अध्ययन, विवेचन अब तक किसी ने नहीं प्रस्तुत किया। इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम उल्लेख `शिवसिंह सरोज ` में दो स्थानों पर मिलता है। डॉ० त्रिलोकी-नारायण दीक्षित द्वारा सम्पादित तथा तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ द्वारा प्रकाशित `शिव सिंह सरोज ` सन् १९६६ ई० के संस्करण में कवि सहज रामजी का प्रथम उल्लेख पृष्ठ ३५१ पर क्रमांक ७६३ पर तथा द्वितीय उल्लेख पृष्ठ ३५७ पर क्रमांक ७८६ पर मिलता है। पृष्ठ ३५१ का उल्लेख इसप्रकार है-

७६३ सहज राम बनिया (१)

पैतेपुर, (सीतापुर)

(रामायण) सं० १८६१ में उ०

` इस कवि ने रामायण सातों काण्ड बहुत ललित `हनुमन्नाटक ` और ` रघुवंश ` के श्लोकों को उल्था करके बनाई है। ` उदाहरण में दो चौपाइयां दी गई हैं -

सीता रत्लक मल्ल कठोरा । मगन भयउ उर भूषात कोरा ।।
भूप जरा रिपु सत्य उभासी ।तेहि क्षन बहुरि रमापति घांसी।।

` शिवसिंह सरोज ` का द्वितीय उल्लेख इस प्रकार है -

७८६, सहजराम ( सनाढ्य ) बन्धुआ वाले (२)

सं० १९०५ में उ०

` इन्होंने प्रह्लाद चरित्र ग्रन्थ बनाया है।` प्रह्लाद चरित्र के जो अंश उद्धृत किये गये हैं वे इस प्रकार हैं -

`राम भजन को कौन फल, विद्या को फल कौन ।
घाटा नफा विचारिकै, विप्र पढ़ौं मैं तौन ।।
वरनत वेद पुरान बुध, शिव विरंचि सनकादि ।
ये बाधक हरि भक्ति के, विद्या वित बनितादि।।
खाय मातु मोदक कटुक, पौ बदन विच आइ ।
जठर अग्नि की ज्वाल सों, जीव विकल होइ जाइ।।

इन दोनों उल्लेखों में 'सहजराम' जी द्वारा रचित 'रामायण' तथा 'प्रह्लाद चरित्र' के जिन अंशों का उदाहरण दिया गया है वे दोनों ही ~~अंश~~ प्रकाशित पुस्तक 'रघुवंश दीपक' में दो भिन्न भिन्न स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। [1] अस्तु यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उपर्युक्त दोनों ही रचनाओं के रचयिता एक ही थे और वह अन्य कोई न होकर सहजराम जी थे तथा 'रामायण' के नाम से उल्लिखित रचना 'रघुवंश दीपक' ही है। 'शिवसिंह सरोज' में जिन दो 'सहजराम' का उल्लेख मिलता है उनमें 'प्रथम' तो हमारे चर्चित कवि सहजराम ही हैं यद्यपि काल संबंधी उल्लेख में अवश्य अन्तर पड़ता है क्योंकि 'रघुवंश दीपक' के रचयिता ने ग्रन्थ में ही ~~ग्रन्थ के~~ उसके रचनाकाल की घोषणा संवत् १७८९ [2] की है। अस्तु संवत् १८६१ तक उनकी उपस्थिति सम्भव नहीं प्रतीत होती। किन्तु दूसरे उल्लेख में जिन सहजराम को सनाढ्य ब्राह्मण तथा बन्धुआ वाले कहकर संवत् १९०५ तक उपस्थित माना गया है वह नितान्त काल्पनिक तथा अशुद्धियों से पूर्ण है क्योंकि 'प्रह्लाद चरित्र' के जिस अंश का उद्धरण 'सहजराम बन्धुआ वाले' के साथ दिया गया है वह 'रघुवंश दीपक' के रचयिता 'सहजराम की रामायण' का ही एक अंश है। बन्धुआ ग्राम की सामग्री की छानबीन हम परवर्ती पृष्ठों में करेंगे। यहाँ केवल इतना उल्लेख कर देना ही पर्याप्त होगा कि विद्वानों ने 'शिवसिंह सरोज' में उल्लिखित तिथियों को ~~जहाँ~~ अन्य प्रमाणों से पुष्ट न होने ~~प्रामाणिक~~ की स्थिति में अप्रामाणिक तथा ~~नहीं मानकर अपितु~~ भ्रम उत्पन्न करने वाली माना है। [3]

'रघुवंशदीपक' का उल्लेख इसी प्रकार 'मिश्रबन्धु विनोद' भाग १ तथा

---

१- प्रथम उदाहरण 'रघुवंश दीपक' के दोहा २२ लंकाकाण्ड से पूर्व की चौपाइ तथा द्वितीय उदाहरण बालकाण्ड के दोहा ४६ तथा ५३ में पूर्णत: वैसा ही मिलता है।

२- रघुवंश दीपक बालकाण्ड - सम्वत सत्रह सौ नव्वासी, चैत्रमास ऋतुराज प्रकाशी।

३- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र- हिन्दी साहित्य का अतीत' पृष्ठ ८३५-परिशिष्ट

भाग २ में अलग-अलग दो स्थानों पर किया है। प्रथम उल्लेख में कवि श्री सहज राम जी को हरिश्चन्द्र कालीन अन्य लेखकों की सूची में सम्मिलित किया है जिसमें उन्हें तुलसीदास के ढंग पर रची गई `रामायण का रचयिता` माना है । १ ऐसा प्रतीत होता है कि मिश्रबन्धुओं ने `शिवसिंह सरोज` के द्वितीय उल्लेख को ही आधार मानकर `रघुवंश दीपक` को हरिश्चन्द्र कालीन रचना मान लेने की भूल की है। मिश्र बन्धुओं ने `सरोजकार` के काल निर्देशन को भ्रम पूर्ण मानकर २ आगे चलकर अपनी इस भूल का परिष्कार कर लिया है और मिश्रबन्धु विनोद भाग २ में `पूर्वालंकृत प्रकरण` में कवि का परिचय देते हुए उन्हें `सहजराम` वैश्य तथा ग्रन्थ का नाम `रघुवंश दीपक` रचनाकाल सं० १७८६ वि० माना है। ३ मिश्र बन्धुओं के इस द्वितीय उल्लेख का आधार नागरी प्रचारिणी सभा काशी के हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्ट सन् १९२३ है जिसका उल्लेख उन्होंने यथा स्थान कर दिया है। `हिन्दी साहित्य का इतिहास` में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस रचना का उल्लेख कहीं नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्यजी के दृष्टिपथ में यह ग्रन्थ नहीं आ पाया। हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्ट सन् १९१२ तथा १९२३ में 'रघुवंश दीपक' का उल्लेख मिलता है जिसके रचयिता सहजराम जी ही हैं। ४ इन दोनों ही खोज-रिपोर्टों में `रघुवंश-दीपक` का लिपिकाल सं० १८९१ तथा प्राप्ति स्थान जिला सीतापुर अन्तर्गत ग्राम नेरी के निवासी कुंवर रामेश्वरसिंह की सूचना प्रकाशित हुई है। यह सूचना पूर्णत: प्रामाणिक तथा पूर्ण है क्योंकि इसका समर्थन अन्य सूत्रों के द्वारा भी हो जाता है ।

---

१-मिश्रबन्धु विनोद भाग १ पृष्ठ १४१ सं० १९६३ संस्करण

२-मिश्रबन्धु विनोद भाग १ पृष्ठ १४२ सं० १९८३ संस्करण

३-मिश्रबन्धु विनोद भाग २ पृष्ठ ६२२ सं० १९८४ संस्करण

४- नागरी प्रचारिणी सभा काशी की हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्ट सन् १९१२ ( १६३ ) तथा १९२३ ( ३६७ )

'रघुवंश दीपक' ग्रन्थ का परिचय देते हुए 'अवध के प्रमुख कवि' के लेखक डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र ने उसे - प्रबन्ध-काव्य मानकर श्री छायानुवाद कहा है १ किन्तु डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य' द्वितीय खण्ड ( सम्पादक डा० धीरेन्द्र वर्मा तथा ब्रजेश्वर वर्मा ) में राम काव्य खण्ड के अन्तर्गत इस कृतिका कहीं उल्लेख नहीं किया यद्यपि उन्होंने रामकाव्यों की एक लम्बी सूची अवश्य दी है। यहाँ यह निर्दिष्ट कर देना हमें आवश्यक प्रतीत होता है कि यद्यपि ग्रन्थ के प्रकाशन के भी लगभग दो दशक हो रहे हैं किन्तु आज भी उसके सबंध में पूर्ण जानकारी न तो हिन्दी पाठकों को है और न अधिकांश हिन्दी विद्वानों को ही है।

निष्कर्ष :

(१) उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य सामने आता है कि 'रघुवंश दीपक' के विषाय में आरम्भिक अध्ययन अवश्य ही भ्रमपूर्ण रहे। सम्भवत: सरोजकार जैसे लेखकों ने मूल ग्रन्थ को पढ़ने का कष्ट नहीं किया जिससे काल-निर्धारण में उनसे बड़ी भारी भूल होगई ।

(२) हिन्दी के अध्येताओं द्वारा भी यह कृति सर्वथा उपेक्षित ही रही जिससे इसका साहित्यिक मूल्यांकन अब तक नहीं हो सका।

## ग्रन्थ परिभाषा तथा सामान्य विशेषतायें :

दोहा, चौपाई तथा विभिन्न प्रकार के छन्दों में रचित इस प्रबन्ध काव्य का कलेवर 'रामचरितमानस' की अपेक्षाकृत पर्याप्त बड़ा है। गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित रामचरित मानस की मंझली प्रति में ६०७ पृष्ठ हैं किन्तु इसी आधार में प्रकाशित रघुवंश दीपक में ७०६ पृष्ठ हैं । दोहों की संख्या भी रामचरित मानस की अपेक्षा अधिक है। 'रामचरित मानस' में कुल १०७४ दोहे हैं किन्तु 'रघुवंश दीपक' में उनकी संख्या १३१५ है। चौपाइयों की संख्या भी 'रामचरितमानस' की तुलना में अधिक है। कलेवर के विस्तार का कारण यह

---

१- अवध के प्रमुख कवि ' लेखक -डा० ब्रजकिशोर मिश्र - पृष्ठ २७५

प्रतीत होता है कि मूल राम कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं का अति विस्तार के साथ 'रघुवंश दीपक' में वर्णन मिलता है। जिन कथाओं का 'रामचरितमानस' में केवल उल्लेख मात्र मिलता है, उन सब का सविस्तार वर्णन 'रघुवंश दीपक' में मिलता है। इसके अतिरिक्त कुछ नवीन पौराणिक कथाओं को भी कवि ने अपने ढंग से ग्रहण कर उनका वर्णन ग्रन्थ में किया है। अत: नवीन प्रसंगों के समायोजन तथा कथावस्तु को अपने निजी ढंग से संगठित करने के दृष्टिकोण से इस प्रबन्ध-काव्य का महत्व अनुपेक्षणीय है, जिसका सम्यक् अनुशीलन-परीक्षण परवर्ती अध्याय के अन्तर्गत हम प्रस्तुत करेंगे।

'रघुवंश दीपक' के संबंध में दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि यह हिन्दी के रीतिकाल की रचना होते हुये भी रीतिकाल की श्रृंगारी प्रवृत्तियों के प्रभाव से प्राय: अछूती है। कवि की रसिक-भावना की भक्ति के प्रति झुकाव होने के कारण कहीं-कहीं पर भले ही रीतिकाल के श्रृंगार का कुछ प्रभाव दिखाई पड़ता हो अन्यथा सम्पूर्ण काव्य राम-काव्य की परम्परागत मर्यादा की रक्षा करता हुआ प्रतीत होता है। कवि ने 'रामचरित मानस' की परम्परा पर ही राम कथा के प्रमुख पात्रों को चित्रित किया है तथा भक्ति, ज्ञान, आध्यात्मिक विचारणाओं में वह गोस्वामी तुलसीदास जी की ही पद्धति का अनुसरण करता हुआ दिखाई देता है। रीतिकालीन राम-परक प्रबन्ध-काव्यों की लम्बी परम्परा का समुचित निदर्शन पूर्ववर्ती अध्याय के अन्तर्गत हम कर चुके हैं जिनमें 'रघुवंश दीपक' का स्थान ~~सर्वोपरि~~ महत्वपूर्ण ठहरता है। इस काल के राम परक प्रबन्धात्मक काव्यों में 'रघुवंश दीपक' तथा 'गोविन्द रामायण' को छोड़कर प्राय: सभी में रसिक भावना का ही गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। अस्तु यदि यह कहा जाये कि 'रघुवंश दीपक' रीतिकाल की रचना होते हुये भी ~~अपने मूलरूप में~~ वस्तुत: भक्तिकाल की भावधारा से ही सम्बद्ध है तो ~~अतिशयोक्ति~~ अनुचित न०

रघुवंश दीपक की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ :

(१) 'रघुवंश दीपक' की उपलब्ध हस्तलिखित प्रतिलिपियों में एक प्रतिलिपि 'सरस्वती सदन' हरदोई में सुरक्षित है। इस प्रतिलिपि का लिपिकाल सं० १६०८ वि० है जिसके लिपिकार

मौला साह टेढ़ना ग्राम निवासी थे। प्रकाशित 'रघुवंश दीपक' का इस प्रतिलिपि के साथ पूर्णतः साम्य है।

(२) एक दूसरी हस्तलिखित प्रतिलिपि बेरी ग्राम जिला सीतापुर के स्वर्गीय कुंवर रामेश्वर सिंह जमीदार के यहाँ थी है जिसका लिपिकाल सं० १८६१ वि० है और उनके वंशधरों के पास सुरक्षित है। इस प्रतिलिपि से भी प्रकाशित 'रघुवंश दीपक' के पाठ से पूर्णतः साम्य है।

(३) 'रघुवंश दीपक' की एक हस्तलिखित प्रतिलिपि श्री रामभरोसे लाल गुप्त (प्रकाशक 'रघुवंश दीपक' ग्राम- पिहानी, जिला हरदोई) के पास भी सुरक्षित है। यही वह प्रतिलिपि है जो उन्हें उनके मामा तथा ग्रन्थ के संग्रहकर्ता स्वर्गीय श्री लालताप्रसाद जी वैश्य से प्राप्त हुई थी जिसके आधार पर 'रघुवंश दीपक' का ~~प्रस्तुत~~ पूर्वनिर्दिष्ट संस्करण तैयार किया गया है। इस प्रतिलिपि का उपर्युक्त दो प्रतिलिपियों से पूर्णतः साम्य है।

'रघुवंश दीपक' की मूल प्रति :

'रघुवंश दीपक' की मूल प्रति कहाँ है, इसका पता खोज करने पर भी नहीं मिल सका। ग्रन्थ के प्रकाशक श्री राम भरोसे लाल गुप्त ने इन पंक्तियों के लेखक को एक पत्र द्वारा सूचना दी है कि मूल प्रति हरदोई जिलान्तर्गत भोगियापुर ग्राम के रईस श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह जी के यहाँ थी, जहाँ से उसे कोई प्रकाशन के लिये बम्बई ले गया था किन्तु उसका अब तक पता नहीं चल सका कि कहाँ है। १

रघुवंश दीपक में कतिपय प्रक्षिप्त अंश :

'रघुवंश दीपक' के संग्रहकर्ता स्वर्गीय श्री लालताप्रसाद जी वैश्य ने कतिपय प्रक्षिप्त अंशों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनके अनुसार प्रस्तुत 'रघुवंश दीपक' के पृष्ठ ४८४ पर दिया गया छन्द जो सुन्दरकाण्ड के अन्तर्गत दोहा ५६ तथा ५७ के बीच में प्रकाशित है, मूल प्रति में नहीं था। २

---

१- रघुवंश दीपक के प्रकाशक, श्री रामभरोसेलाल गुप्त का प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक को लिखा गया दिनांक ५-३-६६ का पत्र। दे० परिशिष्ट १।
२- रघुवंश दीपक शुद्धिपत्र पृष्ठ ३०,३१।

इसी प्रकार अन्य दो छन्द जो पृष्ठ ७१ तथा ११७ पर बालकाण्ड के अन्तर्गत क्रमश: दोहा क्रमांक १३१ तथा १३२ एवं २२१ तथा २२२ के मध्य प्रकाशित हुये हैं मूल रघुवंश दीपक में नहीं थे । १

इन छन्दों की रचना के सबंध में कहा गया है कि इन्हें भौगियापुर ( सीतापुर ) के रईस स्वर्गीय श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह जी ने की थी यद्यपि इनमें सह्जराम जी का नाम जुड़ा हुआ मिलता है। २ `सरस्वती सदन` हरदोई की प्रति में प्रकाशित ` रघुवंश दीपक ` में पृष्ठ ७१ तथा ११७ पर मिलने वाले उपर्युक्त छन्द नहीं मिलते किन्तु पृष्ठ ४८४ पर प्रकाशित छन्द इस प्रति में अवश्य मिलता है। ऐसी संभावना हो सकती है कि स्वर्गीय सुरेन्द्र बहादुरसिंह ( भौगियापुर -सीतापुर ) के पास वाली प्रति में ,जिसे रघुवंश दीपक के प्रकाशक के अनुसार मूल प्रति कहा जाता है, येह सभी छन्द रहे हों और उसी के आधार पर स्व० सुरेन्द्र बहादुर सिंह जी ने इन छन्दों की रचना से अपना सबंध जोड़ लिया हो। एक दूसरी संभावना यह भी है कि यह सभी छन्द सह्जराम जी के द्वारा न रचे गये हों और प्रक्षिप्त हों । सम्भवतः स्वर्गीय सुरेन्द्र बहादुर सिंह ~~जिनका~~ (उपनाम `मित्र ` कवि) ने ~~थे~~ `रघुवंश दीपक` के संग्रहकर्ता स्वर्गीय लालता प्रसाद जी के इन छन्दों सहित इस प्रतिलिपि को तैयार किया हो। नैरी ग्राम निवासी ( जिला सीतापुर के अन्तर्गत ) स्वर्गीय कुँवर रामेश्वर सिंह जी के पास वाली प्रतिलिपि तथा ` सरस्वती सदन ` हरदोई में उपलब्ध प्रतिलिपि में कोई अन्तर नहीं है , इसका उल्लेख पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया जा चुका है।

अस्तु `रघुवंश दीपक` का प्रकाशन प्रामाणिक हस्त लिखित प्रति के द्वारा ~~की~~ हुआ प्रतीत होता है जो कवि श्री सह्जराम जी द्वारा लिखित मूल हस्तलिखित पाण्डुलिपि की विभिन्न प्रतिलिपियों के आधार पर ही है। ~~इस निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होती ।~~

---

१- रघुवंश दीपक शुद्धिपत्र पृष्ठ ३०,३१

२-रघुवंश दीपक के पृष्ठ ७१,११७ तथा ४८४ में प्रकाशित सबंधित छन्दों में सह्जराम जी का नाम जुड़ा हुआ है।

रघुवंश दीपक के रचयिता :

'रघुवंश दीपक' के रचयिता भक्त कवि श्री सहज राम जी थे। ग्रन्थ के रचयिता के सबंध में अब तक किसी प्रकार का भ्रम अथवा विवाद कहीं पर भी किसी के द्वारा नहीं उत्पन्न किया गया। हिन्दी के उन सभी विद्वानों ने जिनका इस ग्रन्थ से अब तक परिचय हो पाया है एक स्वर से श्री सहजराम जी को ही इसका रचयिता स्वीकार किया है। ग्रन्थ के पर्यावलोकन से भी यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्राचीन कवियों की भाँति श्री सहजराम जी ने अपनी रचना के साथ अपने नाम की छाप स्थान-स्थान पर लगा दी है। कबीर, तुलसी, सूर आदि अनेक भक्त कवियों ने अपने पदों, दोहों, सोरठों और छन्दों के अन्त, मध्य या आदि में अपने नाम का उल्लेख कर दिया है। ठीक उसी प्रकार सहजराम जी ने भी 'रघुवंश दीपक' में प्राय: प्रत्येक ८ या १० दोहों, सोरठों या छन्दों के बाद अपने नाम की छाप उनके आदि, मध्य अथवा अन्तिम चरण में अवश्य लगा दी है। उदाहरण के लिये 'रघुवंश दीपक' के कतिपय दोहे सोरठे तथा छन्दों का उल्लेख इस स्थान पर अप्रासंगिक न होगा। ग्रन्थ के प्रत्येक काण्ड से एक या दो उदाहरण ही पर्याप्त होगें।

बालकाण्ड :

अजामील गज गृद्ध को, गणिका को गति दीन्ह।
'सहजराम' रघुवंश मणि, दोष विचारन कीन्ह।।६।।
सहजराम प्रह्लाद शिर, परसि पंकरुह पानि।
अन्तरहित नरहरि भये, निज सेवक सुखदानि।।७६।।
यद्यपि तुम समरथ सब लायक, सुरपति सखा कहाये जू।
जनक राय की कन्या व्याही, अवगुण सकल दुराये जू।।
'सहजराम' सुनि बचन व्यंग युत प्रेम सुधा रस साने जू।
मंद मंद मुस्काहिं महीपति, सुनि बिन मोल बिकाने जू।।

अयोध्या काण्ड :

दोहा - 'सहजराम' कुश साथरी, सोवत राम ससीय।
इन्द्रनीलमणि कमल मणि, मूरति अति कमनीय।।११८।।

सौरठा- 'सहजराम करि कौह, पठ्यै सुभट प्रचारि कै
कीजै घाटा रौह, उतरन देहु न सैन कहं । २२३।।

दौहा - 'सहजराम' रघुवंश दीपक दीपति सकल दिशि ।
मन गति करसि पतंश, राम चरण अवलोकि उर।।३०४।।

अरण्यकाण्ड÷

दौहा - 'सहजराम' वैकुण्ठ पति, लीन्ह अकुण्ठित बान ।
पुनि टंकौर कठौर धनु, कीन्ह विशिष संधान।।६८।।

छन्द - अत्रि विनय कीन्ही। भक्ति यौगि लीन्ही।
कृपा सिन्धु तैरै, सहजराम चैरै ।।

किष्किन्धाकाण्ड:

दौहा- 'सहजराम' संसार यह, सहजसिद्ध गति हौय ।
वै सब कहं देखन फिरै, उन हिन देखै कौय।।४८।।

सुन्दरकाण्ड:

राम रूप, गुणशील, बल, बौलनि मिलनि सुनाय।
'सहजराम' कपिराज सब, कहीं यथामति जाय ।।२६।।

लंकाकाण्ड:

'सहजराम' कपि भालु सब, कह निज बल माखि।
बौलै पवन कुमार तब, रामरूप उर राखि ।।५७।।

उत्तर काण्ड :

'सहजराम' बहु विनय करि, विदा भयै त्रिपुरारि।
लगै प्रशंसन कमलभव, वेद वचन मुख चारि ।।३१।।
निज अनुगामी जानि कै, स्वामी तुलसीदास ।
'सहजराम' उरवास करि, कीन्हौ ग्रन्थ प्रकाश।।१७२।।

कवि नै अपनै नाम के प्रयौग मैं किसी नियम का पालन नहीं किया किन्तु स्थान स्थान पर, दौहौ, सौरठौं तथा छन्दौं मैं अपनै नाम

की छाप लगाकर अपनी कृति के साथ सम्बद्धता के सबंध में - किसी भी प्रकार के भ्रम को उत्पन्न होने का अवकाश नहीं दिया ।

श्री सहजराम जी का जीवन वृत्त :

जिस प्रकार हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्राचीन कवियों का प्रामाणिक जीवनवृत उपलब्ध नहीं है, उसी प्रकार रघुवंश दीपक के रचयिता कवि श्री सहजराम का भी प्रामाणिक जीवनवृत अब तक नहीं उपलब्ध हो सका। कवि की जन्मतिथि जन्म स्थान, माता पिता, जाति, वंश, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, गुरु तथा जीविका-संबंधी सभी विवरण अब तक प्राप्त नहीं हो सके। श्री सहजराम जी के प्रामाणिक जीवन वृत की जानकारी के लिये प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक ने विभिन्न सूत्रों को एकत्र करने का प्रयास किया है और सबंधित स्थानों की यात्रा तथा कवि से सबंधित व्यक्तियों से पूंछताछ कर जिस परिणाम पर पहुँचा है, उसका उल्लेख ही इस स्थान पर करना उचित होगा। कवि श्री सहजराम जी के जीवन वृत के सबंध में ` रघुवंश दीपक ` के प्रकाशक श्री रामभरोसे लाल गुप्त ने कतिपय सूत्र, `रघुवंश दीपक` के जीवन चरित्र प्रकरण में प्रस्तुत किये हैं जो प्राय: जनश्रुतियों तथा वहिसाक्ष्यों पर ही आधारित हैं। अस्तु कवि के सबंध में प्रचलित लोक-चर्चायें तथा उसके समकालीन कवि अथवा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के द्वारा निर्दैशित तथ्यों को ही आधार मानकर इस सबंध में किसी परिणाम पर पहुँचना ~~उचित होगा~~ ही सम्भव है। इसी प्रकार जीवन वृत-सबंधी कवि के द्वारा जो अन्त: साक्ष्य की सामग्री प्राप्त होती है वह भी इस गुत्थी के सुलझाने में हमारी सहायता करती है। अन्त: साक्ष्य की सामग्री का आधार भी कवि की प्रमुख रचना मात्र ` रघुवंश दीपक ` ही है क्योंकि अन्य रचनाओं से इस सबंध में कुछ भी संकेत प्राप्त नहीं होते। अस्तु सीमित साधनों तथा सामग्री के इसी सीमि परिधि के भीतर ही सहजराम जी के जीवन वृत पर विचार करने के लिये हमारी विवशता है।

श्री सहजराम जी की जन्म-तिथि:

अन्त:साक्ष्य के आधार पर यद्यपि सहजराम जी की जन्मतिथि का निश्चित उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता किन्तु कवि विक्रम की अठारहवीं शताब्दी

के अन्तिम दशक तक जीवित था, यह ~~इसका उल्लेख~~ 'रघुवंश दीपक' के अवश्य निम्नलिखित उल्लेख उपलब्ध ~~मिलता~~ है ।

संवत् सत्रह सौ नौव्वासी। चैत्र मास ऋतुराज प्रकाशी ।।

कीन्ह अरम्भ दोष दु:खहरणी।रामकथा जन मंगल करणी।।

(रघुवंश दीपक, बालकाण्ड पृष्ठ १० दोहा १७ के नीचे )

उपर्युक्त उल्लेख से यह सिद्ध होता है कि कवि ने रघुवंश दीपक का प्रारम्भ संवत् सत्रह सौ नौव्वासी (सं० १७८६वि०) के चैत्र मास में किया था। सम्पूर्ण ग्रन्थ में यही एक उल्लेख ऐसा मिलता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि कवि १८वीं शताब्दी विक्रमीय के उत्तरार्द्ध तक ही नहीं अपितु अंतिम दशक तक अवश्य विद्यमान था। इसी आधार पर यह अनुमान लगाना भी कठिन न होगा कि सहजराम जी का जन्म विक्रम की अठारहवीं शताब्दी के प्रथम दशक से लेकर दूसरे दशक के मध्य अवश्य किसी समय हुआ होगा। 'रघुवंश दीपक' में इस बात का उल्लेख भी मिलता है कि सहजराम जी ने सतगुरु श्री रामप्रसाद जी की आज्ञा से 'रघुवंश दीपक' का प्रारम्भ अयोध्या के रामकोट स्थान पर किया था। १ रामप्रसाद जी के सबंध में 'रघुवंश दीपक' के प्रकाशक, तथा संग्रहकर्ता लालताप्रसाद जी ने कहा है कि वे अयोध्या के बड़े अखाड़ों के महन्त श्रीरामप्रसाद जी ही थे जिनको 'सहजराम जी' ने अपना गुरु स्वीकार किया था। २ महन्त श्री रामप्रसाद जी तथा सहजराम जी के मध्य एक घटना का उल्लेख करते हुये श्री लालताप्रसाद जी ने अपने कथन की पुष्टि की है जिसका समर्थन रामप्रसादजी की गद्दी के वर्तमान महन्त श्री रघुवरदास जी भी करते हैं। श्री रघुवरदास जी के कथनानुसार घटना का काल सं० १७६० वि० है जिसका आधार वे बड़े अखाड़े के एक शिलालेख को मानते हैं जिसमें इस घटना का समय सं० १७६० वि० उत्कीर्ण है। ३ घटना का विवरण इस प्रकार है -

अयोध्या में निवास करते समय सहजराम जी ने अपनी जीविका

---

१-दृष्टव्य रघुवंश दीपक- उत्तरकाण्ड के अन्तिम दोहे का यह कथन :-

अवधपुरी आरम्भ में, रामकोट पर कीन्ह ।
रामप्रसाद प्रसाद ते, सतगुरु आयसु दीन्ह ।।

२- रघुवंश दीपक जीवन चरित्र खण्ड पृष्ठ १०

३-अवध महात्म पृष्ठ १७ तथा रघुवंश दीपक जीवनचरित्र खण्ड पृष्ठ ७

चलाने के उद्देश्य से एक परचून की दूकान खोल ली थी। इनका लेनदेन अयोध्या के कई अखाड़ों से हुआ करता था जिसमें संतरामप्रसाद जी का भी अखाड़ा था। जब उधार खाते में सहजराम जी की बही में महन्त श्री रामप्रसाद जी के नाम ५०० रु० से अधिक का देना हो गया तो उन्होंने आगे के लिये सामान देना बन्द कर दिया। एक बार महन्त रामप्रसाद जी के अखाड़े पर लगभग २००साधुओं की एक टोली आ गई जिनके भोजन की व्यवस्था के लिये महन्तजी ने एक शिष्य द्वारा सहजराम जी से सामान मगंवाया परन्तु सहजराम जी ने सामान देने से इन्कार कर दिया और महात्मा रामप्रसाद जी के पास सन्देश भेज दिया कि जब तक कुल रुपया ५०० रु० चुकता न हो जायेगा- आगे सामान नहीं भेजा जायेगा। सन्देश सुनकर महन्त जी धनाभाव के कारण शान्त रहे और 'श्रीराम इच्छा' कहकर पूजन के लिये चले गये। शिष्य के चले जाने के बाद ही सहजराम जी की दूकान पर महन्त श्री रामप्रसाद जी के रूप में स्वयं भगवान श्रीराम ने आकर उनका सारा उधार चुकता कर दिया और सहजराम जी के आग्रह पर उनकी हिसाब बही पर हिसाब चुकता होने के हस्ताक्षर भी बना दिये। जब स्वयं सहजराम जी ने साधुओं के लिये समस्त भोजन सामग्री अखाड़े पर जाकर पहुंचा दी तो महन्त जी ने शिष्य द्वारा प्राप्त उनके उस सन्देश के विषय में कहा जिसमें उन्होंने सामान देने से इन्कार कर दिया था। सहजराम जी ने महन्त को बताया कि अभी थोड़ी ही देर पूर्व ही तो उन्होंने सारा हिसाब चुकता किया है - और हिसाब की बही पर हस्ताक्षर करके आये हैं।महंतजी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा क्योंकि वे न तो सहजरामजी की दूकान पर ही गये थे और न उन्होंने उनकी हिसाब की बही पर हस्ताक्षर ही बनाये थे। उस समय वे पूजा में तल्लीन थे। इसलिए उनके मन में एक कौतुहल मिश्रित आश्चर्य उमड़ पड़ा और वे सहजराम जी के साथ उनकी बही पर बने हुये हस्ताक्षर को देखने के लिये चल दिये। दूकान पर पहुंच कर ज्यों ही बही पर महन्त जी ने अपने हस्ताक्षर देखे त्यों ही उनके मुख से निकल पड़ा 'हमने तपस्या की और तूने फल पाया। यह सब कार्य दशरथ नन्दन कौशल किशोर श्री रामचन्द्र जी का है।' उनका हृदय आनन्द से विभोर हो उठा। ऐसा कहा जाता है कि

इस घटना ने ही सहजराम जी को ज्ञान दृष्टि प्रदान कर दी और महंत श्री रामप्रसाद जी को अपना गुरु स्वीकार कर वे श्री राम के अनन्य भक्त हो गये। `रघुवंश दीपक` की रचना इस घटना के बाद ही हुई है। १ इस घटना के बाद ही महन्त रामप्रसाद जी भी भगवान श्री राम के चिन्तन तथा भक्ति में जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत करने के उद्देश्य से चित्रकूट चले गये जहां उनकी मृत्यु सात वर्ष बाद हो गई। २ इस प्रकार महंत रामप्रसाद जी की मृत्यु का समय उपर्युक्त घटना के आधार पर सं० १७७० के आसपास मानी जा सकता है।

डा० भगवती प्रसाद सिंह जी ने महन्त राम प्रसाद जी को अयोध्या में रसिक सन्तो की परम्परा स्थापित करने वाले रसिक साधना का भक्त माना है। इनकी जन्म तिथि उन्होंने श्रावण शुक्ल ७ सं० १७६० मानी है तथा १०१ वर्ष की आयु बिताकर श्रावण कृष्ण तृतीय शनिवार सं० १८६१ में उनकी मृत्यु का उल्लेख किया है। महन्त रामप्रसाद जी को ही बड़ा स्थान ( बड़ा अखाड़ा ) का संस्थापक मानकर उन्हें ` विन्दुका चार्ज ` के नाम से रसिक साधना का भक्त माना है। ३

डा० भगवतीप्रसाद सिंह के कथन का आधार` महाराज चरित्र ` की सामग्री है जिसमें अनेक जनश्रुतियाँ तथा धार्मिक आस्थाओं एवं लोक-विश्वासों का समावेश हुआ है। अत: इन तथ्यों के प्रकाश में तिथि विषयक उनके निष्कर्ष असंदिग्ध नहीं कहे जा सकते और इस आधार पर महन्त श्री रामप्रसाद जी की जन्म तिथि तथा उसी से सबंधित सहजराम जी का जन्म काल निर्धारित करने में हमारे सम्मुख कठिनाई उत्पन्न होती है क्योंकि डा० सिंह ने महात्मा रामप्रसाद जी के शिष्य रघुनाथ प्रसाद जी से दीक्षा ग्रहण करने वाले महात्मा रामचरण दास जी का जन्म काल भी सं० १७६० वि० माना है। इस प्रकार रामप्रसाद जी तथा उनके शिष्य की जन्म तिथियां एक ही ठहरती हैं जो सम्भव नहीं। इस प्रकार वहिसाक्ष्य की सामग्री के लिये हमें

---

१- रघुवंश दीपक- जीवन चरित्र खण्ड पृष्ठ १०

२- अवध महात्म पृष्ठ १७

३- डा० भगवती प्रसाद सिंह - राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृष्ठ ४१५,४१६

अधिकांशत: `रघुवंश दीपक` के प्रकाशक श्री रामभरोसे लाल गुप्त तथा संग्रहकर्ता श्री लालताप्रसाद जी वैश्य की सूचनाओं पर ही निर्भर रहने के लिये विवश होना पड़ता है और इसी आधार पर महन्त श्री रामप्रसाद जी को सहजराम जी का रामकालीन तथा गुरु स्वीकार करने में हिचक नहीं होती। सरोजकार की एतद्विषयक भ्रान्त धारणा का स्पष्टीकरण हम प्रस्तुत अध्याय के प्रारम्भ में ही कर चुके हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात जो महन्त रामप्रसाद जी तथा सहजराम जी के मध्य होने वाली घटना में जन्मकाल संबंधी सामग्री की ओर संकेत करती है वह है वह बही जिस पर महन्त रामप्रसाद जी के रूप में श्री राम के हस्ताक्षर बताये जाते हैं। यदि यह बही किसी प्रकार उपलब्ध हो सकती तो जीवन काल संबंधी समस्या का हल बड़े प्रमाण में हल हो सकता था किन्तु प्रयत्न करने पर भी न तो इस प्रबन्ध के लेखक को ही और न `रघुवंश दीपक` प्रकाशक को ही उपर्युक्त बही के दर्शन अयोध्या के किसी मन्दिर या अखाड़े की गद्दी में हो सके। विशेष खोज करने पर यह अवश्य पता चलता है कि जिस स्थान पर यह घटना घटी थी आज कल उसी स्थान पर पल्टू साहब की गद्दी है। `रघुवंश दीपक` के प्रकाशक ने भी इसी बात का उल्लेख किया है। उनका कथन है कि पल्टू साहब की गद्दी के वर्तमान महन्त श्री जगन्नाथ जी के पास यह बही सुरक्षित है किन्तु वे इसे किसी को दिखाने के लिये किसी मूल्य पर भी तैयार नहीं। १ रघुवंश दीपक के संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक ने यह अनुमान लगाया है कि पल्टू साहब सहजराम जी के अनुयायी रहे होंगे। इसी कारण घटना स्थल पर ही गद्दी की स्थापना की गई। वे पल्टू साहब को सहजराम जी के शिष्य के शिष्य के रूप में मानते हैं और उनके द्वारा रचित शब्दावली के आधार पर उनका जन्म काल सं० १८२६ वि० मानते हैं। २ इस घटना के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि पल्टू साहब निर्गुणवादी सन्त कवि थे जिनकी विचारधारा पर कबीर का स्पष्ट प्रभाव था। ३ अत: ऐसी स्थिति में सहजराम जी की शिष्य परम्परा

---

१-रघुवंश दीपक जीवनी खण्ड पृष्ठ १०

२- रघुवंश दीपक जीवनी खण्ड पृष्ठ ११

३-विस्तृत विवरण के लिये दृष्टव्य हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड पृष्ठ २१८ तथा २२४-२५

में पलटू साहब को स्वीकार करना संदिग्धता से रहित नहीं कहा जा सकता। अस्तु बही के अभाव में सहजराम जी के जीवन काल सम्बंधी यह घटना भी रघुवंश दीपक के प्रकाशक की सूचना पर ही विश्वसनीय हो सकती है।

वहिसाक्ष्य पर ही आधारित ` रघुवंश दीपका ` के प्रकाशक का यह कथन कि सहजराम जी ` रघुवंश दीपक ` के संग्रहकर्ता स्वर्गीय श्री लालता प्रसाद जी वैश्य के नाना के पिताजी के यहां आया जाया करते थे स्वीकार की जा सकती है। स्वर्गीय श्री लालताप्रसाद जी का स्वर्गवास लगभग ८० वर्ष की आयु में संवत् २०१६ वि० में हुआ था जैसा कि ग्रन्थ के प्रकाशक ने इन पंक्तियों के लेखक को एक पत्र द्वारा सूचित किया है। गणित की सहायता से यदि इस आधार पर सहजराम जी का जीवन काल निकाला जाये तो वह लगभग विक्रम की अठारहवीं ( १८वीं ) शताब्दी का आरम्भकाल ही आता है और इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि सहजराम जी का जन्म विक्रमीय सं० १७१० से १७२० के मध्य किसी समय हुआ होगा।

माता पिता- वंश तथा बाल्यकाल:

अन्त: साक्ष्य के आधार पर कवि के माता पिता, जाति ,वंश तथा बाल्यकाल किसी का निर्णय नहीं किया जा सक्ता क्योंकि इस सबंध में उनकी रचनाओं में कहीं कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। विवश होकर हमें वहिसाक्ष्य का ही सहारा लेना पड़ता है जो कि क्रमश: इस प्रकार है -

(१) लाला भगवान दीन तथा मिश्रबन्धुओं ने सहजराम जी का जन्म स्थान सुल्तानपुर जिलान्तर्गत बन्धुआ ग्राम को माना है। १ यद्यपि इस सबंध में उन्होंने किसी प्रमाण अथवा तर्क सम्मत सूत्र का उल्लेख नहीं किया। इन्हीं विद्वानों के द्वारा उन्हें सनाढ्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न ब्राह्मण स्वीकार किया गया है। इस कथन का आधार भी कोई प्रामाणिक सूत्र नहीं है। मिश्रबन्धुओं ने तो बाद में अपने इस कथन का परिष्कार कर लिया था और `मिश्रबन्धु - विनोद ` भाग २ में उन्होंने सहजराम को वैश्य स्वीकार कर लिया है।२

(२) उपर्युक्त मान्यता का खण्डन `रघुवंश दीपक ` के संग्रहकर्ता तथा

---

१- अवध महात्म पृष्ठ ११

२- मिश्रबन्धु विनोद भाग २ पृष्ठ ६२२-सस्करण १९८४ वि०

प्रकाशक दोनों ने ही किया है। वे सहजराम जी को हरदोई जिलान्तर्गत किसी ग्राम का मानते हैं और ब्राह्मण कुलोत्पन्न न होकर हरिद्वारी वैश्य वंश में उत्पन्न जाति के वैश्य स्वीकार करते हैं। १ अपनी मान्यता को सिद्ध करने के लिये उन्होंने यह तर्क दिया है कि 'रघुवंश दीपक' की बहुत सी खण्डित हस्तलिखित प्रतियां हरदोई जिले के वैश्य घरानों में अब भी पाई जाती हैं जिनमें सहजराम जी के प्रति जातीय अनुराग का ही भाव मिलता है। इस मान्यता को यद्यपि हम तर्क की कसौटी पर पूर्णत: खरी नहीं पाते किन्तु इस पर ~~पूर्णत~~: अविश्वास भी नहीं कर सकते क्योंकि प्रस्तुत प्रकाशित 'रघुवंश दीपक' के संग्रहकर्ता व प्रकाशक दोनों ही वैश्य ही हैं जिनके जातीय प्रेम के कारण ही इस कृति का प्रकाशन सम्भव हो सका। इसके अतिरिक्त स्वर्गीय श्री लालताप्रसाद जी संग्रहकर्ता 'रघुवंश दीपक' का यह कथन भी बिल्कुल निराधार नहीं माना जा सकता कि सहजराम जी का आना जाना उनके नाना के पिताजी के यहां होता था जो जातीय प्रेम का ही द्योतक है। हो सकता है कि वे परस्पर एक दूसरे के मित्र रहे हों। जो भी हो 'रघुवंश दीपक' के संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक दोनों ही मान्यताओं में बल अवश्य है और उनकी इस मान्यता से कि 'सहजराम जी' वैश्य जाति के थे, सहमत हुआ जा सकता है ।

(३) नागरी प्रचारिणी सभा काशी की हस्तलिखित ग्रन्थों की तृतीय त्रैवार्षिक रिपोर्ट में सहजराम जी को वैश्य जाति का ही माना है। इस रिपोर्ट के आधार पर भी कवि को वैश्य जाति का स्वीकार किया जा सकता है यद्यपि यह भी संदिग्धता से शून्य नहीं है ।

(४) बन्धुआ ग्राम की सामग्री :

बन्धुआ ग्राम उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में जिला सुल्तानपुर के अन्तर्गत एक व्यापारिक मण्डी है। यह सुल्तानपुर से ११ मील पहले ही ~~कल्याणपुर~~ लम्भुआ

---

१- रघुवंश दीपक - जीवन चरित्र- पृष्ठ ५

सुल्तानपुर बस मार्ग पर स्थित है जिसमेंठठेरों की संख्या अधिक है। इस ग्राम में सनाढ्य ब्राह्मणों के कुछ घर अवश्य हैं किन्तु इनमें से कोई भी अपने आपको `सहजराम` जी से परिचित अथवा संबंधित नहीं स्वीकार करता। इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं बन्धुआ ग्राम जाकर इस तथ्य की जानकारी की कि जिन सनाढ्य ब्राह्मणों के वंश से सहजराम जी का संबंध `लाला भगवानदीन `मिश्रबन्धु` तथा शिवसिंह ~~सरो~~ सेंगर ने जोड़ा है उनका कोई भी घराना क्या इस ग्राम में है ? यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि किसी ने भी `सहजराम` जी को अपने वंश का नहीं स्वीकार किया। अस्तु इस संबंध में उपर्युक्त विद्वानों का कथन कोरी कल्पना ही ठहरता है। बन्धुआ ग्राम में जो नवीन जानकारी प्राप्त हुई है वह अवश्य ही महत्वपूर्ण है। इस ग्राम में एक अत्यन्त प्राचीन किसी साधु की कुटी है जिसे आजकल बाबा `सहज राम` की कुटी से जाना जाता है। लोगों का कहना है कि यह कुटी लगभग छ:सौ वर्ष पुरानी है और आजकल उसमें `सगरा` वाले बाबा का निवास है। सगरा वाले बाबा से इन पंक्तियों के लेखक ने जब भेंट की तो उन्होंने इस कुटी के संबंध में निम्नांकित विवरण दिया -

(क) सहजराम नामक एक संत जो अयोध्या के साधु थे, इस ग्राम में इसी स्थान पर कुटी बनाकर रहने लगे थे। अपने जीवन के कई वर्ष यहीं व्यतीत कर अन्त में वे नैमिषारण्य की ओर चले गये थे। यहां आने के समय उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी और वे राम के भक्त थे। तुलसीदास जी की रामायण की भांति ही अवधी भाषा में उन्होंने एक रामायण लिखी थी जिसे वे गा गाकर सत्संग के समय लोगों को सुनाया करते थे।

(ख) बन्धुआ ग्राम में `सहज राम` के सरल तथा पवित्र साधनामय जीवन का बड़ा प्रभाव था। लोग उनके वैयक्तिक जीवन से इतने प्रभावित थे कि उनके नाम पर ग्रामवासियों ने श्रद्धावश अपने बच्चों का नाम भी `सहजराम` रखना प्रारम्भ कर दिया था। बाबा जी ने मुझसे कई `सहजराम` नामक व्यक्तियों से भेंट कराई जिन्होंने इस बात की पुष्टि की कि उनका नाम बाबा `सहजराम` जी केनाम पर ही रखा गया है।

(ग) कुछ छन्द जो अब भी संध्या के समय सत्संग के अवसर पर प्रार्थना के रूप में इस कुटी पर आने वाले लोग गाते हैं वे उनकी लिखी हुई रामायण `रघुवंश दीपक ` के ही हैं।

(घ) बन्धुआ ग्राम की यह कुटी सहजराम जी की जन्म-स्थली न होकर मात्र आश्रम थी जिसे उन्होंने तीर्थ यात्रा के समय निर्माण की थी।

निष्कर्ष :

(१) उपर्युक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बन्धुआ ग्राम का संबंध कवि श्री सहजराम जी के जीवन से अवश्य था किन्तु वह उनका जन्म-स्थान नहीं था और न वे वहां के सनाढ्य ब्राह्मणों के वंश से किसी प्रकार संबंधित थे। इस बात की पूरी संभावना प्रतीत होती है कि मिश्रबन्धुओं, लाला भगवानदीन तथा शिवसिंह सेंगर ने इसी आधार पर बन्धुआ ग्राम को सहजराम जी का जन्म स्थान मानने की भूल की है।

(२) दूसरी महत्व पूर्ण बात जो आवश्यक जांच पड़ताल से ज्ञात होती है वह यह कि बन्धुआ ग्राम में रहकर कवि ने `रघुवंश दीपक` का कुछ भाग अवश्य रचा था जो बाद में नैमिषारण्य पहुंच कर पूर्ण हो गया था।

(३) अपुष्ट होते हुये भी सगरा वाले बाबा के इस कथन से कि लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व सहजराम जी बन्धुआ ग्राम की कुटी पर आये थे और उस समय उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी, सहजराम जी के जीवन काल पर अवश्य प्रकाश पड़ता है और हमारी इस मान्यता को औचित्य प्रदान करता है कि कवि का जन्म विक्रम की अठारहवीं शताब्दी के प्रथम दशक से लेकर द्वितीय दशक के मध्य हुआ होगा।

बाल्यकाल :

`सहज राम` जी का बाल्यकाल कैसा रहा, उनके माता पिता कौन थे अथवा किसके संरक्षण में रहकर उनका प्रारम्भिक जीवन व्यतीत हुआ, इसका कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस संबंध में भी `रघुवंश दीपक` प्रकाशक की सूचनाओं पर ही हमें विश्वास करना पड़ता है कि वे बालकपन से ही साधु संगति के प्रेमी थे। आप अपने परिवार से इधर उधर समय व्यतीत करते थे। कभी कभी साधुओं के साथ तीर्थ यात्रा को भी जाया करते थे। अधिकतर समय संग्रहकर्ता के नाना के यहां व्यतीत करते थे और आप अनन्य श्रीराम भक्त थे।[१]

---

१- रघुवंश दीपक - जीवन चरित्र पृष्ठ -६

इस उल्लेख से उनके स्वभाव तथा बाल्यावस्था का परिचय तो अवश्य मिलता है किन्तु वे किस के बालक थे और किसके संरक्षण में उनका बाल्यकाल व्यतीत हुआ इसका उसके द्वारा किसी भी प्रकार का समाधान नहीं प्राप्त होता।

शिक्षा तथा गुरु :

रघुवंश दीपक जैसी उच्च कोटि की सशक्त साहित्यिक कृति का रचयिता कितना शिक्षित विद्वान और विभिन्न विषयों में पारंगत था उसके लिए बाह्य साक्ष्य की ओर अधिक जाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उसकी कृति ही इस विषय का पूर्ण समाधान प्रस्तुत करती है। साहित्यिक शास्त्र का वह महान विद्वान था तथा सभी पौराणिक विषयों एवं धार्मिक ग्रन्थों की उसे पूर्ण जानकारी थी। संस्कृत का भी वह पण्डित था क्योंकि 'रघुवंश दीपक' के श्लोक इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि संस्कृत में साहित्य रचना की सामर्थ्य उसमें थी। ग्रन्थ में प्रयुक्त छन्द, अलंकार, शब्द शैलियाँ तथा विभिन्न विषयों का सशक्त सजीव वर्णन उसके साहित्य शास्त्र संबंधी ज्ञान तथा गहरे अध्ययन के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भाषा की प्राञ्जलता से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह भाषा का भी धनी था। दार्शनिक विचारों की प्रौढ़ता तथा आध्यात्मिक ज्ञान की परिपक्वता के जो उदाहरण 'रघुवंश दीपक' में प्राप्त होते हैं वे कवि के तद्विषयक उच्च कोटि के ज्ञान के ही परिचायक हैं। यही नहीं युद्ध विषयक उसके विस्तृत ज्ञान तथा अपने काल तक प्रचलित सभी प्रकार की शासन प्रणालियों का भी वह ज्ञाता था। मानव प्रकृति से संबंधित सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रवृत्तियों का उसे व्यापक अनुभव था। पशु पक्षियों तथा हिंस जन्तुओं के स्वभावादि के चित्रण से भी उसके व्यापक ज्ञान का पता चलता है। सहजराम जी ने यह सारा ज्ञान किस प्रकार अर्जित किया था और उनकी प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा किसके द्वारा कहाँ हुई थी इसका विस्तृत विवरण कहीं नहीं उपलब्ध होता। केवल गुरु के नाम का 'रघुवंश दीपक' के अन्त में उल्लेख हुआ है। १ जिसमें रामप्रसाद जी से आशीर्वाद प्राप्त कर 'रघुवंश दीपक' के प्रारम्भ करने की ओर उनका संकेत स्पष्ट है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में इस बात की ओर लक्ष्य किया जा चुका है कि श्री रामप्रसाद जी अयोध्या के एक अखाड़े के

---

१- रघुवंश दीपक पृष्ठ ७०६ दोहा १७२ (४,५)

महन्त थे जो अब तक बड़े अखाड़े के नाम से प्रसिद्ध है। श्री राम भरोसे लाल जी की एतद् विषयक सूचनाओं से भी यह प्रतीत होता है कि महन्त श्री रामप्रसाद जी सहजराम जी के शिक्षा गुरु न होकर दीक्षा गुरु थे। श्री रामप्रसाद जी से भेंट होने तथा उनके साथ होने वाली अलौकिक घटना से पूर्व ही सहजराम जी का झुकाव भक्ति की ओर था साथ ही विभिन्न विषयों तथा पौराणिक, धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों का वे अध्ययन कर चुके थे। श्री रामप्रसाद जी से आशीर्वाद स्वरूप आज्ञा प्राप्त कर वे राम कथा को एक साहित्यिक कृति के रूप में प्रस्तुत करने के लिये अग्रसर हुये तथा उनकी रचनात्मक प्रतिभा को एक नई दिशा प्राप्त हो सकी। कवि ने अपने विस्तृत ज्ञान, व्यापक अनुभव तथा गम्भीर अध्ययन को समकालीन युग बोध से सम्पृक्त कर जिस कलात्मक काव्य कृति की रचना की उसे देखकर हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि 'रघुवंश दीपक' का कवि उच्च कोटि का विचारक तथा विविध विषयों का ज्ञाता महान साहित्य-कार था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवियों कबीर, तुलसी तथा सूर के समान ही उसका अनुभव क्षेत्र भी विस्तृत, गम्भीर तथा अत्यन्त व्यापक था। अस्तु शिक्षा सबंधी किसी प्रमाण के उपलब्ध न होने पर भी हम उसे विद्वान, मनीषी महा-कवि के रूप में प्रतिष्ठित पाते हैं। 'रघुवंश दीपक' के रूप में उसकी सृजनात्मक काव्य प्रतिभा हमारी इस मान्यता के लिये अपने आप में ही स्वयं एक प्रमाण है

अन्तः साक्ष्य तथा बहिर्साक्ष्य दोनों सूत्रों से उपलब्ध होने वाली सामग्री का विश्लेषण तथा परीक्षण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि 'सहजराम' जी ने महन्त श्री रामप्रसाद जी को अपना गुरु स्वीकार किया था किन्तु इसी स्थल पर एक प्रश्न यह उठता है कि क्या रामप्रसाद जी उनके शिक्षा गुरु थे अथवा केवल दीक्षा गुरु थे। पूर्ववर्ती पृष्ठों में हम यह कह चुके हैं कि कवि श्री सहजराम जी के माता पिता तथा उनके बाल्यकाल के सबंध में कोई भी निश्चित मत नहीं ठहराया जा सकता। अस्तु उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कहां और किसके द्वारा हुई इसका भी पुष्ट प्रमाण नहीं उपलब्ध होता। श्री रामप्रसाद जी जिनसे कवि की भेंट प्रौढ़ावस्था में ही होना सिद्ध होती है उनके दीक्षा गुरु ही थे। बही में हस्ताक्षर वाली घटना केबाद ही सहजरामजी ने रामप्रसाद जी को अपना गुरु स्वीकार किया होगा यद्यपि उनका परिचय उससे पूर्व भी रहा होगा। किसी महान् घटना के घटित होने पर ही जीवन की

धारा बदल जाती है और घटना के प्रमाण स्वरूप उससे संबंधित व्यक्तित्व का प्रभाव निश्चित रूप से जीवन पर पड़ता है। महंत श्री रामप्रसाद की सिद्धावस्था को देखकर कवि के हृदय में उनके प्रति जो श्रद्धा तथा पूज्य भावना का उदय हुआ उसने उनके सम्मुख कवि को समर्पित कर दिया और अपना मार्ग दर्शक मानकर जीवन की चरम साधना की ओर उन्मुख हो गया। सहजराम जी का महन्त रामप्रसाद जी को गुरु स्वीकार कर लेने की उपर्युक्त प्रक्रिया अत्यन्त स्वाभावि प्रतीत होती है। अस्तु यदि यह कहा जाये कि रामप्रसाद जी के द्वारा सहजराम जी को दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई और वे राम भक्ति की ओर उन्मुख हो गये तो अतिशयोक्ति न होगी। इस प्रकार वे `सहजराम` जी के दीक्षा गुरु ही ठहरते हैं।

पारिवारिक जीवन तथा अन्य विवरण:

सहजराम जी का पारिवारिक जीवन कैसा था इस संबंध में कोई पुष्ट सामग्री नहीं प्राप्त होती। अन्त: साक्ष्य तथा बाह्य साक्ष्य दोनो ही आधार पर किसी सामग्री के उपलब्ध न होने के कारण हमारी जानकारी केवल `अनुमान` पर ही आधारित है। कवि की रचनाओं में कहीं भी उसके पारिवारिक जीवन की किसी बात का उल्लेख नहीं मिलता। बाह्य साक्ष्य में केवल ` अवध महात्म्य ` १ के अनुसार वे बाल्यकाल से ही साधु संगति के प्रेमी थे, इतना ही उल्लेख मिलता है। अस्तु होसकता है कि उन्होने विवाह न किया हो और प्रारम्भ से ही साधु संतो के सम्पर्क में रहने के कारण स्वयं भी साधुओं जैसा जीवन व्यतीत किया हो तथा सांसारिक विषयों से पूर्णत: विरक्त रहकर भगवद्भजन में ही मस्त रहा करते रहे हों। इतना अवश्य है कि उनकी रचनाओं में दाम्पत्य जीवन के मधुमय चित्रों का सजीव चित्रांकन हमें प्राप्त होता है जिससे हमारी तर्कशील मस्तिष्क अवश्य ही यह सोचने पर विवश हो जाता है कि कवि के द्वारा चित्रित दाम्पत्य तथा बाल्यकाल के सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्र क्या मात्र उसकी कल्पना के वायवीय पर ही उभरे हैं या फिर उनमें उसका भोगा हुआ यथार्थ भी है। हमारे इस

---

१- अवध महात्म्य, पृष्ठ -१२

प्रश्न का उत्तर `रघुवंश दीपक ` के प्रारम्भ में ही कवि द्वारा आत्म-कथन के रूप में कही गई निम्नांकित चौपाइयों में इस प्रकार मिलता है :-

बालापन ते पाप कलापा ।किये हिये उपजी परितापा।।
प्रायश्चित रघुपति गुणगाथा। करौ नाइ हरिपद गुरु माथा।।१

इस कथन को यदि आत्म कथन के रूप में स्वीकार कर लें तो हमें इन चौपाइयों में कवि के जीवन का यथार्थ झांकता हुआ दिखाई देता है और हम सहज में ही यह अनुमान लगा सकते हैं कि कवि का प्रारम्भिक जीवन अवश्य ही मानवोचित दुर्बलताओं से भरा हुआ था किन्तु साधु सन्तों की संगति के कारण उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ होगा और आत्म - ग्लानिवश उसने प्रायश्चित स्वरूप `रघुपति गुण गाथा ` के रूप में `रघुवंश दीपक ` की रचना की हो। हो सकता है कि अपने पापों का ज्ञान होते ही वे संसार से विरक्त होकर साधु हो गये हों और विवाहादि बन्धनों में न पड़कर पूर्णत: भगवद्भक्ति में लीन हो गये हों । हमारे इस अनुमान को `रघुवंश दीपक ` की निम्नांकित चौपाइयां और भी पुष्ट करती हैं :-

कीन्हें पाप कलाप कराला।उपजी चित चिन्तानल ज्वाला।।
तनमन वचन न परहित कीन्हो। कबहुं पुण्य पथ पावन दीन्हों।।
सेमहुं कबहुं न सन्त समाजहिं। कवन उतर देहौं यमराजहिं ।। २

उपर्युक्त आत्म कथन का एक दूसरा पक्ष यह भी हो सकता है कि अन्य भक्त कवियों की भांति ही सहजराम जी ने भी अपने सन्त स्वभाव के कारण ही सांसारिक विषयों के प्रति विरक्ति प्रदर्शित की हो। जो भी हो यदि इस उल्लेख को हम कवि का आत्म कथन स्वीकार कर लेते हैं तो उसके वैयक्तिक जीवन तथा प्रकृति पर हमें अनुमान का आधार अवश्य प्राप्त हो जाता है किन्तु पारिवारिक जीवन सबंधी किसी भी जानकारी के द्वार नहीं खुलते ।

---

१-रघुवंश दीपक - बालकाण्ड - पृष्ठ४
२- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड - पृष्ठ५

जीविकोपार्जन :

'रघुवंश दीपक' के प्रकाशक ने ग्रन्थ के जीवनी खण्ड में कवि सहजराम जी के जीविकोपार्जन के संबंध में जो उल्लेख किया है उसके अतिरिक्त अन्य जानकारी हमें इस संबंध में नहीं मिलती। प्रकाशक महोदय के अनुसार 'समयानुसार आपने एक परचूनी की दूकान कर ली क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते थे कि वैश्य के लिये भिक्षावृत्ति सदैव निषिद्ध है। धीरे धीरे श्री रघुवंश मणि की कृपा से आपका कार्य सुचारु रूप से चलने लगा।' १ यह उल्लेख भी अनुमान पर ही आधारित है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकाशक महोदय ने कवि के अयोध्या निवास को ही इसका आधार बनाया है। साथ ही महन्त रामप्रसाद जी के साथ होने वाले अलौकिक चमत्कार में भी कवि को परचूनी की दूकान का स्वामी माना गया है क्योंकि यहीं से महन्त रामप्रसाद जी के अखाड़े के साधुओं तथा अतिथियों को भोजन सामग्री जाने का उल्लेख उसमें मिलता है। २ अस्तु प्रकाशक महोदय का एतद्विषयक अनुमान यदि पूर्णतः नहीं तो बहुत अंशों तक साधार ही कहा जायेगा।

मृत्यु काल :

जन्म तिथि की ही भांति सहजराम जी की मृत्यु की तिथि भी निश्चित नहीं कहीं ज्ञात होती। जीवन संबंधी जो अन्य विवरण कवि की रचना 'रघुवंश दीपक' के माध्यम से प्राप्त होते हैं उस अन्तः साक्ष्य सामग्री के आधार पर कवि का अन्तिम जीवन काल नैमिषारण्य में ही व्यतीत हुआ, ऐसा कहना अनुचित न होगा। 'रघुवंश दीपक' को उसने नैमिषारण्य में पूर्ण किया तथा जीवन के अन्तिम समय तक वह वहीं रहा इसके संबंध में 'रघुवंश दीपक' के उपसंहार में उसका कथन इस प्रकार है :-

'पूरण कीन्हों ग्रन्थ यह, नीमषार के बीच।
अन्त काल तन त्याग करि, हरिपद पावत नीच।।३

---

१-रघुवंश दीपक - जीवन चरित्र भाग पृष्ठ-७
२- वही - पृष्ठ -८,९
३- रघुवंश दीपक-उत्तरकाण्ड दोहा १७२ (६)

ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रन्थ के प्रारम्भ से ही सहजराम जी के हृदय में श्री राम के दर्शन की जो आकांक्षा जागृत हुई उसकी पूर्ति के लिए वे अयोध्या के अतिरिक्त अन्य तीर्थ-स्थलों में घूमते रहे और नैमिषारण्य में ही उनको प्रभु श्री राम के दर्शन उपलब्ध हुये होंगे और वहीं 'रघुवंश दीपक' को पूर्ण कर जीवन के अन्तिम क्षणों तक बने रहे होंगे । अनुमान से यह कहा जा सकता है कि 'रघुवंश दीपक' जैसे विशाल महाकाव्य को वे दस वर्षों में पूर्ण कर सके होंगे । इस प्रकार उनका मृत्यु काल संवत् १८०० विक्रमीय के आस पास ही ठहरता है क्योंकि रघुवंश दीपक का प्रारम्भ संवत् १७८६ में ही हुआ है इसका निश्चित उल्लेख कवि ने स्वयं ही किया है। १

सहजराम जी की रचनायें :

'रघुवंश दीपक' को छोड़कर कवि श्री सहजराम जी की अन्य चार रचनाओं का उल्लेख विभिन्न सूत्रों से मिलता है। इस प्रकार उनकी कुल पांच रचनाओं की सूचना अब तक मिल सकी है जिनका उल्लेख उनके संक्षिप्त परिचय सूत्रों के साथ करना अप्रासंगिक न होगा ।

(१) रघुवंश दीपक :

रचना काल सं० १७८६ विक्रमीय तथा विषय रामकथा प्रबन्ध के रूप में कही गई है । सूत्र - इस ग्रन्थ का उल्लेख, शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंह सरोज', मिश्रबन्धुओं ने 'मिश्र बन्धु विनोद' तथा नागरी प्रचारिणी तथा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों की खोज रिपोर्ट सन् १९१२ ई० के १६३ तथा १९२३ ई० में ३६७ डी० क्रमांक पर हुआ है । पुस्तक सन् १९५१ ई० में पब्लिक प्रेस मुरादाबाद से प्रकाशित हो चुकी है।

(२) कवितावली :

रचनाकाल अज्ञात- विषय फुटकल कवित्तों में रामचरित्र वर्णन । इस रचना का उल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशित

---

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड पृष्ठ -१०

हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण में सन् १९२३ की रिपोर्ट में क्रमांक २६७ ए पर मिलता है। रचना ~~कमल~~ अब तक अप्रकाशित है - हस्त लिखित प्रतिलिपि पं० रामजीवन लाल, ग्राम दौलतपुर डा० बिलहर जिला बाराबंकी के पास उपलब्ध होने की सूचना अवश्य मिलती है किन्तु प्रयत्न करने पर भी लेखक को देखने को नहीं मिली ।

(३) प्रह्लाद चरित्र :

रचनाकाल अज्ञात, विषय प्रह्लाद चरित्र - पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। श्री माता प्रसाद सक्सेना बी०ए० वकील,हरदोई ने अपने पिता मुंशी शीतलाप्रसाद सक्सेना की पवित्र स्मृति में सरस्वती सदन हरदोई के द्वारा २८-६-१९२९ ई० में प्रकाशित करवाया था। `रघुवंश दीपक` में वर्णित सम्पूर्ण प्रह्लाद चरित्र से इस रचना का पूर्ण साम्य है। १

(४) प्रह्लाद चरित्र इतिहास:

रचना काल अज्ञात विषय प्रह्लाद चरित्र। इस रचना का उल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज रिपोर्ट संवत् २००४ वि० में मिलता है किन्तु रचना कहां उपलब्ध है, इसका कोई विवरण नहीं है। हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण प्रथम भाग (सन् १९०० से १९५५ तक ) में एक प्रति का लिपिकाल सं० १८०० दिया गया है और प्राप्ति स्थान श्री रघुनन्दन पाण्डे, चौकिया डाकघर लम्भुआ जिला सुल्तानपुर का उल्लेख मिलता है। एक अन्य प्रतिलिपि जो सं० १९५५ की है लाला तुलसीराम श्रीवास्तव रायबरेली के पास उपलब्ध होने की सूचना मिलती है । द्वितीय प्रति को लेखक ने रायबरेली जाकर स्वयं देखा है कि यह वस्तुतः 'प्रह्लाद चरित्र' ही है, कोई स्वतंत्र रचना नहीं।

---

१-नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण प्रथम खण्ड - पृष्ठ ५९६ ( सन् १९००-१९५५) पर इसका उल्लेख मिलता है जिसका लिपि काल सं० १८६४ है। इसे `रघुवंश-दीपक` का ही अंश माना है।

(५)हनुमान बाल लीला:

इस रचना का काल भी अज्ञात ही है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की संवत् २००४ की हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्ट में क्रमांक ४०५ पर इसका उल्लेख मिलता है साथ ही यह सूचना भी मिलती है कि संवत् १८२८ की एक प्रति महन्त जगदेवदास ग्राम पडरी गनेशपुर जिला रायबरेली के पास उपलब्ध है। लेखक द्वारा प्रयास करने पर भी यह रचना देखने को नहीं मिल सकी ।

कवि श्री सहजराम जी के नाम के साथ जुड़ी हुई उपर्युक्त इन पांच रचनाओं में केवल `रघुवंश दीपक ` तथा ` प्रह्लाद चरित्र ` दो ही ऐसी रचनायें है जो अब तक उपलब्ध हो सकी हैं और जिन्हें लेखक ने उनकी मूल हस्तलिखित प्रतिलिपियों के रूप में देखा है किन्तु अन्य तीन रचनाओं का केवल उल्लेख मात्र ही मिलता है। प्रयत्न करने पर भी यह रचनायें देखने को नहीं मिल सकी। अस्तु इनकी प्रामाणिकता पर साधिकार कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से ` प्रहलाद चरित्र` तथा ` प्रहलाद चरित्र इतिहास ` दोनों एक ही रचनायें है किन्तु विभिन्न प्रतियों के लिपि काल के कारण इनका अलग अलग उल्लेख हुआ है। ` हनुमान बाल लीला ` के सबंध में भी यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार ` प्रह्लाद चरित्र ` को पूर्णत: `रघुवंश दीपक ` में वैसा ही रख दिया गया है, हो सकता है कि इसी प्रकार ` रघुवंश दीपक ` में वर्णित ` हनुमान चरित्र ` भी ` हनुमान बाल लीला ` का ही रूप हो अथवा ` हनुमान बाल लीला` कोई स्वतंत्र रचना न होकर ` रघुवंश दीपक ` में वर्णित ` हनुमान चरित्र` की एक अलग प्रतिलिपि मात्र हो ।

`रघुवंश दीपक` का रचना तथा समापन स्थल :

` रघुवंश दीपक ` का रचना तथा समापन स्थल का उल्लेख स्वयं कवि ने ही ग्रन्थ के उपसंहार में कर दिया है जो इस प्रकार है -

अवधपुरी आरम्भ मैं, राम कोट पर कीन्ह ।
रामप्रसाद प्रसाद ते, सतगुरु आयसु दीन्ह ।।
पूरण कीन्हो ग्रन्थ यह, नीमषार के बीच ।
अन्त काल तन त्याग कर, हरिपद पावत नीच।।१

अस्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'रघुवंश दीपक' का प्रारम्भ अयोध्या के रामकोट पर किया गया था और समापन नैमिषारण्य में ।

रघुवंश दीपक का रचना तथा समापन काल:

'रघुवंश दीपक' का रचना काल जितनी प्रामाणिकता के साथ निश्चित किया जा सकता है उतना रचना स्थल तथा समापन स्थल को छोड़कर अन्य किसी को नहीं। इस सबंध में कवि श्री सहजराम जी ने स्पष्ट घोषणा की है कि -

सम्वत् सत्रह सौ नव्वासी । चैत्र मास ऋतुराज प्रकाशी ।।
कीन्ह अरम्भ दोष दुख हरणी।रामकथा जग मंगल करणी।।२

कवि द्वारा उद्घोषित उपर्युक्त रचना काल में सन्देह के लिये कहीं अवकाश नहीं दिखाई देता और हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि 'रघुवंश दीपक' का प्रारम्भ संवत् १७८६ विक्रमी के चैत्र मास में बसन्त ऋतु के समय किया गया हो सकता है कि महा कवि तुलसीदास जी का अनुगामी होने के कारण कवि ने 'राम नवमी' को ही 'रघुवंश दीपक' का प्रारम्भ किया हो।

'रघुवंश दीपक' का रचना काल जितना निश्चित और प्रामाणिक है उसका समापन काल उतना ही अनिश्चित और अनुमान पर आधारित है क्योंकि समापन काल का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। यह कहा जा सकता है कि इतने विशालकाय महाकाव्य की रचना में अवश्य ही उसे लगभग दस वर्ष लगे होगें इसप्रकार वह संवत् १८०० वि० के अन्त तक पूर्ण हुआ होगा ।

---

१- रघुवंश दीपक -उत्तरकाण्ड- दोहा १७५ ( ५,६)
२- रघुवंश दीपक -बालकाण्ड- पृष्ठ १०

## रघुवंश दीपक की रचना की प्रेरणा

'रघुवंश दीपक' के रचयिता कवि सहजराम जी ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी को अपना प्रेरक तथा उनकी रचना को अपनी रचना की प्रेरणा के रूप में स्वीकार कर यह स्पष्ट घोषणा की थी कि -

कोउ कवि कहत भयो सो तुलसी । १
भणित विलोकि मोरि मत हुलसी ।।
भणित तुम्हारि आदि पटरानी ।
चेरी चारु चतुर मम बानी ।।
तुलसिदास कीन्हो प्रथम, कवित ब्रजमणि वेह ।
पहिराये मैं सूतमति, विनु श्रम सहित सनेह ।।२

कवि की इस आत्म स्वीकृति में जहां एक और अपने प्रेरणा स्त्रोत महाकवि तुलसीदास जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का भाव है वहां दूसरी और वह अपनी रचना के स्वतंत्र अस्तित्व की रक्षा के लिये भी संकेत प्रस्तुत करने में सजग दिखाई देता है। तुलसीदास जी की 'भणित' को आदि पटरानी के रूप में मानकर सहजराम जी ने अपनी 'बानी' को 'चतुर' तथा 'चारु' विशेषणों से युक्त उसकी 'चेरी' कहा है। कवि के इस कथन में उसका अपनी कवित्व शक्ति के प्रति जो विश्वास फलकता है वस्तुत: वह दृष्टव्य है। उसकी वाणी में चारुता तथा चातुर्य दोनो का संगम ही उसे अपने प्रेरक की 'भणित' से पृथक रख सकने में समर्थ हो सका है। तुलसीदास की 'भणित' निस्सन्देह हिन्दी साहित्य के विशाल साम्राज्य की पटरानी है किन्तु चेरी होकर भी सहजराम जी की रचना 'रघुवंश दीपक' चारुता तथा चातुर्य के विशिष्ट गुणों से युक्त होने के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखती है। उसमें प्रतिबिम्बित कवि के सौन्दर्य बोध तथा कथन के चातुर्य से हमें उसकी काव्य प्रतिभा तथा रचनात्मक शक्ति का स्पष्ट परिचय मिलता है जिसका विस्तृत विवरण

---

१- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड दोहा ६ से पूर्व की चौपाइयां ।
२- रघुवंश दीपक -बालकाण्ड दोहा-६

परवर्ती पृष्ठों मेंप्रस्तुत किया जायेगा। यहां हमें केवल इतना ही लक्ष्य करना है कि महाकवि तुलसीदास जी ने जिस अलौकिक काव्य प्रतिभा के द्वारा राम काव्य की उदात्त भाव भूमि का निर्माण किया था कवि सहजराम जी ने उससे प्रेरणा ग्रहणकर अपनी रुचि के अनुरूप किस प्रकार उसी भाव भूमि पर अपनी रचनात्मक काव्य प्रतिभा के बल पर एक भव्य भवन का निर्माण कर सके।

हिन्दी में राम कथा का सर्वांगीण विकास महाकवि तुलसीदास जी के राम चरित मानस से ही हुआ है। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के द्वारा वर्णित राम कथा को यद्यपि मूल रूप में स्वीकार किया है किन्तु अपनी इच्छानुसार उसमें उन्होंने जो नवीन परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किये हैं वे उनकी अलौकिक काव्य प्रतिभा के द्योतक हैं। उनकी रामकथा काव्य भेद से उत्पन्न परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई अपने काल के युग बोध से सम्पृक्त विभिन्न निगमागम, पुराणादि का सार ग्रहण करती हुई नवीन उद्भावनाओं पर आधारित है जिसमें उनका सजग कवि ~~अपने व्यक्तित्व तथा~~ अपने कृतित्व की मौलिकता की पूर्ण रक्षा कर सका है। अपनी सार ग्राहिणी प्रतिभा तथा अनूठी संदभर्ण कला के बल पर जिस प्रकार महाकवि तुलसीदास जी मधुमक्खी की भांति एक अपूर्व रामचरित के मधुकोष का संचय कर सके ठीक उसी प्रकार 'सहजराम जी' ने भी परम्परा से प्राप्त रामकथा को तथा विभिन्न सूत्रों से प्राप्त होने वाली एतद् विषयक सामग्री को अपने ग्रन्थ 'रघुवंश दीपक' में नये परिवेश और नवीन उद्भावनाओं से ~~स~~ समन्वित कर एक ऐसे रसायन की रचना की है जिसमें अद्भुत स्वादु का अपूर्व आनन्द मिलता है। जिस प्रकार मधु संचय करने वाली मधु मक्खी सभी प्रकार से सरस अथवा नीरस पुष्पों पर बैठ, उसका रस संचित कर एक ऐसे मधुकोष का निर्माण करती है जिसमें केवल मधु की सरसता माधुर्य तथा स्वादु को ही माना जा सकता है शेष सभी पुष्प-रस अपना अस्तित्व विलीन कर नाम रहित हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार सहजराम जी ने भी 'रघुवंश दीपक' रूपी मधुकोष का संचय कर अपनी सार ग्राहिणी प्रतिभा का अपूर्व परिचय दिया है। इस संबंध में ~~कथ~~ हमारे कथन की पुष्टि कवि की निम्नांकित उक्ति भी करती है -

हरि गुण कथा कविन कह भाखी ।
संचित करौ यथा मधु माखी ।। १

'रघुवंश दीपक' राम कथा का उत्तम महाकाव्य है उसमें महर्षि वाल्मीकि से लेकर गोस्वामी तुलसीदास तक की राम कथा की महत्वपूर्ण विकसित गतिशीलता का स्वरूप मिलता है। रामचरित मानस से ही रचना की मूल प्रेरणा प्राप्त करके भी कवि ने अपनी कृति को उससे भिन्न रखा है। इससंबंध में भी उसका यह कथन कि -

राम चरित मानस प्रथम, पढ़ै पत्र दुइ चारि ।
पुनि रघुवंश प्रदीप यह, पढ़ै विवेक विचारि।।२

रामचरित मानस तथा रघुवंश दीपक के भेद को स्पष्ट करने के लिये ही है। कवि के अनुसार रामचरित मानस के अध्ययन की पृष्ठभूमि में ही अत्यन्त सजग रहकर विवेक युक्त बुद्धि के द्वारा ही 'रघुवंश दीपक' को पढ़कर समझा जा सकता है। नीर-क्षीर विवेकिनी बुद्धि ही इन दोनों रचनाओं में निर्देशित वैशिष्ट्य को पहिचान सकती है अन्यथा 'रघुवंश दीपक' को 'रामचरित मानस' का छायानुवाद कहने की भयंकर भूल होना आश्चर्य की बात न होगी। ३

अपने प्रेरक महाकवि तुलसीदास जी के सबंध में कवि ने एक बात और कही है। वह कहता है -

निज अनुगामी जानि के, स्वामी तुलसीदास ।
सहजराम उर वास कर, कीन्हों ग्रन्थ प्रकाश।।४

उपर्युक्त कथन में भी गोस्वामी तुलसीदास तथा उनके ग्रन्थ 'रामचरित मानस' से प्रेरणा ग्रहण करने की स्पष्ट स्वीकृति है । हमारा चर्चित कवि तुलसीदासजी का अनुगमन करने वाला एक ऐसा पथिक है जिसके सामने उनके द्वारा निर्देशित प्रशस्त राजमार्ग था जिसपर चलकर वह

---

१-रघुवंश दीपक- बालकाण्ड पृष्ठ -४
२- रघुवंश दीपक -उत्तरकाण्ड अंतिम दोहा ( १७२-७)
३- दृष्टव्य डा० ब्रजकिशोर मिश्र का कथन-अवध के प्रमुख कवि-पृष्ठ २७५
४- रघुवंश दीपक -उत्तरकाण्ड पृष्ठ ७०६ दोहा ( १७२-३)

वह अपने गन्तव्य पर विना किसी भटकाव अथवा दिशा भ्रम के पहुंच सकता था। कवि ने स्पष्टत: तुलसीदास जी का अनुगमन किया है किन्तु आंखें बन्द करके नहीं । राजमार्ग पर चलते हुए उसने उसके राजवैभव तथा उसकी गरिमा को खुली आंखों से हर प्रकार से देखा है। मार्ग में आने वाले विभिन्न दृश्यों को से उसने आंखें नहीं चुराईं अपितु उनको आत्मसात् करता हुआ आगे बढ़ता गया है। उसने राजमार्ग की यात्रा में आने वाले उनअभावों को भी लक्ष्य किया है जिन्हें दूर कर यात्रा को अधिक सुखद तथा सुगम बनाया जा सकता था। सहजराम जी ने `रघुवंश दीपक` रचना में `रामचरित मानस` की विविध सामग्री का अवलोकन करते हुए उसके विभिन्न कथा प्रसंगों, मार्मिक स्थलों तथा भाव भूमियों को अपने अपने अनुकूल बनाकर अपनी कवित्व शक्ति के बल पर नये रूप विधान किये हैं तथा उन अभावों को पूरा करने का भी प्रयास किया है जो उसके दृष्टि पथ में काव्य रचना के समय आ गये थे ।

निष्कर्ष :
--------

१-उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य हमारे सम्मुख स्पष्ट रूप से आता है कि रघुवंश दीपक की रचना की प्रेरणा कवि सहजराम जी को महाकवि तुलसीदास जी की रचना `रामचरित मानस` से प्राप्त हुई थी ।

२- द्वितीयत: यद्यपि `रामचरित मानस` की प्रेरणा से ही `रघुवंश दीपक` की रचना हुई है किन्तु उसके कवि ने अपनी रचना के स्वतंत्र अस्तित्व का भी प्रयास किया है जिससे वह `रामचरित मानस` की छाया अथवा अनुकृति न हो सके ।

३-`रघुवंश दीपक` की रचना में सार ग्राहिणी तथा मौलिक रचनात्मक काव्य प्रतिभा का अपूर्व संयोग था। मधुमक्खी की भांति उसकी सारग्राहिणी प्रतिभा ने मधुकोष के रूप में ही रघुवंश दीपक की रचना की थी जिसके स्वादु में मौलिकता थी।

------

## रघुवंश दीपक की रचना के मूल स्त्रोत

पूर्ववर्ती पृष्ठों में इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है कि रघुवंश दीपक की रचना की मूल प्रेरणा यद्यपि कवि श्री सहजराम जी को रामचरित मानस से ही प्राप्त हुई है किन्तु कवि की सारग्राहिणी प्रतिभा के कारण वह एक मौलिक साहित्यिक कृति के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित की जा सकती है। यहां हम उन स्त्रोतों की खोज करेंगे जिनसे कवि ने किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ सामग्री ग्रहण की है। इस कृति में ~~मुख्यत~~: ऐसे स्त्रोत प्राय: नहीं है जिनसे रामकथा के अन्य गायकों ने भी सामग्री का संचयन किया है ।

'बाल्मीकि रामायण,' अध्यात्म रामायण', 'भुसुण्डि रामायण', 'आनन्द रामायण', 'रघुवंश', 'प्रसन्न राघव', 'हनुमन्नाटक', 'श्रीमद् भागवत' जैसे संस्कृत के राम काव्य, नाटक तथा पुराण एवं रामचरित मानस ,रामचन्द्रिका जैसी हिन्दी की रचनायें रघुवंश दीपक के मूल स्त्रोत हैं । सहजराम जी ने इन स्त्रोतों से कथावस्तु, चरित्र चित्रण, सम्वाद तथा भक्ति-विषयक विभिन्न सामग्री का बड़ी सतर्कता के साथ, अपनी रचना में उपयोग किया है । विभिन्न भाव-भूमियों, मानसिक विश्लेषणों तथा आध्यात्मिक विचारणाओं में कवि ने अपने पूर्ववर्ती समस्त राम ~~काव्य~~ साहित्य से जो सामग्री ग्रहण की है उसकी प्रभावोत्पादकता तथा अभिव्यक्ति के सामर्थ्य से उसका पूर्ण परिचय था। सामग्री के कलात्मक सौन्दर्य तथा भावात्मक गहराई से भी उसका पूर्ण परिचय था । फलस्वरूप उसने जो भी ग्रहण किया है वह या तो 'रघुवंश दीपक' की कथात्मक विशेषता की वृद्धि करती, है या ~~उसकी~~ पात्रों की चारित्रिक विशेषता का उद्घाटन करती, है अथवा उसके सौन्दर्य पक्ष को सँवारती या फिर उसकी वैचारिक तथा आध्यात्मिक भूमि को उर्वरता प्रदान करती है। ऐसे स्त्रोतों से ली गई सामग्री का विवेचन हमारे कथन को पुष्ट करने में सहायक होगा ।

### १-बाल्मीकि रामायण और रघुवंश दीपक :

महर्षि बाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत की गई आदि राम कथा को

उनके परवर्ती प्राय: सभी कवियों ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है 'रघुवंश दीपक' का रचयिता भी इसका अपवाद नहीं है। कवि सहजराम जी ने 'रघुवंश दीपक' में जिस कथानक के ताने-बाने पर सम्पूर्ण राम-काव्य की रचना की है उसका मूल स्त्रोत भी 'वाल्मीकि रामायण' ही है यद्यपि उसमें अन्य स्त्रोतों से ग्रहण की गई सामग्री का भी यथावसर उपयोग किया गया है। ऐसे कथा-प्रसंग जिनके माध्यम से रामकथा के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषता का उद्घाटन स्वाभाविक रीति से किया जा सकता था 'रघुवंश दीपक' के कवि ने वाल्मीकि रामायण' से ग्रहण किये हैं इनमें मुख्य आधिकारिक कथा के साथ-साथ कतिपय प्रासंगिक कथाएँ भी सम्मिलित हैं। वस्तु-ग्रहण की इस प्रक्रिया में सहजराम जी का मुख्य दृष्टिकोण यह भी रहा है कि वे वाल्मीकि के राम को उनके नरत्व के आदर्श रूप में ग्रहण कर उनमें मानवोचित सुख-दुख तथा राग-द्वेष की विभिन्न भाव-स्थितियों के स्वाभाविक प्रसंग उपस्थित करना चाहते थे। तुलसीदास जी के राम के परम ब्रह्मत्व से वे पूर्ण प्रभावित थे किन्तु नर-रूप में अवतरित होने वाले राम की लीला-माधुरी का रसास्वादन करना चाहते थे। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही उन्होंने राम को परम ब्रह्मत्व तथा आदर्श नरत्व के समन्वित रूप में 'रघुवंश दीपक' के नायक के पद पर प्रतिष्ठित किया है। राम को इस रूप में उपस्थित करने के लिये ही उन्होंने उनके नर-रूप को सुख-दुख तथा राग-द्वेष आदि विभिन्न मानवीय विकारों से प्रभावित होते हुए भी प्रदर्शित किया है। ~~वस्तुत:~~ अत: ऐसे प्रसंग उन्होंने वाल्मीकि रामायण से ही ग्रहण किये हैं। यहाँ 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'रघुवंश दीपक' के ऐसे कथा प्रसंगों का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा, जो एक दूसरे से साम्य रखते हैं तथा जिनमें राम के साथ ही अन्य पात्रों की मानवीय सम्वेदनाओं के चित्र भी मिलते हैं।

~~(क)~~ प्रथम - कैकेयी के वरदानों से मोहित राजा दशरथ राम को वन-गमन की आज्ञा देकर भी यह चाहते थे कि राम किसी प्रकार अयोध्या में ही रहकर वन न जायें। भले ही वे (राम) उन्हें (दशरथ) बन्दी बनाकर ही क्यों न इस उद्देश्य को पूरा करें। 'वाल्मीकि रामायण' व 'रघुवंश दीपक' का यह साम्य निम्नलिखित उद्धरणों से स्पष्ट है --

वाल्मीकि रामायण का प्रसंग[1] :

(क) अहं राघवं कैकेय्या वरदानेन मोहित: ।
अयोध्यायाम् त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्यताम्।।

रघुवंश दीपक का प्रसंग[2] :

(ख) मैं बन दीन्ह वचन प्रतिपाला ।
करि निग्रह मोहि होउ भुवाला।।
मैं वनितावश प्राण पियारे ।
करहुन वचन प्रमाण हमारे ।।

~~(२)~~ द्वितीय - दूसरा प्रसंग भी वन-गमन के अवसर का ही है। श्री राम माता कौशल्या से विदा माँगने के लिये जाते हैं । माता तथा लक्ष्मण दोनों ही उन्हें वन जाने से रोकने की चेष्टा करते हैं। इस अवसर पर लक्ष्मण ने अपने पिता राजा दशरथ की जो भर्त्सना की है, उसकी भाषा तथा क्रोध में कहे गये उनके वाक्य दोनों में एक से पाये जाते हैं ।

वाल्मीकि रामायण :

(क) प्रोत्साहितोऽयं कैकेय्या, सन्तुष्टो यदि न:पिता ।३
अमित्र भूतो निस्संक वध्यतां वध्यतामपि ।।
गुरोरप्य लिप्तस्य, कार्याकार्यम् जानत :।
उत्पथं प्रतिपन्नस्य, कार्यं भवति शासनम् ।।
ह निष्ये पितरं वृद्धं कैकेय्यासक्त मानसम् ।
कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धयावेन गर्हितम् ।।४

---

१-वाल्मीकि रामायण-अयोध्याकाण्ड सर्ग ३४।२६
२- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २२५
३- वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २१श्लोक १२
४-वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २१ श्लोक १२,१३,१६

रघुवंश दीपक :

(ख) करिय न वचन प्रमाण पिता के ।
भ्रमित चित तेहि वश वनिता के ।।
अति कामी कर कहा न कीजै ।
गुरु पितु मातु न स्वामि गनीजै।।

दोहा- मदिरा दारा भूत वश तजे धर्म मरजाद ।
तिन कर कहा न करिय प्रभु,करतव विविध विषाद।।१

तृतीय – इसी प्रकार वन के लिये प्रस्थित होते समय वाल्मीकि रामायण में जिस प्रकार रामनेअपनी पत्नी सीता को समझाते हुए अयोध्या में ही रहने की सलाह दी है वह प्रसंग भी दोनो रामायणों में एक सा ही है, साथ ही सीता द्वारा जो उत्तर राम को दिया गया है उसमें भी दोनो स्थलों में पूर्ण साम्य है :-

अ-वाल्मीकि रामायण:

(क) भरतस्य समीपे ते नाहं कथ्य क चादत ।
ऋद्धि युक्ताहि पुरुषा न सहन्ते परस्तवन् ।
तस्यान्न ते गुणाः कथ्या भरतस्याग्रतो मम।।
अहं ते नानु वक्तव्यो विशेषाण कदाचत ।
अनुकूलस्य तयाशक्यं समीपे तस्य वर्तितुम ।।२

रघुवंश दीपक :

(ख) तजि अभिमान दीनता माखे।संतत् रहेहु भरत रुख राखे ।।
कहेहु न कतहुं हमार प्रभाऊ।पर प्रभुता नहि सकै नराऊ।।३

चतुर्थ – इसी प्रकार सीता द्वारा रमम को दिया गया उत्तर -

---

१- रघुवंश दीपक अयोध्य ा काण्ड पृष्ठ २२८ दोहा ७८

२- वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २७ श्लोक २४।२५।२६

३- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २३३ दोहा ८० से पूर्व की चौपाइयां

४-वाल्मीकि रामायण:

(क) किं त्वामन्यत वैदेह: पिता मे मिथिलाधिप: ।
राम जामातरं प्राप्य स्त्रियं पुरुषविग्रहम् ।।१
भर्तुर्भाग्यं तु भार्यैका प्राप्नोति पुरुषर्षभ ।
अतश्चैवाहमादिष्टा वने वस्तव्यमित्यपि ।।२

रघुवंश दीपक

(ख) पिता हमार पुरुष के मोरे। हमहि बिवाहि दीन धनु तोरे।।३
माता भाग भोग कर नारी। सम्पति विपति बटावन हारी।।४

पञ्चम -- माता कौशल्या के द्वारा व्यक्त किए गए उद्गार जो उन्होंने अपने पुत्र श्री राम के सम्मुख वन गमन के अवसर पर कहे हैं, 'वाल्मीकि रामायण' की ही तरह 'रघुवंश दीपक' में भी वैसे ही हैं :-

४-वाल्मीकि रामायण:

(क) यदि पुत्र न जायेथा मम शोकाय राघव ।
न स्म दु:खमतो भूय: पश्येयमहम प्रजा:।।
एक एव हि वन्ध्याया: शोको भवति मानस:।
अप्रजाअस्मीति सन्तापो न ह्यन्य: पुत्र विद्यते।।५

रघुवंश दीपक

(ख) प्रथमहिं मोहि रहा अति शोगू।वन्ध्या मोहि कहत सब लोगू ।।
अब रघुनाथ दून दुख मोही। चलत विलोकव कानन तोही।।६

षष्ठ -- कैकेयी द्वारा दोनों वरदानों के माँगने पर राजा दशरथ ने उसे पहले तो बहुत समझाया परन्तु उसके न मानने पर उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा कि

---

१-वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड- सर्ग ३०।१-४
२-वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २८ श्लोक ५
३-रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड- पृष्ठ २३४ दोहा ८१ से पूर्व की चौपाई
४- वही अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २३४ दोहा ८१ के बाद की चौपाई
५- वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २० श्लोक ३६-३७
६- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २२८ दोहा ६६ से पूर्व

• जिस हाथ को मैंने अग्नि के समीप वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ ग्रहण किया था उसे अब छोड़ रहा हूं। मेरे मरने पर न तो तू मेरा शरीर स्पर्श करे और न भरत मेरी अंत्येष्टि करें, यह प्रसंग भी 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर ही 'रघुवंश दीपक' में ज्यों का त्यों ले लिया गया है।

६-वाल्मीकि रामायण:

(क) यस्ते मन्मकृत: पाणिरानौ पापे मया धृत: । १
सत्यजामि स्वजं चैव तव पुत्रं सहत्वया ।।१४
सपुत्रया त्वया नैव कर्तव्या सलिलक्रिया।।१७

रघुवंश दीपक

(ख) हम अब तन मन वचन ते, कीन्ह कैकेयी त्याग।
सप्त मुनिन्ह जिमि कृतिका, तजि जानी हतिभाग।।
तजव प्राण बिनु राम सनेही ।पानी पिण्ड भरत जनि देही ।।२

७. अन्य प्रसंग -- उपर्युक्त प्रसंगोंके अतिरिक्त राम के बाण से घायल होकर मरते समय कंचन मृग रूप धारी मारीचि ने जो कातर स्वतर में लक्ष्मण को पुकारा था उसे सुनकर सीता भयभीत हो तुरन्त राम की सहायता के लिये लक्ष्मण को वहाँ जाने के लिये हठ करने लगीं और लक्ष्मण द्वारा समझाये जाने पर सीता ने क्रुद्ध होकर लक्ष्मण को दु:शील, कठोर हृदय, कुलकलंक, दुष्ट भरत का गुप्तचर तथा कैकेयी द्वारा भेजे गये राम को कष्ट देने वाला कहकर उनकी भर्त्सना की है। 'वाल्मीकि रामायण' का यह प्रसंग[3] भी रघुवंश दीपक[4] में मिलता है। हनुमान का लंका प्रवेश तथा सीता के समीप पहुँच कर राम के शारीरिक चिन्हों का पूर्ण परिचय देने की कथा, वाटिका विध्वंश करते समय जम्बमाली, विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर आदि राक्षस सैनिकों सहित

---

१-वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १४ श्लोक १४।१७
२-रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड पृष्ठ २४१ दोहा ६६ से बाद की चौपाई
३-वाल्मीकि रामायण अरण्डकाण्ड सर्ग ४५ श्लोक २१,२२,२३,२४,२५,२६
४-रघुवंश दीपक अरण्डकाण्ड पृष्ठ ३६५ दोहा ८८ तथा उसकी परवर्ती चौपाइयां

अक्षयकुमार का वध दोनों रामायणों में एक सा है। लंकादहन के बाद हनुमान जी के हृदय में यह शंका उत्पन्न हुई कि कहीं सम्पूर्ण अग्निकाण्ड में साध्वी सीताजी का दहन तो नहीं हो गया १ कथा का यह प्रसंग दोनों में ही मिलता है

उपर्युक्त कथा प्रसंगों के अतिरिक्त सहजराम जी ने वाल्मीकि रामायण में वर्णित कतिपय प्रासंगिक कथाओं को भी ग्रहण किया है। इनमें से विश्वामित्र आगमन प्रसंग, गंगा की उत्पत्ति की कथा तथा सगर के पुत्रों के उद्धार के लिये अंशुमान और भगीरथ की तपस्या, सागर मन्थन तथा चौदह रत्नों की उत्पत्ति व मोहिनी चरित्र, अहल्या प्रसंग तथा शतानन्द द्वारा राम के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन, परशुराम प्रसंग, श्रवणाख्यान, चित्रकूट में श्रीराम के द्वारा जावालि के नास्तिक मत के खण्डन का प्रसंग, अनुसुइया द्वारा पातिव्रत धर्म का उपदेश, विराध वध तथा उसके पूर्व जन्म की कथा, कबन्ध वध तथा उसके पूर्व जन्म की कथा, बलि वध की कथा तथा सुग्रीव पर लक्ष्मण का रोष, स्वयंप्रभा वृतान्त, जामवन्त द्वारा हनुमान जन्म कथा तथा उनकी शक्ति का वर्णन, लंका प्रवेश के पश्चात् रावण के महल में हनुमान द्वारा सीता की खोज का प्रसंग, त्रिजटा का स्वप्न वर्णन, सुवेल पर्वत पर से सुग्रीव द्वारा रावण की रंगशाला का दर्शन तथा उनका रावण के समीप कूद कर पहुंचने पर द्वन्द्व युद्ध एवं पुनः श्रीराम के समीप सुवेल पर्वत पर लौटने का प्रसंग आदि भी इसी तथ्य के परिचायक हैं।

**निष्कर्ष :**

१- उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रघुवंश दीपक की रचना में कवि ने वाल्मीकि रामायण से आधिकारिक इतिवृत्त के ग्रहण करने के साथ ही कतिपय प्रासंगिक कथाओं को भी स्वीकार कर लिया था।

2. कवि ने पात्रों के चारित्रिक वैशिष्ट्य के उद्घाटन तथा उसे मनोविज्ञानिक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिये `वाल्मीकि रामायण ` के प्रासंगिक अन्तर्द्वन्द्वों से युक्त बहुत से कथा प्रसंग ग्रहण किये थे।

3. सम्भवतः इन अतिरिक्त घटना-प्रसंगों के कारण प्रस्तुत कृति का आकार 'मानस' की तुलना में वृहद् हो गया है।

---

१-(क)दृष्टव्य वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड सर्ग ५५ श्लोक ८

यदि दग्धा त्वियं सर्वा नूनमार्यापि जानकी। दग्धा तेन मया भर्तुर्हतं कार्यं म - जानता।।

(ख)रघुवंश दीपक सुन्दरकाण्ड पृष्ठ ४८४दोहा ५७

सुधिन रही कछु क्रोधवश, समुझि समुझि पछितात।
जरा विभीषण कर भवन, जरी जानकी मात ।।

## अध्यात्म रामायण और रघुवंश दीपक

'रघुवंश दीपक' की रचना में जितनी प्रभूत सामग्री 'अध्यात्म रामायण से ग्रहण' की गई है उतनी संभवत: किसी अन्य ग्रन्थ से नहीं। गोस्वामी तुलसीदास जी की रचना 'रामचरित मानस' को अपनी प्रेरणा का प्रधान केन्द्र बिन्दु मानकर भी 'रघुवंश दीपक' के कवि ने विभिन्न कथा प्रसंगों, भावभूमियों तथा वर्णन पद्धति में जो स्वतंत्रता प्रदर्शित की है उसकी समीक्षा करने पर यह तथ्य सामने आता है कि उसने 'रामचरित मानस' के अतिरिक्त अन्य काव्य ग्रन्थों का भरपूर उपयोग किया है। स्वयं तुलसीदासजी ने भी 'अध्यात्म रामायण' से जितनी अधिक सामग्री ग्रहण की है उतनी न तो वाल्मीकि रामायण से और न अन्य ग्रन्थों से ही। इसी कारण 'रघुवंश दीपक' तथा 'रामचरित मानस' में अध्यात्म रामायण से गृहीत सामग्री का बहुत अंशों तक पूर्ण साम्य दिखाई देता है। हम इस संभावना को भी ~~मुख नहीं मोड़~~ उपेक्षा नहीं की जा सकती कि मूल रूप में सहजराम जी रामचरित मानस से ही प्रभावित हुये हों। तथापि बहुत से ऐसे प्रसंग अथवा कथांश जो 'अध्यात्म रामायण' से 'रघुवंश दीपक' में तो गृहीत दिखाई देते हैं किन्तु 'रामचरित मानस' में उनका उल्लेख तक न होना कवि के 'अध्यात्म रामायण' से सीधे संपर्क को पुष्ट करते हैं। उदाहरणार्थ रघुवंश दीपक का उत्तरकाण्ड 'अध्यात्म रामायण' के उत्तरकाण्ड की कथा को समेटे हुये है जबकि 'रामचरित मानस' में उसका अधिकांश भाग छोड़ दिया गया है। अस्तु यहाँ पहले हम अत्यन्त संक्षेप में 'अध्यात्म रामायण' तथा रघुवंश दीपक की कथावस्तु में जो साम्य दिखाई देता है उसपर विचार करेंगे।

१- भार पीड़िता पृथ्वी सहित सभी देवगणों का ब्रह्माजी के साथ ही क्षीर सागर पर भगवान विष्णु की स्तुति करना, विष्णु भगवान का प्रकट होकर अवतार ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना तथा सभी देवगणों का बानर रूप में पृथ्वी पर अवतार लेने की कथा दोनों में एक सी है। (रामचरितमानस में यह प्रसंग भिन्न ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

२- इसी प्रकार कश्यप -अदिति का दशरथ, कौशल्या रूप में राम के पिता माता होने की कथा भी एक ही प्रकार की है। दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना तथा राम जन्म की कथा एक सी है। कौशल्या द्वारा जन्म के समय पर राम की स्तुति दोनों ही रामायणों में एक सी हैं। इसी प्रकार राम, लक्ष्मण

भरत शत्रुघ्न के नामकरण में पूर्णत: साम्य है। विश्वामित्र आगमन तथा राम लक्ष्मण का उनके साथ यज्ञ रक्षार्थ जाना, धनुर्भंग, विवाह के प्रसंग एक से हैं। राम वन गमन, निषाद मिलन, सुमन्त का प्रत्यागमन, दशरथ प्राण विसर्जन, भरत का ननिहाल से लौटना, वशिष्ठ के आदेश से पिता की अन्त्येष्टि क्रिया करना, चित्रकूट प्रस्थान, मार्ग में गुह और भरद्वाज भेंट तथा चित्रकूट दर्शन व राम से भेंट और संवाद तथा राम की चरणपादुकायें लेकर भरत का अयोध्या प्रत्यागमन एक सा ही है। शरभंग, सुतीक्ष्ण और अगस्त संवाद, पंचवटी निवास लक्ष्मण को ज्ञान देना, सूर्पणखा नासिका कान निपात, खरयुद्ध, सीताहरण, जटायु संवाद, शबरी मिलन आदि का वर्णन दोनों रामायणों में एक सा ही है राम सुग्रीव मैत्री, वालि वध, सुग्रीव को राज्य पद की प्राप्ति, राम का प्रवर्षण गिरि प्रवास, राम का शोक और लक्ष्मण का क्रोधित होकर किष्किंधा पुरी में प्रवेश, सीता की खोज के लिये वानरों का प्रस्थान, सम्पाती - भेंट और समुद्रोल्लंघन की मंत्रणा आदि में भी साम्य है। हनूमान का समुद्र लांघ कर लंका में प्रवेश, रावण और राक्षसियों का सीता को भय दिखाना, ब्रह्मपाश में बंधन, रावण हनूमान संवाद, लंका दहन, तथा सीताजी से विदा होकर समुद्र को पार कर राम को सीता का संदेश सुनाना, ~~दोनों रामायणों में एक से हैं~~ सेतु निर्माण, रामेश्वर प्रतिष्ठा, समुद्रसंतरण, बानर राक्षस संग्राम, लक्ष्मण को शक्ति लगना तथा उनकी मूर्च्छा, हनूमान का संजीवनी लाने के लिये जाना, मार्ग में कालनेमि वध, लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होना, कुम्भकरण जागरण तथा युद्ध तथा वध, मेघनाद वध, राम रावण संग्राम, रावण वध, विभीषण र ० सीता की अग्नि परीक्षा, राम की अयोध्या यात्रा के प्रसंग दोनों में एक से हैं। इसी प्रकार उत्तरकाण्ड की सम्पूर्ण कथा का अधिकांश भाग 'अध्यात्म रामायण' से ही लिया गया है। कुश का राज्याभिषेक तथा कुश के राज्य का वर्णन, अतिथि का राज्याभिषेक तथा उनके राज्य का वर्णन एवं अयोध्या को पुन: बसाने की कथा को छोड़कर अन्य सभी कथायें 'रघुवंश दीपक' के उत्तरकाण्ड में वैसी ही हैं जैसी 'अध्यात्म रामायण' में।

कथावस्तु के इस व्यापक प्रभाव के साथ ही 'आध्यात्म रामायण' की वैचारिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं में 'रघुवंश दीपक' का कवि उससे पूर्णत: प्रभावित है। राम के ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा उनके

सगुण ब्रह्मत्व का समर्थन ,विष्णु तथा परम ब्रह्म से राम की अभिन्नता स्थापित करने का प्रयास, जीव, जगत, माया तथा अन्य आध्यात्मिक तत्त्वों का विवेचन भी कवि ने 'अध्यात्म रामायण' के आधार पर ही किया है। इसी प्रकार लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न तथा हनुमान सबंधी विचार भी अध्यात्म रामायण से ही प्रेरित कहे जा सकते हैं। इस सबंध की विस्तृत चर्चा कवि की भक्ति पद्धति तथा उसके दार्शनिक विचारों पर विचार करते समय यथा स्थान की जायेगी। यहाँ केवल इतना ही संकेत पर्याप्त होगा कि ज्ञान, भक्ति तथा ईश्वर ,जीवन, जगत, माया सबंधी विचारों में कवि तुलसी की ही भांति अध्यात्म रामायण से ही प्रेरित दिखाई देता है। एतद् विषयक तुलसी की अवधारणाओं का भी अध्यात्म रामायण पर आधारित होना हमें यह सोचने के लिये अवश्य विवश कर देती है कि हो सकता है कि सहजराम जी ने यह सम्पूर्ण सामग्री 'अध्यात्म रामायण' की अपेक्षा तुलसी से ही लिया हो।

अध्यात्म रामायण के कतिपय अंश, जो सहजराम जी ने छाया रूप में ग्रहण किये हैं उन्हें संक्षेप में लक्ष्य कर लेना यहीं आवश्यक है।

(१) राम,लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के नाम करण का प्रसंग -

(क)अध्यात्म रामायण:

यस्मिन् रमन्ते मुनयो : विद्यया ज्ञान विप्लवे ।
तं गुरु प्राह रामेति रमणाद्राम इत्यपि ।।
भरणाद्भरतो नाम लक्ष्मणं लक्षणान्वितम् ।
शत्रुघ्नं शत्रु हन्तारमेवं गुरुर भाषत ।। १

(ख)रघुवंश दीपक:

मुनि मन रमित रूप अभिरामा। ताते कह्यि राम अस नामा।।
लक्षते अधिक कोटि गुण लक्षण। ताते लछिमन नाम विचक्षन।।
कैकै सुवन भरत अस नामा। राम प्रेम पूरित अभिरामा ।।
भरत नाम के अर्थ अनूपा । भव भरता भगवत रत भूपा ।।

---

१- अध्यात्म रामायण बालकाण्ड सर्ग ३ श्लोक ४०,४१

काम क्रोध मद लोभ अराती।दारुण हृदय वसहिं दिन राती।।

जासु नाम जपि जीतिउ आसू।कहेउ मुनिन्द अरिदमन तासू।।१

नाम करण के इस प्रसंग में सहजराम जी ने राम,लक्ष्मण,भरत तथा शत्रुघ्न के चारित्रिक विशेषता की ओर जो संकेत दिया है उसमें ` अध्यात्म रामायण ` के भाव का विस्तार ही दृष्टिगत होता है। इस तथ्य की तुलना यदि `रामचरित मानस` से की जाये तो यह कहा जा सकता है कि तुलसीदास ने एतद्विषयक मूल भाव को ग्रहण करके भी अपनी मौलिक प्रतिभा एवं चरित्रांकन की निजी चेतना के साथ इसे प्रस्तुत किया है। २ कहना न होगा कि सहजराम तुलसी की सी निजी काव्य चेतना को अपने वर्णन में नहीं प्रमाणित कर सके हैं ।

२- अहिल्या उद्धार का प्रसंग :

(क) अध्यात्म रामायण- मानुषीकरणं चूर्णमस्ति,ते पादयो रति कथा- पृथीयसी।

(ख) रघुवंश दीपक - मानुष करनी मूरि,पद रज कथा पृथीयसी ।

उपर्युक्त उक्ति द्वारा रघुवंश दीपक कार ने मानो अनुवाद करके ही रख दिया हो ।

उपर्युक्त दोनों प्रसंग अध्यात्म रामायण और रामचरित मानस दोनों में मिलने के कारण प्रभाव ग्रहण के विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता किन्तु ऐसे प्रसंगों की संख्या अधिक है जो कि `मानस` में नहीं प्राप्त होते और `अध्यात्म रामायण ` तथा `रघुवंश दीपक ` में समान रूप से वर्णित है। अत: इन्हें निस्संदिग्ध रूप ` अध्यात्म रामायण ` का प्रदेय कहा जायेगा जो कि संक्षेप में इस प्रकार है -

(१) सनकादि ऋषियों का वैकुण्ठ आगमन तथा विष्णु के पार्षद जय विजय द्वारा उनका अपमानित होकर उन्हें शाप देने का प्रसंग `रघुवंश दीपक` में अध्यात्म रामायण से ग्रहण किया गया है ।

द्वितीय - वन-गमन प्रसंग पर क्रोध में उत्तेजित लक्ष्मण को समझाते हुए राम ने जिस प्रकार उन्हें संबोधित किया है दोनों रामायणों में एक सा ही मिलता है किन्तु `रामचरित मानस ` में यह प्रसंग उपलब्ध नहीं है :-

---

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १३५ के बाद की चौपाइयां

~~२- अध्यात्म रामायण- अयोध्याकाण्ड सर्ग ४ श्लोक १६,२५,३६,३७।~~

३- दृष्टव्य- रामचरित मानस, बालकाण्ड ।

(क) अध्यात्म रामायण -

यदिदं दृश्यते सर्वम् राज्यं देहादिकम् च्यत् ।
यदि सत्यं भवेतत्र आयासः सफलश्चते ।।
संसृतिः स्वप्न सदृशी सदारोगादि संकुला।
गंधर्व नगर प्रख्या मूढ़स्तामनुवर्तते ।
क्रोध मूलोयस्तापः क्रोधः संसार बंधनम् ।।
धर्मक्षय करः क्रोधस्तस्मात् क्रोधं परित्यज ।
क्रोध एष महान् शत्रुस्तृष्णा वैतरणी नदी।
संतोषो नन्दनवनं शान्तिरेवहि कामधुक।।१

(ख) रघुवंश दीपक -

जो यह लखण लखहु संसारा।थिर न धरा धन तन परिवारा।।
जानहु स्वप्न समान, यह संसार विचारि करि।
सोवत भर्म भुलान, जागि बिलोकहु भूठ सब ।।
कामादि तन बसहिं प्रराती।तिन महं क्रोध प्रबल बहु भांती।।
यम सम कोप अयश वैतरणी।तृष्णा बीचि विपुल कविवरणी।।
ताते लषन क्रोध निज त्यागू।क्षमा शील समता पथ लागू।।२

रघुवंश दीपक में गृहीत उपर्युक्त अंश अध्यात्म रामायण के छायानुवाद से ही प्रतीत होते हैं। 'रामचरित मानस' में राम का लक्ष्मण को दिया गया उपर्युक्त आदेश नहीं मिलता किन्तु राम के साथ जाने की उत्सुकता को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

३- राम वन-गमन प्रसंग पर लक्ष्मण की प्रतिक्रिया:

पिता की आज्ञा सुनकर वन जाने की तैयारी करते हुए जब राम अपनी माता से विदा के लिये आते हैं तो लक्ष्मण द्वारा अपने पिता के ऊपर किया गया क्रोध एवं उसे निवारण करते हुए लक्ष्मण को जिस प्रकार राम ने समझाया है, वह प्रसंग भी रघुवंश दीपक में अध्यात्म रामायण की अनुकृति सा ही प्रतीत होता है -

१- अध्यात्म रामायण- अयोध्याकाण्ड सर्ग ४ श्लोक १६,२५,३६,३७
२- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा ७१,७२ से पूर्व तथा पश्चात् की चौपाइयां

(क) अध्यात्म रामायण:

उन्मत्तं भ्रान्तमनसं कैकेयी वशवर्तिनम् ।
वध्वा निहन्मि भरतं तद्बन्धून्मातुलानापि।।
अद्य पश्यन्तु मे शौर्य लोकान्प्रदहत: पुरा ।
राम त्वमभिषिञ्चो काय कुरुष्य मन्दिरम् ।।१

(ख) रघुवंश दीपक:

करिय न वचन प्रमाण पिता के।भ्रमित चित्त हिवश वनिता के।
राखि पिता कारागृह आजू। कीजिये अवध कण्टक राजू ।।
आवहिं भरत सैनसंग साजी। मातलि सहित करौं रन राजी।।

४- राम वन-गमन पर दशरथ का कथन:

(क) अध्यात्म रामायण:

स्त्रीजितं भ्रान्त हृदय मुन्मार्ग परिवर्तिनम् ।
निगृह्य मा गृहाणेदं राज्य पापं न तद्भवेत।।३

(ख) रघुवंश दीपक :

मत्त भूतवश पिशुन सुरापी।चित्त भ्रम चौर नारिवश पापी।।
पिता इतादृश वचन सप्रीती। करियन कहत निगम अस नीती।

इसी प्रकार छोटी छोटी उक्तियों में भी इस प्रवृत्ति के दर्शन किये जा सकते हैं। यह उल्लेखनीय है कि दशरथ की यह भावानुभूति वाल्मीकि रामायण की भाँति ही है। 'मानस' में दशरथ का मौन तथा गम्भीर विषाद, कथा की मार्मिकता को अधिक बढ़ा देता है। इसी प्रकार अध्यात्म रामायण की निम्नलिखित पंक्तियाँ रघुवंश दीपक में मिलती हैं।

५- अध्यात्म रामायण :

तिष्ठ तिष्ठ सुमन्त्रेति राजा दशरथोऽब्रवीत ।
गच्छ गच्छेति रामेण तोपितो ऽचोदय द्रुथम ।।५

---

~~१--रघुवंश-दीपक-अयोध्याकाण्ड-दोहा-७१,७२-से-पूर्व-तथा-पश्चात्-की-चौपाइयाँ-।~~
१- अध्यात्म रामायण -अयोध्या काण्ड सर्ग ४ श्लोक १५,१६
२- रघुवंश दीपक- अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २२८-२२६
३- अध्यात्म रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग ३ श्लोक ६६
४- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड पृष्ठ २२५
५- अध्यात्म रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग ५ श्लोक ४५

<u>रघुवंश दीपक :</u>

तिष्ठ तिष्ठ कह कौशलमाला। गच्छ गच्छ कह दीन दयाला।।१

६- अध्यात्म रामायण - में जिस प्रकार महर्षि वाल्मीकि के द्वारा श्रीराम को अनेक निवास बता कर उन्हें सर्व व्यापी, जगदात्मा तथा भक्त हृदयों में निवास करने वाला परमत्व स्वीकार किया गया है, रघुवंश दीपक का कवि भी उसी रूप में उसका वर्णन करता हुआ अध्यात्म रामायण का ही अनुसरण करता है। २ नवधा भक्ति के वर्णन में भी कवि ने अध्यात्म रामायण का ही अनुगमन किया है यद्यपि इसमें प्रसंग अवश्य बदल दिया है।

७- रघुवंश दीपक - में दुंदुभि दैत्य कथा का विस्तृत वर्णन तथा सप्त तालों का श्रीराम के द्वारा एक ही बाण से भेदन का प्रसंग वैसा ही जैसा अध्यात्म रामायण में।

---

१- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड - पृष्ठ २४३

२- दृष्टव्य- अध्यात्म रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग ६ श्लोक ५३ से ६३ तक तथा रघुवंश दीपक पृष्ठ २७१ दोहा १५७ के पूर्व की चौपाई तथा परवर्ती चौपाई दोहा १५८ तक।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट है कि रघुवंश दीपक के मूल स्त्रोतों में अध्यात्म रामायण का प्रभाव अधिक है। इतिवृतात्मकता तथा विभिन्न भाव भूमियों में रघुवंश दीपक के कवि ने उससे विषयवस्तु के ग्रहण करने में संकोच नहीं किया, यही कारण है कतिपय स्थलों पर उसने 'अध्यात्म रामायण' के शब्दश: अनुवाद भी स्वीकार कर लिये हैं। तुलसीदास जी के मानस में भी नीति सबंधी उक्तियों में इस प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं किन्तु अनेक स्थलों पर [illegible] किया है, वह इसकी आलोच्य कृति में नहीं मिलता। ज्ञान, भक्ति, जीव, ब्रह्म, माया आदि आध्यात्मिक विचारों में यद्यपि उसने अध्यात्म रामायण से प्रेरणा ग्रहण की है, तथापि भक्ति निरूपण में वह तुलसीदास जी की भक्ति पद्धति का ही अनुसरण करता हुआ प्रतीत होता है जिस पर आगे विचार किया जायेगा।

## ३- भुसुण्डि रामायण और रघुवंश दीपक

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने 'भुसुण्डि रामायण' को राम भक्ति में रसिक भावना की प्रेरणा प्रदान करने वाला प्रमुख ग्रन्थ माना है। १ डॉ०सिंह के अनुसार इस ग्रन्थ में राम का अपनी पराशक्ति सीता के साथ रासलीला का वर्णन बड़े विस्तार के साथ किया गया है। विवाह से पूर्व अयोध्या के प्रमोद वन में देवतावतार गोपियों और बाद में अपनी पराशक्ति सीता के साथ राम की रास लीला, चित्रकूट में गोप गोपियों के साथ रास क्रीड़ा तथा दशरथ के अश्वमेघ यज्ञ में विजित राजाओं की सहस्त्रों कन्याओं को स्वीकार करने की मधुर लीला के वर्णन 'भुसुण्डि रामायण' में हैं। इसी प्रकार अनेक प्रकार की श्रृंगारी लीलाओं के प्रसंग इस रामायण में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त डॉ० सिंह ने विशेषत: `सहजा` नामक सखी का राम की पत्नी के रूप में उल्लेख को इस रामायण की एक कथात्मक विशेषता स्वीकार किया है। २ इसका सप्रसंग उल्लेख `रघुवंश दीपक` में भी मिलता है। डा० सिंह के अनुसार `सहजा` जनक वंशी कन्या कही गई है जिसे चित्रकूट लीला में प्रमुखता दी गई है तथा वही सीता- ज्ञान परम भक्ति और `सहजा` प्रेमा

---

१-डा० भगवती, प्रसाद सिंह -राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय -पृष्ठ ६६ (प्रथम सस्करण)

२- वही - पृष्ठ ६८

भक्ति की प्रतीक मानी गई है। १ भुसुण्डि रामायण का यह वर्णन 'रघुवंश दीपक' के रचयिता ने अपनी रुचि के अनुकूल तथा रसिक भावना की भक्ति पद्धति के प्रति अपने झुकाव के कारण ही प्रस्तुत किया है किन्तु वन के आमोद-प्रमोद के स्पष्टीकरण से उसने एक नई घटना को भी संयुक्त कर दिया है -

वन प्रमोद जहं सोमवट, सोहत सीताराम ।

आईं तहं सुर मुनि सुता, गोप सुता अभिराम।।२

\- - - - - - - - -

सहजादिक सेवत सिय दासी । चन्द्रकला विमला कमला सी।।३

एक बार प्रभु कौतुक कीन्हा । सहजा सखी रूप धरि लीन्हा।।

पठई जनक जानकी साथा। सोवत सिय गोद धरि माथा।।४

'सहजा सखी' के प्रसंग में इतना विस्तार हमें इस निष्कर्ष की ओर ले जाता है कि संभवत: कवि स्वयं को 'सहजा सखी' के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है और 'राम चरित मानस' के गुप्त तापस की ही भांति वह अपने आराध्य के सामीप्य का लाभ प्राप्त कर लेता है। यहां यह निर्दिष्ट कर देना प्रासंगिक ही होगा कि 'सहजराम' रसिक भावना के साधक थे अस्तु रसिक सम्प्रदाय की राम भक्ति के अन्तर्गत साधक को अपने आराध्य के समीप तक पहुंचने में सीता के माध्यम को ही स्वीकार करना पड़ता है ।

४- '<u>आनन्द रामायण और रघुवंश दीपक</u>'

'रघुवंश दीपक' में धनुष भंग प्रसंग की मानसिक दशाओं तथा भाव-भूमियों के निरूपण के लिये कवि श्री सहजराम जी ने 'आनन्द रामायण' से एतद् संबंधी सामग्री ग्रहण की है। 'आनन्द रामायण' के सार काण्ड में सर्ग ३ के श्लोक १११ से ११६ तक के वर्णन को लगभग उसी रूप में ग्रहण किया गया है -

---

१- डा० भगवतीप्रसाद सिंह- रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृष्ठ ६८

२-रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा - ३५४

३- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ३५३ के बाद की चौपाइयां

४- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ३५५ केबाद की चौपाइयां

(क) आनन्द रामायण:

एतस्मिन्नन्तरं सीता, रामं दृष्टवा समागणो ।
अब्रवीन्मधुरं वाक्यं, रत्नालंकार मण्डिता ।।
हे शम्भो, हे विधे, दुर्गे हे सावित्री सरस्वती।
युस्मांक प्रार्थयाम्यद्य प्रसार्य निज पल्लवम् ।।
सर्वैरे तन्महच्चापं, करणी चं तु पुष्पवत्।।१

(ख) रघुवंश दीपक :

प्रभु छवि निरखि मुदित मन सीता ।सुमिरि पिता प्रण भई समीता।।
पितु प्रण कठिन,कठिन भव चापू।कठिन मोर प्रण,कठिन मिलापू ।।
हे शिव, हे विरंचि,गणनायक ।हे श्रीपति अब्होउ सहायक ।।
टूटै धनुष मिटै दुख नाना । बिन टूटे तन रहै न प्राना ।।२

इसी प्रसंग का उल्लेख महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी किया है -

(ग) रामचरित मानस :

तब रामहिं बिलोकि बैदेही। सभय हृदय विनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेश भवानी ।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
गन नायक वरदायक देवा। आजु लगे कीन्हेउ तुअ सेवा ।।
बार बार विनती सुन मोरी। हरहु चाप गरुता अतिथोरी।।३

यहाँ पर भी हम इस संभावना ~~से भी है नहीं छट~~ को अस्वीकार नहीं कर सकते कि सहजरामजी ने उपर्युक्त प्रसंग तुलसीदास जी की प्रेरणा से ही लिया हो यद्यपि वह 'आनन्द रामायण' के अधिक निकट दिखाई देता है ।

---

१- आनन्द रामायण- काण्ड सर्ग ३ श्लोक १११,११३,११६

२- रघुवंश दीपक -बालकाण्ड- दोहा २६२ के बाद की चौपाई

३- रामचरित मानस- बालकाण्ड-दोहा २५६ के बाद की चौपाइयां ।

५- `रघुवंश और रघुवंश दीपक`

महाकाव्य की शास्त्रीय परिभाषा करते हुए आचार्य विश्वनाथ ने नायक के संबंध में विस्तार सहित विचार किया है। उनके कथनानुसार महाकाव्य में एक ही वंश में उत्पन्न कई राजाओं के चरित्र भी ग्रहण किये जा सकते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि उनके सम्मुख महाकवि कालिदास विरचित `रघुवंश` महाकाव्य लक्ष्य ग्रन्थ के रूप में अवश्य था जिसमें रघुकुल में उत्पन्न राम सहित उनके पूर्व वर्ती अन्य कई सम्राटों के चरित्र ग्रहण किये गये हैं। रघुवंश की इसी परम्परा को हमारे आलोच्य कवि श्री सहजराम जी ने भी अपने महाकाव्य `रघुवंश दीपक` में स्वीकार कर लिया था जिससे उसमें श्रीराम सहित उनके परवर्ती राजाओं के चरित्र का गान हुआ है। राम काव्य में दशरथ का चरित्र प्राय: प्रत्येक काव्य में मिलता है किन्तु अन्य राजाओं के चरित्र,रघुवंश को छोड़कर,एक ही काव्य में, नहीं मिलते। `रघुवंश दीपक` में राजा दशरथ के साथ ही श्री राम के परवर्ती उनके उत्तराधिकारियों में कुश तथा उनके पुत्र के चरित्रों का भी गान हुआ है। अस्तु यह कहने में हमें संकोच नहीं होता कि `रघुवंश दीपक पर रघुवंश की महाकाव्य-विषयक अवधारणा का अवश्य प्रभाव है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने ग्रन्थ के नामकरण मेंभी इसी मुख्य बात को स्वीकार करके ही उसका ` नाम `रघुवंश दीपक` किया है।

रघुवंश का द्वितीय प्रभाव जो `रघुवंश दीपक` पर दिखाई देता है वह है राम काव्य के कतिपय चरित्रों के उदात्तीकरण की प्रवृत्ति। महाकवि कालिदास ने विश्वामित्र द्वारा राम की याचना के प्रसंग में राजा दशरथ की चारित्रिक दुर्बलता की रक्षा के उद्देश्य से महर्षि वाल्मीकि का अनुसरण नहीं किया। 'वाल्मीकि रामायण' में दशरथ के चरित्र में दुर्बलता-जनित मोह के साथ ही भीरुता के भी दर्शन होते हैं। २ रघुवंश में दशरथ के वात्सल्यजनित मोह

---

१-आचार्य विश्वनाथ- साहित्य दर्पण ६।३१६
"एक वंश भवा भूपा: कुलजा बह वोऽपि वा"

२- वाल्मीकि रामायण-बालकाण्ड सर्ग २० श्लोक १६-२०,२१,२२,२३।

(सर्ग ११, श्लोक १से ५)।

को लेकर भी उनमें भीरुता का कहीं भी संकेत नहीं किया गया। ~~`रघुवंश~~ यह 'रामचरितमानस' से साम्य रखता है (बालकाण्ड दो. २०८/१-४)। ~~दीपक ` में राजा दशरथ के चरित्र का यही पक्ष व्यंजित हुआ है।~~

चारित्रिक उदात्तता की दृष्टि से दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव जो `रघुवंश दीपक` में `रघुवंश ` के प्रभाव को ध्वनित करता है वह है कैकेयी की चरित्रगत विशेषता। 'वाल्मीकि रामायण' में महर्षि वाल्मीकि ने कैकेयी के चरित्र में दुराग्रह, दम्भ, प्रभुत्व लालसा इस कोटि की अंकित की है कि उसका नारीरूप पूर्णत: ,विकृत हो गया था। १ महाकवि कालिदास ने `रघुवंश ` में कैकेयी के चरित्र में ग्लानि तथा पश्चात्ताप के भाव का प्राबल्य प्रदर्शित कर उसे निष्पाप घोषित कर उसकी चारित्रिक गिरावट से रक्षा की है। २ ~~`रघुवंश ` की इस नूतन उद्भावना को~~ `रघुवंश दीपक` के रचयिता ने भी स्वीकार कर ली थी। ३

` रघुवंश दीपक ` पर रघुवंश की कथावस्तु का भी प्रभाव दिखाई देता है। सहजराम जी ने 'रघुवंश दीपक' के उत्तरकाण्ड की अधिकांश सामग्री `रघुवंश ` से ही ग्रहण की थी। सीता परित्याग, लवकुश जन्म कथा, अश्वमेध यज्ञ की पूर्ति से पूर्व लवकुश का श्रीराम को छोड़कर, भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नादि भाइयों सहित राम के अन्य सेनापतियों के साथ युद्ध तथा सीता का राम में मिलन, लव-कुश सहित भरत लक्ष्मण, शत्रुघ्न के पुत्रों को राज्यवितरण करना, अयोध्या का स्त्री वेश में कुश के समीप जाना, कुश का अयोध्या को पुन: बसाना, कुमुद्वती परिणय, कुश के पुत्र अतिथि का जन्म तथा कुश द्वारा उसे राज्य सौंपना, सम्पूर्ण कथांश रघुवंश से ही ग्रहण किये गये प्रतीत होते हैं।४ यहां पर भी कवि ने उतनी ही सामग्री ली है जितनी उसे अपने महाकाव्य की रचना के लिये आवश्यक प्रतीत हुई। ~~अन्यथा~~ सम्भवत: इसी कारण उसने ` रघुवंश ` में वर्णित रघुवंश के उत्तराधिकारियों की एक लम्बी सूची ~~महाकवि कालिदास ने प्रस्तुत की है उसे कवि ने~~ अनावश्यक समझ कर छोड़ दी है।

रघुवंश से भिन्नता रखने के लिये कवि ने सीताराम मिलन के प्रसंग में स्वच्छन्दता से काम लिया है और अपनी रुचि के अनुकूल सम्पूर्ण कथा का

---

१-वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १२ श्लोक ४५से ४६ तक तथा श्लोक ११२।सर्ग १४ श्लोक ६,१०

२- रघुवंश ११।६७

३- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा २८६ तथा २६० के बीच की चौपाइयां।

४-दृष्टव्य- रघुवंश पंचदश सर्ग:श्लोक ८७ से ६० तक तथा सर्ग १६,१७।
रघुवंश दीपक-उत्तरकाण्ड-दोहा १३७ से १३६ के बीच का भाग ,दोहा १४३ के बाद की चौपाइयां,दोहा १४६,१४७,१४८,१४६,१५० दोहा १५३ से १५७ के मध्य की चौपाइयां।

पर्यवसान दुखान्त के स्थान पर सुखान्त में करने की इच्छा से उसने सीता को पृथ्वी में प्रवेश करते हुए न दिखाकर राम के साथ अश्वमेध यज्ञ को पूर्णकर अयोध्या में पुन: राज्य करते हुए अन्त में श्रीराम के साथ ही सदेह विमानारूढ़ हो महा प्रयाण करते हुए चित्रित किया है। यहां यह लक्ष्य कर लेना अप्रासंगिक न होगा कि 'रघुवंश दीपक' की कथा का संयोजन करते समय राम के राज्याभिषेक के परवर्ती प्रसंगों की रचना करने के लिये सहजराम जी के सम्मुख वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा रघुवंश जैसी महत्वपूर्ण रचनायें थीं किन्तु कवि ने इनसे ही सम्पूर्ण कथा न लेकर अपनी रुचि के अनुरूप अन्य परवर्ती काव्यों से भी सामग्री ग्रहण की है जिनपर आगे विचार किया जायेगा।

निष्कर्ष :
---------

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सहजराम जी महाकवि कालिदास की काव्य प्रतिभा तथा रघुवंश की आदर्शोन्मुख चारित्रिक अभिव्यक्ति एवं वस्तु संगठन की कला से अवश्य प्रभावित थे जिससे रघुवंश दीपक में उन्होंने 'रघुवंश' की एतद्विषयक सामग्री का उपयोग किया है।

६- 'प्रसन्न राघव और 'रघुवंश दीपक'

'रघुवंश दीपक' के केवल दो प्रसंगों पर 'प्रसन्न राघव' के प्रभाव के रूप में देखा ~~को दृष्टिगत किया~~ जा सकता है। प्रथम सीता और राम का पूर्वानुराग तथा द्वितीय अशोक वाटिका में सीता-रावण संवाद का प्रसंग। प्रथम प्रसंग में सीता राम का परस्पर एक दूसरे के प्रति आकर्षण तथा एक दूसरे को प्राप्त करने की लालसा वैसी ही है जिस प्रकार कि 'प्रसन्न राघव' के राम और सीता में।[१] दूसरे प्रसंग में प्रसन्न राघव का रावण सीता को अपनी पटरानी बनाने के लिये जिस प्रकार विभिन्न प्रकार से प्रयत्नशील है, वैसे ही रघुवंश दीपक में भी रावण का प्रयत्न दिखाई देता है। इसी प्रसंग में सीता द्वारा रावण को दिया गया उत्तर भी दोनों ही ग्रन्थों में एक सा ही है।[२] 'रामचरितमानस' में वर्णित इन प्रसंगों के प्रकाश में 'रघुवंश दीपक' प्रधान ग्रंथ में रामचरितमानस के [illegible]

---

१-दृष्टव्य- प्रसन्न राघव द्वितीय अंक तथा रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २२६ से २३८ की चौपाइयां।

२-दृष्टव्य- प्रसन्न राघव षाष्टम अंक तथा रघुवंश दीपक सुन्दरकाण्ड-दोहा १६,१८ १६ के बाद के छन्द, चौपाइयां।

में 'अनर्घराघव' के सन्निकट कहा जा सकता है)

७- 'हनुमन्नाटक' और 'रघुवंश दीपक'

हनुमन्नाटक के अनेक प्रसंग रघुवंश दीपक के कवि ने अपने काव्य में ग्रहण किये हैं। इनमें प्रथम प्रसंग धनुष भंग के अवसर का है। वाल्मीकि रामायण में राम का धनुष भंग करना उस समय चित्रित किया गया है जबकि अन्य सभी राजा अपने प्रयत्नों में असफल होकर अपने अपने स्थान को लौट गये थे। श्रीराम का विश्वामित्र तथा लक्ष्मण के साथ उस समय जनकपुर में आगमन होता है जब कि धनुष उठाने के लिये प्रयत्न शील कोई भी वीर मिथिलापुरी में नहीं रहता और वे अकस्मात् ही बातों ही बातों में ही उस विशाल शिव धनुष को लीला मात्र में ही उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाते समय उसे भंग कर देते हैं। हनुमन्नाटक में इस प्रसंग को बड़ा ही रोचक तथा शौर्यपूर्ण चित्रित किया गया है। राम धनुष यज्ञ के अवसर पर ही मिथिलापुरी पहुंचते हैं तथा यज्ञ मण्डप में उपस्थित अन्य राजाओं के हत वीर्य हो जाने पर उनके समक्ष ही शिव धनुष भंग कर जनक के परिताप को दूर करते हैं। रघुवंश-दीपक में इस प्रसंग को हनुमन्नाटक तथा 'रामचरितमानस' की ही भाँति ग्रहण किया गया है। इस अवसर पर किया गया जनक के प्रण की घोषणा भी वैसी ही है जैसी कि हनुमन्नाटक में तथा रावण द्वारा अपने पुरोहित को जनक के समीप भेजकर सीता को अपने लिये माँगने का प्रसंग भी वैसा ही है । १

दूसरा प्रसंग जो 'रघुवंश दीपक' में 'हनुमन्नाटक' से साम्य रखता है वह है वन पथ पर जाते हुये पथिक के रूप में राम, लक्ष्मण तथा सीता के सौन्दर्य का ग्राम वधूटियों द्वारा निरीक्षण तथा सीता के समीप जाकर ग्राम बालाओं का वन गमन के कारणों को पूंछना एवं सीता का उन्हें सस्नेह अपने निकट बिठाकर उत्तर देना। २ (सम्भवतः गोस्वामी तुलसीदास ने भी [illegible] 'हनुमन्नाटक' [illegible])

तीसरा प्रसंग अंगद के द्वारा रावण की सभा में रावण को दिये गये व्यंग विनोद भरे उत्तेजक उत्तर का है। ~~इस समय का~~ यह वाक्-चातुर्य तथा संवाद-कौशल

---

१- तुलनीय -हनुमन्नाटक अंक १।११ तथा रघुवंश दीपक -बालकाण्ड दोहा-२५६ के बाद की चौपाइयां ।

२- तुलनीय हनुमन्नाटक अंक ३।१५, पथि पथिकवधूभि: सादरं पृच्छ्य माना- रघुवंश दीपक- अयोध्याकाण्ड-दोहा १४५ से १४८ के मध्य की चौपाइयां ।

' रघुवंश दीपक ' में हनुमन्नाटक से ही प्रभावित दिखाई देते हैं, यद्यपि इस सम्बंध में केशवदास जी की 'रामचन्द्रिका ' के एतद् विषयक प्रसंग भी वैसे ही हैं।

चौथा प्रसंग जो रघुवंश दीपक में हनुमन्नाटक से ग्रहण किया गया सा प्रतीत होता है वह है हनुमान द्वारा वियोगिनी सीता की दशा का राम से विस्तार सहित वर्णन । इस प्रसंग की भावात्मक पृष्ठ भूमि तथा मार्मिकता में हनुमन्नाटक का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है ।

पांचवा प्रसंग जो हनुमन्नाटक की ही भांति 'रघुवंश दीपक' में भी एक सा ही चित्रित किया गया है वह है मन्दोदरी द्वारा अपने पति रावण को दी गई सम्मति तथा सीता को लौटा देने की प्रार्थना।१ यह प्रसंग भी 'रामचरितमानस' में भी ज्यों का त्यों रखा है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त कथा प्रसंगों को कवि श्री सहजराम जी ने सीधे 'हनुमन्नाटक ' से ही ग्रहण किया है अथवा अन्य किसी माध्यम से यह कहना कठिन है क्योंकि [प्रायः अधिकांश] इन्हीं सम्पूर्ण प्रसंगों में महाकवि तुलसीदासजी ने भी वैसा ही ढंग अपनाया है जैसा कि हनुमन्नाटक कार ने। हो सकता है कि कवि के दृष्टिपथ में 'रामचरित मानस ' का व्यापक प्रभाव होने के कारण तथा रचना के मूल में तुलसीदास जी की ही प्रेरणा होने के कारण यह सारे प्रसंग कवि ने महाकवि तुलसीदास जी के ही माध्यम से ग्रहण किये हों। इसके अतिरिक्त सवांद रचना में आचार्य केशवदास जी की रामचन्द्रिका का भी प्रभाव रहा हो, इस सम्भावना से भी पूर्ण रूप से इन्कार नहीं किया जा सकता। जो भी हो, किसी प्रामाणिक तथ्य के उपलब्ध न होने तक हम यदि यह मानकर चलें कि कवि ने सीधे हनुमन्नाटक से ही इन प्रसंगों को ग्रहण किया है तो अनुचित न होगा ।

८- ' श्रीमद्भागवत और रघुवंश दीपक '

' रघुवंश दीपक ' की कथावस्तु पर 'श्रीमद् भागवत' के कतिपय कथांशों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। सर्व प्रथम ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही सनकादि ऋषियों

---

१- तुलनीय- हनुमन्नाटक अंक ६।४७ तथा रघुवंश दीपक -लंका काण्ड दोहा १४ के बीच का छन्द व चौपाइयां ।

का वैकुण्ठ गमन तथा भगवान विष्णु के द्वारपाल जय विजय द्वारा उनका अपमान किये जाने पर राक्षस होने का शाप देने की कथा एवं इसी अवसर पर वैकुण्ठ लोक का वर्णन, श्रीमद्भागवत् से प्रभावित दिखाई देते हैं। १

दूसरी कथा जो श्रीमद्भागवत से `रघुवंश दीपक` में ग्रहण की गई है वह है प्रहलाद चरित्र। सहजरामजी ने प्रहलाद चरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन करते समय `श्रीमद्भागवत` के वे सभी प्रसंग ग्रहण कर लिये हैं जिनमें प्रहलाद की भक्ति, पिता के साथ उसका संघर्ष एवं असुर बालकों तथा हिरण्यकश्यप को एकत्र कर ब्रह्म ज्ञान का उपदेश व नवधा भक्ति का वर्णन किया गया है। २

उपर्युक्त कथा प्रसंगों को ग्रहण करने में कवि श्री सहजराम की उस प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं जिसके द्वारा जन साधारण में भक्ति के प्रचार तथा प्रसार के लिये भगवान के अमित सामर्थ्य, भक्त वत्सलता, शरणागत वत्सलता तथा दिव्य कर्मों एवं लीला तत्त्व को प्रकट करने की आवश्यकता पड़ती है। वस्तुत: इस पौराणिक शैली के ग्रहण करने में कवि का यही उद्देश्य प्रतीत होता है।

## ६- `रामचरित मानस और रघुवंश दीपक`

पूर्ववर्ती पृष्ठों में `रघुवंश दीपक` की रचना के मूल स्त्रोतों की खोज करते हुए संस्कृत के उन राम काव्यों तथा नाटकों एवं पुराणों के सोदाहरण प्रसंग तथा भावभूमि का उल्लेख किया जा चुका है जिनसे किसी न किसी रूप में सहजराम जी ने ग्रन्थ रचना की सामग्री ग्रहण की है। हिन्दी के राम-काव्यों में सर्वाधिक प्रभाव उन्होंने 'रामचरित मानस' से ही ग्रहण किया है। जैसा कि पूर्ववर्ती पृष्ठों में संकेत किया जा चुका है कि कवि सहजराम जी ने महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस को `आदि पटरानी`; मानकर

---

१-तुलनीय- श्रीमद्भागवत् स्कन्ध ३ अध्याय १५,१६ तथा रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ३५ से ४३ के मध्य की चौपाइयां।

२- श्रीमद्भागवत स्कन्ध ७। अध्याय ६,७,८,६,१० तथा स्कन्ध ८ अध्याय ६,७,८,

अपनी 'वानी' को उसकी चारु, चतुर चेरी कहा है।[1] ~~तथा उनके द्वारा रचित 'रघुवंश दीपक' गोस्वामी तुलसीदास जी की 'भणित' से ही प्रेरित तथा उत्साहित है।~~ यहाँ ~~हम~~ कवि द्वारा की गई उस घोषणा को ~~पुनरावृत्ति करने में भी संकोच का अनुभव न करेंगे~~ ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देना हमें आवश्यक प्रतीत होता है, जिसमें वह स्पष्टतः यह स्वीकार करता है कि-

निज अनुगामी जानि के, स्वामी तुलसीदास।
सहजराम उरवास कर, कीन्हों ग्रन्थ प्रकाश ।।२

तथा

तुलसिदास कीन्हों प्रथम, कवित वज्रमणि वेह ।
पहिराये मैं सूतमति, बिनु श्रम सहित सनेह ।।३

रचना के संबंध में कवि की यह आत्म स्वीकृति 'रघुवंश दीपक' पर 'रामचरित मानस' के प्रभाव को बिना किसी तर्क तथा विवाद के ही स्वीकृति प्रदान करती है। प्रस्तुत विवेचन में हम इन प्रभावों को सविस्तार देखने का प्रयास करेंगे। 'रामचरित मानस' हिन्दी राम काव्य का सर्वप्रथम एक महत्वपूर्ण महाकाव्य है अस्तु उसका व्यापक प्रभाव उसके परवर्ती हिन्दी राम काव्यों पर पड़ना अत्यन्त स्वाभाविक है। कवि सहजरामजी ने 'रामचरित मानस' की वर्णन पद्धति, काव्य शैली, भाषा, छन्द-योजना, अलंकार-विधान तथा भक्ति-पद्धति, ज्ञान-वैराग्य-संबंधी विचारणाओं, ब्रह्म, जीव, माया एवं जीवन-मरण, मोक्ष संबंधी दार्शनिकता का पूर्ण अनुसरण किया है।

दूसरा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' में विभिन्न प्रसंगों में विभिन्न पात्रों के द्वारा और जहां यह सम्भव नहीं हो सका वहां स्वयं ही राम के परम ब्रह्मत्व तथा ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा का प्रयास किया है, उसी प्रकार सहजराम जी ने भी स्थान-स्थान पर राम के इसी स्वरूप को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। जहाँ कहीं राम के नर लीला के प्रसंगों में उन्हें साधारण मानव अथवा प्राकृत पुरुष के

---

१. भणिति तुम्हारि आदि पटरानी। चेरी चातुर चतुर मम बानी। बालका० दो० ६/४

२-रघुवंश दीपक -उत्तरकाण्ड दोहा १७२ (३)

३- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड दोहा-६

रूप में समझ लेने का भ्रम उपस्थित होने की स्थिति उत्पन्न हो गई है , तुलसीदास जी की भांति ही `रघुवंश दीपक ` के कवि ने भी या तो स्वयं या किसी पात्र के माध्यम से राम के परमब्रह्मत्व की ओर संकेत कर दिया है। इन पात्रों में भक्त, ऋषि, मुनि, राम के माता पिता, बन्धु अथवा राम के निकट संपर्क में रहने वाले उनके परिवारगण तो हैं ही साथ ही उनके विरोधी , यहां तक कि प्रतिनायक रावण जैसे पात्रों के मुख से भी उनके परम ब्रह्मत्व की प्रतिष्ठा कराते हुए वे दिखाई देते हैं। विधि, शिव,विष्णु जैसी महान शक्तियां तथा अन्य देवतागण भी इसी प्रकार उनके इस स्वरूप की वन्दन करते हैं। राम को निर्गुण ,निर्विकार, शुद्ध परिपूर्ण सच्चिदानन्द ब्रह्म के रूप में तथा विधि, हरि, शम्भु के भी प्रेरक तथा नियंता के रूप में जिसप्रकार तुलसीदास जी ने `रामचरित मानस ` अथवा विनयपत्रिकादि रचनाओं में स्वीकार किया है कवि श्री सहजराम जी ने भी राम को पूर्णत: वैसा ही स्वीकार किया है।

राम के सगुण ब्रह्मत्व से सबंधित विचार जो महाकवि तुलसीदास जी के थे वही सहजराम जी ने भी स्वीकार किये हैं । इसी प्रकार ब्रह्म के सगुण और निर्गुण रूप को भी दोनो में एक सा ही दिखाया गया है। १ भक्ति पद्धति में भी दोनो में बहुत बड़ा साम्य है। तुलसीदास जी की भांति ही सहजराम जी भी दास्य भाव की भक्ति के ही समर्थक थे तथा गोस्वामी जी की भांति ही वे मर्यादावादी भक्त कवि थे किन्तु भक्ति सबंधी उनकी विचारणाओं में जो स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है वह है उनका रसिक भावना की भक्ति पद्धति की ओर झुकाव । इस आधार पर उन्हें माधुर्य भाव का उपासक कहा जा सकता है। विष्णु के स्वरूप विषयक विचार में सहजराम जी गोस्वामी तुलसीदास जी के पूर्णत: अनुयायी प्रतीत होते हैं । जिस प्रकार `रामचरित मानस ` में विष्णु को परम ब्रह्म,परमात्मा से अभिन्न माना गया है,उसी प्रकार `रघुवंश दीपक ` में भी विष्णु के इसी रूप को स्वीकार किया गया है। मानस कार ने उन्हें सर्वत्र समान रूप से व्याप्त, घट घट वासी , अविनासी ,

---

१- गोस्वामी तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस में -
एक दास गत देखिये एकू । पावक सम युग ब्रह्म विवेकू ।

सहजराम जी कृत- रघुवंश दीपक अरण्यकाण्ड में -दोहा ४५ के वाद की चौपाई । ब्रह्म दारु गत अनल अकर्ता ।तुम रघुनाथ प्रकट हुय कर्ता ।

परमानन्द, इन्दिरारमण, निर्गुण, अनन्त, अनामय, अनघ, अनाम, निरंजन सर्वगत, सर्वउरालय कहकर परात्पर ब्रह्म से एक रूपता स्थापित की है।`रघुवंश दीपक के रचयिता ने भी उन्हें इसी प्रकार इंदिरानाथ, पाथोजनाभम् क्षितीश, निरामय, निराकर, कैवल्यदाता, मत्स्यादि रूप धारी रमापति, जगदाधार, अकथ, अनादि, सच्चिदानन्द, अविनाशी कहा है। किन्तु जिस प्रकार `रामचरित मानस` में महाकवि तुलसीदास जी ने राम को विष्णु का अवतार मानकर भी उन्हें विष्णु से अलग रखा है उसी प्रकार `रघुवंश दीपक` में भी राम को विष्णु का अवतार घोषित कर उन्हें ही नानावतारों के ग्रहण करने वाले मायापति कहा गया है। उन्हीं की माया अनेकानेक ब्रह्माण्डों की रचना करती है। राम को ऐसे विष्णु से भी अधिक शक्तिमान तथा महान् मानकर उनके स्वरूप को उनसे (विष्णु) भिन्न रखा गया है। सहजरामजी के राम संसार के सृजन, पालन तथा संहार की महत् शक्तियों ब्रह्मा, विष्णु त. महेश के भी प्रेरक तथा स्वामी हैं।[१]

भाषा तथा शैली में भी सहजराम जी ने अपने प्रेरक महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी का ही अनुगमन किया है। रामचरित मानस की ही भांति `रघुवंश दीपक` की रचना सहजराम जी ने अवधी में की तथा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा गृहीत दोहा, चौपाई एवं छन्द पद्धति में ही सम्पूर्ण काव्य का सृजन कर अवधी के शब्द सामर्थ्य तथा अभिव्यंजना की शक्ति का ऐसा सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया जो राम काव्य धारा में निश्चय ही एक अत्यन्त समर्थ शिल्प पद्धति के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

`रघुवंश दीपक` का सम्पूर्ण आद्यन्त कथानक यद्यपि `रामचरित मानस` के ढंग का नहीं है किन्तु सहजराम जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा गृहीत कतिपय भाव पूर्ण मार्मिक प्रसंगों को अवश्य स्वीकार कर लिया है। इन प्रसंगों में मुख्यत: जनक वाटिका में राम सीता की प्रथम भेंट, राम वन गमन के बाद भरत द्वारा कौशल्या के सम्मुख अपने हृदय की निष्कपटता प्रकट करने के लिये उनके द्वारा किये गये अनेक शपथ प्रसंग, वन पथ पर राम, लक्ष्मण तथा सीता

---

१- दृष्टव्य- रघुवंश दीपक - अरण्यकाण्ड दोहा ४३ के बाद का छन्द।

के सौन्दर्य से मोहित ग्राम वासियों के उद्गार, चित्रकूट में राम-भरत मिलन, मुनियों के आश्रमों पर श्रीराम [redacted] का जाना तथा उनके द्वारा व्यक्त किए गये भक्ति सबंधी उद्गार, सुग्रीव मिलन तथा वालि वध का प्रसंग, राम का प्रवर्षण गिरि पर वास तथा प्रकृति चित्रण के माध्यम से सीता के विरह से उत्पन्न राम के तज्जनित भावों का चित्रण, विभीषण मिलन प्रसंग तथा हनूमान द्वारा लंकादहन एवं विभीषण का श्री राम की शरण में उपस्थित होना, सीता की वियोग दशा का वर्णन, लंका से लौटकर भरत से मिलने तथा राम राज्याभिषेक ऐसे प्रसंग हैं जिनकी मार्मिकता तथा मानवोचित भावों के प्रदर्शन में कवि तुलसीदास जी के 'रामचरित मानस' से ही प्रभावित है। इसके अतिरिक्त कतिपय प्रासंगिक कथायें जिनका उल्लेख मात्र ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने करके काम चलाया है सहजराम जी ने उन कथाओं का सविस्तार वर्णन किया है। यहां उन कथाओं का उल्लेख अप्रासंगिक होगा क्योंकि इनपर विस्तार सहित विचार हम कवि के वस्तु सगंठन का परीक्षण करते समय करेंगे ही। अस्तु केवल इतना कहकर ही संकेत करना अधिक उपयुक्त समझेंगे कि यदि ऐसी प्रासंगिक कथाओं को विस्तार से न भी कहा जाता तो भी काम चल सकता था किन्तु सभंवत: कवि ने इन कथाओं के संयोजन में इसलिए विशेष रुचि प्रदर्शित की है कि इनके द्वारा उसके ग्रन्थ रचना के बहुमुखी उद्देश्य की पूर्ति होती थी तथा वह इनके सबंध में अपनी जानकारी भी प्रकट करना चाहता था।

रामचरित मानस के जो प्रसंग 'रघुवंश दीपक' में ग्रहण किये गये हैं उनके दो रूप मिलते हैं। प्रथम ऐसे हैं जिनको एकाध शव्द के अन्तर से ज्यों का त्यों ले लिया गया है। द्वितीय वे हैं जिनमें भाव में साम्य है किन्तु अभिव्यंजना पद्धति या उसके उपकरणों में भिन्नता उत्पन्न कर ग्रहण किया गया है। उपर्युक्त प्रसंगों के कतिपय उदाहरणों से कथन की पुष्टि करना अप्रासंगिक न होगा -

(१) रामचरित मानस :

(क) कश्यप अदिति महा तप कीन्हा। तिन्ह कहं मैं पूरब वर दीन्हा।
ते दशरथ कौशल्या रूपा । कौशलपुरी प्रकट नर भूपा ।।१

---

१- तुलनीय- रामचरित मानस बालकाण्ड दोहा १८६ के बाद की चौपाइयां

(ख) रघुवंश दीपक

कश्यप अदिति महा तप कीन्हा। मम सुत होहु मांगि वर लीन्हा।।
ते दशरथ कौशल्या नामा । मैं तेहि सुवन कहाउवरामा।। १

उपर्युक्त चौपाइयों में केवल एकाध शब्दों का हेरफेर ही दिखाई देता है अन्यथा दोनों में पूर्ण साम्य है। इसी प्रकार पुत्रेष्टि यज्ञ के लिये राजा दशरथ का महर्षि वशिष्ठ के समीप जाकर उनकी आज्ञा से यज्ञ प्रारम्भ करने का प्रसंग भी एक ही प्रकार का है। इस अवसर पर भी केवल एकाध शब्दों के परिवर्तन से ही सहजराम जी ने 'रामचरित मानस' की निम्नांकित चौपाइयां ग्रहण कर ली हैं -

१- (ग )रामचरितमानस:

सृंगी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा । पुत्र काम शुभ जग्य करावा।।२

(घ) रघुवंश दीपक :

सृंगी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलाये । पुत्र इष्ट पुनि यज्ञ कराये ।। ३

राम लक्ष्मण का जनक की वाटिका में पुष्प चयन के लिये जाना तथा सीता का सखियों सहित गिरिजा पूजन के लिये उसी समय उसी वाटिका में प्रवेश के समय के प्रसंग में भी एक रूपता है। एकाध शब्द हटाकर रामचरित मानस की निम्नांकित चौपाइयां वैसी ही रघुवंश दीपक में प्रस्तुत की गई है-

(१) (ङ) रामचरित मानस:

तेहि अवसर सीता तहं आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ।।
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी ।।४

(च) रघुवंश दीपक :

तेहि अवसर तहं जनक कुमारी। कीन्ह प्रवेश रुचिर फुलवारी।।
संग सखी सब सुभग सयानी । गावत गीत मधुर मृदुबानी ।।५

---

१- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड दोहा ८६ के बाद की चौपाइयां ।
२- मानस बालकाण्ड- दोहा १८८ के बाद की चौपाई ।
३- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ११५ के बाद की चौपाई ।
४- दृष्टव्य,रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा २२७ केबाद की चौपाइयां ।
५- " रघवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २३५ के बाद की चौपाइयां ।

इसी प्रकार जनक वाटिका के वर्णन में भी पूर्णत: साम्य है -

१-(घ) रामचरित मानस :

भूप बाग वर देखेहु जाईं । जहं बसन्त ऋतु रही लुभाईं ।।१

(ज)रघुवंश दीपक :

निन्दत जनु नन्दन वन शोभा। जहं बसन्त रह संतत लोभा।।२

(झ)रामचरित मानस:

कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।।
मानहुं मदन द दुंदुभि दीन्ही। मनसा विश्व विजय कहं कीन्ही।।
असकहि फिर चितये तेहि ओरा।सियमुख शशि भये नयन चकोरा।।३

(ञ) रघुवंश दीपक:

भूषण वसन विभूषित वामा। मानहुं मदन सैन अभिरामा ।।
कटि किंकिन पग नूपुर चारु ।मनहु निशान बजावत मारु ।।
असकहि राम अकाम सनेही । सखिन मध्य देखी वैदेही ।।४

भरत के द्वारा किए गए पश्चात्ताप से उत्पन्न उनके मानसिक स्थिति के चित्रण में भी ऐसी ही समानता दोनों रचनाओं में मिलती है -

१-(ट) रामचरित मानस :

जो करनी समुझै प्रभु मोरी ।नहिं निस्तार कल्प शत कोरी।।५

(ठ)रघुवंश दीपक :

जो प्रभु चूक विचारिहिं मोरी। भवनिधि तरौं न वर्ष करोरी ।।६

(ड) रामचरित मानस:

मोहि समान को पाप निवासू। जेहि लगि सीय राम बनवासू ।।७

(ढ) रघुवंश दीपक :

मोहि सम को अघ अवगुण रासी। जेहि लगि राम भये वनवासी।।८

---

१-दृष्टव्य-रामचरित मानस बालकाण्ड दोहा २२६ केबाद की चौपाइयां ।
२- " रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २३४ केबाद की चौपाइयां ।
३- रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा २२६ केबाद की चौपाइयां ।
४- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २३५ के बाद की चौपाइयां ।
५- रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा १ से ऊपर की चौपाई ।
६- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा २४१ के बाद की चौपाई ।
७- " मानस अयोध्याकाण्ड दोहा १७८ के बाद की चौपाई ।
८- रघुवंश दीपक उत्तरकाण्ड दोहा १ से पर्व की चौपाई ।

१-(ण) रामचरित मानस:

मैं जानउँ निज नाथ सुभाउ। अपराधिहु पर कोह न काउ।।१

(त) रघुवंश दीपक :

अपराधिहुं पर करैं न कोहू । संतन करहिं प्रणात पर छोहू।।२

उपर्युक्त उदाहरणों की ही भाँति अन्य बहुत से उदाहरण इस संदर्भ में प्रस्तुत किये जा सकते हैं किन्तु अनावश्यक विस्तार के भय से उन्हें सुधी पाठकों के लिये छोड़कर कतिपय ऐसे प्रसंगों का लक्ष्य करना उचित होगा जिनमें भाव तो एक ही है किन्तु उनके प्रस्तुतिकरण में कवि ने उपकरण तथा अभिव्यंजना पद्धति में भेद उत्पन्न कर उन्हें ग्रहण किया है। इन प्रसंगों में भार पीड़िता पृथ्वी सहित ब्रह्मादि देवताओं द्वारा भगवान विष्णु की स्तुति, राम के जन्म लेते ही माता कौशल्या द्वारा उन्हें चतुर्भुज रूप से देखकर उनकी स्तुति, राम जन्म वर्णन, अहिल्या द्वारा राम की स्तुति, सीता कृत जनक वाटिका में पार्वती स्तुति, राम विवाह वर्णन, चित्रकूट पर राम-भरत भेंट तथा वार्ता, सीताहरण पर श्रीराम द्वारा किया गया विलाप, जटायु मरण प्रसंग, रावण वध पर देवताओं द्वारा हर्ष व्यक्त करना तथा श्रीराम की स्तुति, रावण वध के अवसर पर ही ब्रह्मा जी द्वारा श्रीराम की स्तुति, वनवास की अवधि समाप्त होने पर भरत का श्रीराम के प्रति चिन्तित होना तथा हनुमान का विप्र वेश में उनके पास पहुंचना, राम राज्याभिषेक के अवसर पर वेदों द्वारा श्रीराम की स्तुति तथा शंकर जी द्वारा की गई श्रीराम की वन्दना एवं राम राज्य वर्णन ऐसे प्रसंग हैं जिनमें कवि ने भाव तो वही रखे हैं किन्तु अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति में परिवर्तन कर दिया है। कहीं छन्दों का अन्तर है तो कहीं अलंकारादि के द्वारा अति विस्तार सहित इन प्रसंगों का वर्णन है। ३

पूर्ववर्ती पृष्ठों में इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है कि रघुवंश दीपक की रचना में रामचरित मानस से ~~कि~~ प्रधानतया प्रेरणा ग्रहण की गई है।

---

१- मानस अयोध्या काण्ड दोहा २५६ केबाद की चौपाई ।

२- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा १४६ के बाद की चौपाई ।

३- इन सभी प्रसंगों में रामचरित मानस तथा रघुवंश को देखा जा सकता है ।

सभी प्रसंगों . . . क्रमशः

अस्तु कवि सहजराम पर गोस्वामी तुलसी दास जी का व्यापक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था फिर भी कथानक में उसने जो महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है वह इस बात का प्रमाण है कि कवि अपने अस्तित्व के प्रति सतत् सजग रहा है तथा उसकी काव्य चेतना ने मौलिकता की रक्षा की है। सहजराम जी ने कतिपय ऐसे कथा प्रसंगों की भी अवतारणा की है जिसमें वह गोस्वामी तुलसी दास जी द्वारा ग्रहण किये गये उन्हीं प्रसंगों में भिन्नता दिखा सका है। यह परिवर्तन यद्यपि सर्वथा नवीन नहीं है क्योंकि उन पर अन्य राम काव्यों का प्रभाव दिखाई देता है फिर भी वस्तु संगठन में तथा कथा के संयोजन में उसकी यह प्रवृत्ति उसकी उस घोषणा का ही समर्थन करती है जिसमें उसने अपने आपको मधुमक्खी की भांति रस-संचयी प्रवृत्ति तथा सार ग्राहिकता का परिचय दिया है। ऐसे प्रसंगों पर बाल्मीकि रामायण, तथा रघुवंश का प्रभाव पिछले पृष्ठों में दिखाया जा चुका है अस्तु उनका उल्लेख यहां पर करना पुनरावृत्ति मात्र ही होगी।

रघुवंश दीपक पर रामचरित मानस के कथानक तथा भावपूर्ण स्थलों के चित्रण एवं वस्तु संगठन की दृष्टि से ग्रहण किये गये प्रभाव को देख लेने के पश्चात् कतिपय उन स्त्रोतों की ओर लक्ष्य करना अधिक उपयुक्त होगा जिनसे सहजरामजी ने प्रकृति चित्रण संबंधी अपनी मान्यताओं को स्थापित किया है। जिस प्रकार महाकवि तुलसी दास जी ने शुद्ध उद्दीपन, उपदेश एवं तत्व दर्शन, प्रकृति में परमतत्व का आभास, अलंकार योजना की दृष्टि से सामान्यानुरंजन की भावना से तथा उत्कृष्ट आत्मोल्लास को प्रकट करने में प्रकृति चित्रण किया है + १सहजराम जी ने भी उसी पद्धति का अनुसरण किया है।

निष्कर्ष :

१- रामचरित मानस तथा रघुवंश दीपक की रचना पद्धति, भाषा

---

...... के उदाहरण प्रस्तुत करना अनावश्यक विस्तार ही होगा।

१-डा० राजकुमार पाण्डेय- रामचरित मानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन- शीर्षक - तुलसी की प्रकृति संबंधी सम्वेदना "।

शैली तथा भक्ति, ज्ञान वैराग्य, ब्रह्म माया, जीवादि विषयक मान्यतायें प्राय: एक ही हैं किन्तु कथानक संबंधी अवधारणाओं में अवश्य भेद ~~हुवे गया है~~ दृष्टिगोचर होता है। इसका कारण भी पूर्व-विवेचित संस्कृत के काव्य ग्रन्थों से प्रभाव ग्रहण को स्वीकार किया जा सकता है।

२- रघुवंश दीपक रामचरित मानस की छाया न होकर एक स्वतंत्र मौलिक रचना है जिस पर अन्य राम काव्यों की ही भाँति रामचरित मानस का भी प्रभाव है।

३- रघुवंश दीपक के कवि की काव्य चेतना गोस्वामी तुलसीदास जी की ही भाँति भाव संचयन तथा सार ग्राहकता की ओर निरन्तर उन्मुख रही है जिससे उसका स्वतंत्र अस्तित्व सुरक्षित रह सका।

४- गोस्वामी तुलसीदास जी की ही भाँति उसकी काव्य प्रतिभा प्राप्त सामग्री के सुव्यवस्थित विनियोजन में ही सफल हुई है।

## १०- 'रामचन्द्रिका' तथा 'रघुवंश दीपक'

'रघुवंश दीपक' पर आचार्य केशवदास जी की रामचन्द्रिका का प्रभाव विशेषत: उसके कथानक, वस्तु परिगणन तथा संवाद रचना में दिखाई देता है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में 'रघुवंश' के कथानक का 'रघुवंश दीपक' पर प्रभाव लक्ष्य करते समय इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है कि राम राज्याभिषेक के पश्चात् सीता के परित्याग तथा लव-कुश के जन्म संबंधी प्रसंग की रचना करते समय सहजराम जी के सम्मुख मुख्यत: दो पूर्ववर्ती रचनायें रही हैं एक तो वाल्मीकि रामायण तथा दूसरी महाकवि कालिदास कृत 'रघुवंश'। इन दो संस्कृत के महाकाव्यों के अतिरिक्त कवि ने इस प्रसंग पर रामचन्द्रिका की उस नवीन उद्भावना को भी ग्रहण किया है जिसमें आचार्य केशवदास जी ने श्रीराम द्वारा अश्वमेध यज्ञ की परिसमाप्ति के साथ राम-सीता का पुनर्मिलन दिखा कर पुन: अयोध्या पर उनके राज्य करने की कथा ~~कही~~ वर्णित की है। इस नवीनता के कारण ही आचार्य केशवदास जी ने वाल्मीकि रामायण तथा रघुवंश की रामकथा के दुखान्त पर्यवसान को सुखान्त के रूप में प्रस्तुत किया है। हमारे कवि श्री सहजराम जी ने भी आचार्य केशवदास जी की ही भाँति रघुवंश दीपक की सम्पूर्ण कथा का पर्यवसान सुखान्त रूप में ही किया है। इस प्रसंग में सहजराम जी ने रामचन्द्रिका की इस कथा को पुन:

एक नया मोड़ प्रदान किया है १ और उनके श्रीराम, सीता सहित विमानारूढ़ होकर परमधाम को प्रस्थान करते हैं। २ जबकि वाल्मीकि रामायण तथा ' रघुवंश ' दोनों में सीता को पृथ्वी में विलीन हो जाना चित्रित किया गया है।

दूसरा प्रभाव जो रामचन्द्रिका का रघुवंश दीपक पर दिखाई देता है वह है वस्तु परिगणना का। जिसप्रकार आचार्य केशवदास जी ने विभिन्न अवसरों पर वस्तुओं की गणना करते समय एक लम्बी सूची प्रस्तुत कर दी है उसी प्रकार सहजराम जी ने भी विभिन्न अवसरों पर वस्तुओं की गणना में बड़ा ध्यान दिया है।

तृतीय प्रभाव जो रघुवंश दीपक पर 'रामचन्द्रिका' का दिखाई देता है वह है विभिन्न प्रसंगों में कवि श्री सहजराम द्वारा की गई सम्वाद-योजना। इन संवादों में नाटक के से संवादों का सौष्ठव तथा चातुर्य देखने का मिलता है। मुख्य प्रसंग जो इन दोनों ही रचनाओं में एक से दिखाई देते हैं वे हैं, परशुराम प्रसंग १ तथा अंगद - रावण संवाद।२ ऐसी संभावना की जा सकती है कि आचार्य केशवदास जी ने अपने पूर्ववर्ती संस्कृत नाटकों से यह प्रभाव ग्रहण किया हो और सहजराम जी नेआचार्य केशव से। पूर्ववर्ती विवेचन के अन्तर्गत हम लक्ष्य कर चुके हैं कि 'हनुमन्नाटक ' और 'रघुवंश दीपक ' के परस्पर साम्य रखने वाले कुछ ऐसे भी प्रसंग हैं जो 'रामचन्द्रिका ' में ही नहीं अन्य किसी भी कृति में नहीं मिलते। अत: उक्त सम्भावना 'रामचन्द्रिका' की अपेक्षाकृत 'हनुमन्नाटक' के प्रभाव की ओर भी उन्मुख की जा सकती है। किन्तु परशुराम के साथ भरत-शत्रुघ्न के सम्वाद हनुमन्नाटक में नहीं मिलते और यहाँ रामचन्द्रिका तथा रघुवंश दीपक के सम्वाद परस्पर निकट दिखाई पड़ते हैं। ३ अत: निष्कर्ष रूप में इन दोनों पूर्वकालीन रचनाओं के सम्मिलित प्रभाव को स्वीकार करना ही अधिक समीचीन प्रतीत होता

---

१-आचार्यकेशवदास-रामचन्द्रिका उन्तालीसवां प्रकाश छन्द-१४ तथा १६
सुन्दरी सत ले सहोदर वाजि ले सुखपाय।साथ ले मुनिबालकहि दीह दुख बसाय।
राम धाम चले भले यज्ञलोक लोक बढ़ाय।भाँति भाँति सुदेशकेशव दुदुभि बजाय।।१४
यज्ञ थली रघुनन्दन आये। धामन धामन होत बधाये।
धी मिथिलेश सुता बड़भागी। स्यों सुत सासुन के पग लागी।।१६

२- रघुवंश दीपक - उत्तरकाण्ड दोहा १४५
सिय समेत रघुवंश मणि, सोहत विमल विमान।
विनय करत ब्रह्मादि सुर, जय जय कृपानिधान।।

३- दृष्टव्य- रामचन्द्रिका- सातवीं प्रकाश-में वर्णित इसप्रसंग को रघुवंश दीपक के बालकाण्ड दोहा ३२६ के बाद दोहा ३४१ तक का प्रसंग।

निष्कर्ष :

पूर्ववर्ती पृष्ठों के विवेचन के आधार पर इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुंचा जा सकता है कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण में `रघुवंश दीपक` का कवि अध्यात्म रामायण तथा प्रकारान्तर से उससे प्रभावित गोस्वामी तुलसीदास जी की कृति `रामचरित मानस ` से प्रभावित है। ऐसे प्रसंगों में भी वह तुलसीदास जी की अपेक्षाकृत ` अध्यात्म रामायण ` के रचिता से अधिक निकट दिखाई देता है जिसे हम प्रसंगानुसार निर्दिष्ट भी कर चुके हैं ।

दूसरा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि बाल्मीकि रामायण और `अध्यात्म रामायण` से गृहीत अंशों की यदि तुलना की जाये तो ऐसा स्पष्टत: ज्ञात होता है कि सहजराम जी ने मानवोचित घटना प्रसंगों को तो प्राय: बाल्मीकि रामायण से ग्रहण किया है और अनेक ऐसे प्रसंग और चरित्र चित्रण विषयक दृष्टिकोण तुलसीदास जी से भिन्न भी है किन्तु राम के परम ब्रह्मत्व के समर्थक तथा उनकी भक्ति से संबंधित प्रसंग तथा उक्तियां मुख्यत: `अध्यात्म रामायण ` की ही देन प्रतीत होती है ।

अत: समग्रतया मूल्यांकन के आधार पर यहकहा जा सकता है कि ` रघुवंश दीपक ` की रचना में कवि श्री सहजराम जी ने आधिकारिक कथा का चयन तो रामचरित मानस से किया था किन्तु प्रासंगिक कथाओं के लिये उन्होंने लिये उन्होंने बाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, रघुवंश, हनुमन्नाटक, श्रीमद्भागवत तथा रामचन्द्रिकादि से सहायता ली है।

:रघुवंश दीपक की रचना का उद्देश्य:

किसी महत् उद्देश्य से प्रेरित होकर जब कवि की निजी काव्य चेतना जीवनगत आदर्शों तथा मूल्यों को उद्घाटित करने का प्रयास करती हैतो महाकाव्य का सृजन होता है। विस्तृत काव्य फलक होने केकारण कवि को इस माध्यम से लोक मानस को प्रतिबिम्बित करने का विपुल अवकाश मिलता है जिसमें वह सामाजिक मूल्यों की व्याख्या तथा सांस्कृतिक एवम् जातीय चेतना की अभिव्यक्ति स्वाभाविक रीति से कर सकता है। साथ ही वैयक्तिक जीवन की चरम उपलब्धि

तथा सामूहिक जीवन की अन्तिम परिणति की साधनात्मक प्रक्रिया कोभी इस काव्य रूप के माध्यम से सहज में ही जन मानस के सम्मुख प्रस्तुत करने में वह सफल हो जाता है तथा आत्म तृप्ति का अनुभव करता है। 'रघुवंश दीपक' [illegible] की रचना में भी जिस महत् उद्देश्य की प्रेरणा को लक्ष्य किया जा सकता है उसका परिचय हम कवि द्वारा निर्देशित संकेतों के आधार पर ही प्राप्त करने का प्रयास करेंगे । 'रघुवंश दीपक' की रचना के उद्देश्य को हम निम्नांकित प्रकार से लक्ष्य कर सकते हैं -

१- राम का चरित्र गान तथा उसका प्रचार ।
२- राम को सर्वोपरि आराध्य देव के रूप में प्रतिष्ठित कर उनकी भक्ति को चरम साध्य के रूप में स्थापित करना।
३- आत्म कल्याण के लिये प्रायश्चित्त स्वरूप ग्रन्थ रचना तथा उसके माध्यम से लोक हित साधन ।
४- धार्मिक जगत की विषमता में समन्वित राम भक्ति की प्रतिष्ठा का प्रयास ।
५- युगीन चेतना की अभिव्यक्ति तथा युग सन्दर्भ में राम के महच्चरित्र का महत्व उद्घाटन ।

उपर्युक्त शीर्षकों में आने वाली सम्पूर्ण सामग्री को क्रमश: परख कर हम 'रघुवंश दीपक' की रचना के उद्देश्य से परिचित हो सकते हैं ।

---

१-   राम के पावन चरित्र गान के लिये 'रघुवंश दीपक' के रचयिता ने सम्पूर्ण ग्रन्थ में ऐसे मनोरम तथा भावपूर्ण मार्मिक प्रसंगों की उद्भावना की है जिनमें वह भाव विभोर होकर अपने अन्त:करण की समस्त श्रद्धा मानसिक एकाग्रता के साथ स्वयं को अपने आराध्य श्री राम के चरणों पर समर्पित करता हुआ दिखाई देता है। इस प्रवृत्ति में वह 'मानस' से अत्याधिक प्रभावित हुआ है जैसा कि उसकी निम्नलिखित उक्ति से स्पष्ट है -

निज अनुगामी जानि कै, स्वामी तुलसीदास ।
सहजराम उर वास कर, कीन्हो ग्रन्थ प्रकाश।।१

ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कवि विभिन्न देवों की वन्दना करते हुए सबसे यही प्रार्थना करता है कि वे उन्हें राम के यशोगान के लिये निर्मल तथा विशाल बुद्धि प्रदान करें। गुरु, संत, विप्र तथा वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती एवं सर्व सिद्धि प्रदान करने वाले गणेशादि २ सभी देवों से प्रार्थना कर उनसे आशीष ग्रहण करता हुआ कवि स्पष्ट घोषणा करता है कि -

पाइ प्रसाद नाइ पद माथा । करौं विमल रघुपति गुण गाथा।।३

तथा

वंदौं सबके पद कमल , अमल राम गुन ग्राम ।
वरणौं मति अनुसार मैं,करि गुरु चरण प्रणाम।।४

सहजराम जी ने प्राकृत जन गुण गान को असत् मानकर उसे विषयों में प्रवृत्त करने विष के समान त्याज्य माना है । ५ इसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं

---

१- रघुवंश दीपक - उत्तरकाण्ड दोहा १७२ (३)
२- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड प्रारम्भ के छन्द
३- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड दोहा ४ के बाद की तीसरी चौपाई
४- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १७(४)
५- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ३ तथा ४ के मध्य की चौपाइयां

जिस प्रकार श्वान ,शुष्क हड्डी को मुहं में दबा कर अपने ही रक्त से उसे गीली कर उसे हड्डी से प्राप्त होने वाला रक्त का स्वाद मान लेता है और उसे छोड़ता नहीं है उसी प्रकार विषायों में लिप्त रहने वाले प्राकृत जन गुणागान कर्ता कवि भी सत्यता से दूर होकर व्यर्थ में ही उलझे रहते हैं। सहजराम जी ने प्राकृत जन गुण गान को संसार में विधवा नारी के श्रृंगार के समान निरर्थक, अव्यवहारिक तथा आकर्षणहीन व्यर्थ का प्रलाप मात्र माना है। रघुवंश दीपक में कवि ने एतद्विषायक विचार इसप्रकार व्यक्त किये हैं-

यद्यपि असत प्राकृत कविताई । कहे सुने विषाइक मन लाई।।
स्वादु न स्वल्प सूख जिमि हाड़ा।गहे दशम शठ श्वान न छाड़ा।।
नर कीरति करतूति असारा। जिमि जग विधवा करै सिंगारा।।१

कवि की यह स्पष्ट घोषाणा है कि रामचरित के गान से रहित कोई भी कृति चाहे कितनी ही सुन्दर तथा गुणों से परिपूर्ण तथा उच्चकोटि की क्यों न हो वह वायस तीर्थ के समान है जहां हंस रूप प्रभु के भक्तजन कभी नहीं निवास करते । २ प्राकृत जन गुणागान की भर्त्सना महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी की थी। ३ ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे कवि ने भी उनसे ही प्रेरणा लेते हुये अपने युग के कतिपय राज्याश्रित कवियों द्वारा अपने आश्रयदाताओं के गुणागान की प्रवृत्ति पर गहरा कटाक्ष किया है। रीति काल में तो यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई थी कि अनेक राज्याश्रित कवि अपने आश्रय दाताओं के साथ ही उनकी प्रिय वेश्याओं तक के गुणों का गान अपनी कविता में करते थे। राय प्रवीन नामक वेश्या के लिये ही रची गई 'कवि प्रिया' ४ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

---

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ३ तथा ४ के मध्य की चौपाइयां

२-रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ४ -

रामचरित बिनु भणित भलि, वायस तीरथ जानि ।
वसहिं न हरिजन हंस तजि, यश मानस सुख खानि ।।

३- गो० तुलसीदास रामचरित मानस बालकाण्ड -

कीन्हें प्राकृत जन गुण गाना ।सिर धुनि गिरा लगति पछिताना।

४- आचार्य केशवदास रचित 'कवि-प्रिया' ।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सहजराम जी का प्राकृत जन गुणगान का दृष्टिकोण प्राय: रामचरित मानस कार गोस्वामी तुलसीदास जी से साम्य रखता है। केवल अन्तर इतना है कि तुलसीदास जी ने प्राकृत जनों के गुणगान को काव्य प्रतिभा - सरस्वती का दुरुपयोग माना है और सहजराम जी ने उसे विधवाओं के श्रृंगार की भाँति अवांछनीय ठहराकर है अपने कथन को प्रखर बना दिया है।

राम के यशोगान के साथ ही सहजराम जी ने उसके व्यापक प्रचार के लिये भी रघुवंश दीपक की रचना का उद्देश्य स्वीकार किया है। हमारे आलोच्य कवि का मत है कि राम के यशोगान से परिपूर्ण इस मधुकोष के स्वादु के सम्मुख अन्य सभी स्वादु फीकें तथा नीरस लगने लगते हैं। संसार के जितने अन्य रस हैं चाहे वे कितने ही मधुर, स्वादिष्ट अथवा अमृत के समान क्यों न हों किन्तु राम कथा के रसिक जन उनके स्वादु की कामना नहीं करते। १ राम के चरित्र के गान तथा राम कथा के अलौकिक स्वादु का वर्णन इसीलिए इतने सशक्त तथा ओजस्वी कथन के द्वारा करता है जिससे जन साधारण में उसकी महत्ता स्थापित हो सके और सभी उसे विश्वास तथा असीम अनुराग के साथ श्रवण मनन तथा गान कर सकें। जन साधारण में यह प्रतीति होती है कि कोई भी कार्य बिना लाभ के नहीं किया जा सकता। अस्तु सहजरामजी ने सामान्य मानव के इस मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर 'रघुवंश दीपक' की रचना में सर्वत्र यथावसर रामचरित गान से उपलब्ध होने वाले महत्वपूर्ण लाभ का उल्लेख कर दिया है। उसकी घोषणा है कि राम के यशोगान से पूर्ण उसकी रचना 'रघुवंश दीपक' के अध्ययन ,मनन, तथा श्रवण करने से मानव-मात्र को निर्वाण पद की प्राप्ति के साथ साथ जीवन मुक्ति और परमानन्द की प्राप्ति होती है। जो नर नारी प्रेमपूर्वक इसका गान करते हैं वे ऐहिक जीवन की सुख समृद्धि के साथ साथ परमपद के अधिकारी होते हैं। 'रघुवंश दीपक' में निर्देशित ऐसे कथन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं , यहां हम उनमें से कुछेक

---

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १३ के बाद की चौपाई -

' मधुर सुधादिक रस जग जेते । नहि रघुनाथ कथा सम तेते ।।

को ही लक्ष्य कर अपने कथन की पुष्टि करना चाहेंगे -

* करि दृढ़ नेम प्रेम उपजावें । गावहिं गुणाहिं सुनहिं सुख पावहिं ।।
जो सब ग्रन्थन को सुने, प्रेम भक्ति उर आय ।१
सो रघुवंश प्रदीप को, जाने सकल प्रभाव ।।

\- - - - - - - - - -

करि नेम प्रेम समेत प्रभुपद वन्दि के सुख मानहीं ।
अवधेश चरित पुनीत निशिदिन शारदादि बखान ही।।
जे कहत समुझत सुनत अति हित नारि नर सुख पावहीं ।
लहि अछत तन निर्वाण पद सो राम धाम सिधावहीं।।२

\- - - - - - - - - -

हरि भक्ति सुहाई दिवटि बनाई जो जन हृदय निकेत धरै ।
करि विमल प्रकाशा हृदय निवासा महा मोह तम तोय हरै।।३

वस्तुत: राम के चरित गान के प्रचार के लिये उपर्युक्त कथनों में जिस लाभ की घोषणा की गई है - जन साधारण के सम्मुख इससे बड़ा आकर्षण और हो ही क्या सकता था । वस्तुत: इस उद्देश्य को एक विचार-धारा का प्रचार ही कहा जायेगा।

२- रघुवंश दीपक की रचना में जो दूसरा उद्देश्यगत तथ्य सामने आता है वह है सहजराम जी के द्वारा राम को सर्वोपरि आराध्य के रूप में प्रतिष्ठित करने की चाह । जिस प्रकार तुलसीदास जी ने अपने रामचरित मानस में सभी प्रकार से * कथा प्रसंग से , प्रतीति और प्रमाण से, उपदेश और निर्देश से,जितनी प्रकार भी सम्भव था ४ राम के परम ब्रह्मत्व को सिद्ध कर उन्हें सर्वोपरि आराध्य देव के रूप में प्रतिष्ठित किया है उसी प्रकार हमारे कवि ने भी प्रत्येक सम्भावनाओं से राम को सर्वोपरि आराध्य देव के रूप प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। अगणित बार, अनेक ढंग से विविध अवसर निकालकर

---

१-रघुवंश दीपक बालकाण्ड का अन्तिम दोहा ३५६
२- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड अन्तिम छन्द दोहा ३०० से पूर्व
३- रघुवंश दीपक सुन्दरकाण्ड अन्तिम छन्द
४- डा० श्रीकृष्णलाल मानस दर्शन पृष्ठ १४८

नये प्रसंगों की अवतारणा कर वे पग पग पर राम का ईश्वरत्व प्रदर्शित कर उन्हें ही एकमेव आराध्य देव के रूप में सर्वोपरि मानते हैं। कवित्व का सहारा लेकर वे महाकवि तुलसी की ही भांति पुनरुक्ति का ध्यान छोड़कर राम के परम ब्रह्मत्व को दुहराते हुए दृष्टिगत होते हैं। उनकी दृष्टि में राम साधारण मानव नहीं स्वयं परम ब्रह्म परमेश्वर ही हैं जो भक्तों के सुख देने के लिये पृथ्वी पर नरवेश में अवतरित हुए हैं। १ भगवान शंकर के द्वारा इष्टदेव के रूप में स्वीकृत राम वही हैं जो पूर्ण काम, पुरातन पुरुष हैं और जिन्होंने दशरथ के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर अवतार लिया है।२ राम के परम ब्रह्मत्व पर शंका करने वालों को कवि ने महान् अभागा ,उलूक के समान तम के भयंकर कूप में पड़ा रहने वाला अज्ञानी माना है। उसका मत है कि राम को मनुज कहने वाली वाणी से सुकृत समूहों की हानि होती है और यदि वश चले तो ऐसी वाणी का उच्चारण करने वाली जिह्वा को सूजे से छेद देना ही हितकर है। ३ वस्तुत: ऐसी शंका करने वाली उमा को भी कवि ने भगवान शंकर के मुख से अधम जड़ कहकर धिक्कारा है। और राम नाम के जप को समंत भव ताप को भंजन करने वाला कहकर उसके प्रभाव को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। तात्पर्य यह कि जहां कहीं भी किसी ने राम के परम ब्रह्मत्व पर शंका व्यक्त की है अथवा ऐसा लगा कि राम के मानवीय कार्यों को देखकर उनके परम ब्रह्मत्व की ओर से पाठक का ध्यान हट रहा है उसी स्थान पर कवि ने प्रयत्नपूर्वक विभिन्न उक्तियों से उस शंका का निवारण कर अपने उद्देश्य की पूर्ति की है। सहजराम जी का यह प्रयत्न गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रयत्न की भांति है।

हिन्दी की सगुण राम काव्य धारा में मानस की रचना के ~~[illegible]~~ कुछ पूर्व से ही राम

---

१- सत्य सनातन देह जो न धरत हरि जगत मंह ।
कैसे होत सनेह विनु देखे हरि जनन के ।। } रघुवंश दीपक पृष्ठ १२दोहा२६

२- दशरथ सुवन राम वैदेही। जनक सुता सुर वन्दत जेही।
सो मम देव इष्ट सियरामा। पुरुष पुरातन पूरणकामा।। } रघुवंश दीपक पृष्ठ १४

३- राम मनुज बोलसि असि बानी ।सुकृत समूह होहिं हित हानी।
जो विराय सुनु सैल तनूजा । छेदिय जीह अकुंठित सूजा ।। } रघुवंश दीपक पृष्ठ १५

को ईश्वरत्व के पद पर प्रतिष्ठित कर उनको परमाराध्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। शुद्ध इतिवृत्तात्मक प्रबन्धात्मक राम काव्य हिन्दी में नहीं के बराबर है जबकि राम भक्ति परक, तथा उन्हें आराध्य के रूप में स्वीकार कर उनके चरित गान से पूर्ण महाकाव्यों की संख्या अधिक है। गोस्वामी तुलसीदास जी से लेकर आधुनिक युग के राम काव्य 'साकेत' तक यह प्रवृत्ति दिखाई देती है। सहजराम जी के समकालीन प्राय: सभी राम काव्यों में भी इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। चाहे वह वीर रस की प्रबन्ध रचना 'गोविन्द रामायण' (श्री गुरु गोविन्दसिंह कृत) हो या फिर रसिक भावना से प्रेरित 'अवध सागर' या 'अवध विलास' या अन्य काव्य ग्रन्थ सबमें राम को परमाराध्य के रूप में ही स्वीकार किया गया है। अत: परम्परा से प्राप्त तथा समकालीन रचनाओं के सन्दर्भ में 'रघुवंश दीपक' की रचना में भी यही प्रवृत्ति काम कर रही हो और रचना के उद्देश्य में यह भी एक प्रधान प्रेरणा रही हो तो आश्चर्य नहीं।

३- 'रघुवंश दीपक' की रचना सहजराम जी की आत्म ग्लानि से उत्पन्न प्रायश्चित स्वरूप राम के गुण गान तथा पातकों से पूर्ण मुक्त होने एवम् प्रभु श्री राम के चरणों का सान्निध्य प्राप्त करने के उद्देश्य से भी की गई है। कवि की यह घोषणा हमारे कथन की पुष्टि करती है -

बालापन ते पाप कलापा। किये हिये उपजी परितापा।।
प्रायश्चित रघुपति गुणगाथा। करौं नाइ हरिगुरु पद माथा।।
(रघुवंश दीपक बालकाण्ड)

कवि की यह आत्म स्वीकृति रचना के उद्देश्य में बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। प्राय: सभी भक्त कवियों ने चाहे वह कबीर जैसा निर्गुण वादी हो अथवा महात्मा सूरदास या तुलसीदास जैसा सगुण ब्रह्म का उपासक अपने आराध्य के सम्मुख अपने आपको महान पातकी, असहाय, दुष्कर्मों में प्रवृत्त नीच मानव के रूप में समर्पित करता हुआ दिखाई देता है। समर्पण की यही भावना हमारे कवि में भी उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होती है। अनन्य भाव से सर्वतोभावेम राम को ही अपना आराध्य स्वीकार कर लेने पर उसके सम्मुख

अपने दुर्गुणों को छिपाने का उपक्रम न होकर उसे स्पष्ट रूप से उसके सम्मुख रखने का प्रयास ही ऐसे कथन के लिये प्रेरित करता है। इसी सन्दर्भ में कवि पुन: यह कहता है -

तन मन वचन न परहित कीन्हो ।कबहुं पुण्य पथ पावन दीन्हो।।
सेमहुं ~~कब~~ कबहुं न संत समानहिं। कबन उतर देहौं जमराजहिं ।।
सीताराम मातु पितु मोरे । मैं शिशु विनय करौं कर जोरे ।।
निज अघ समुझि शोच अति मेरे ।आयहुं शरण कृपानिधि तोरे ।।
अधम उधारन विरद तुम्हारा। मैं अति अधम विदित ससांरा ।।
पतित पुनीत किये बहुतेरे । विरद सम्हारि हरौ दुख मेरे ।।

अस्तु कवि के अनुसार प्रायश्चित स्वरूप किया गया राम का गुण गान भी रघुवंश दीपक की रचना का एक अन्य उद्देश्य कहा जा सकता है । आत्म कल्याण के लिये कवि ने जिस कथा के गान का निश्चय किया वह समस्त दोषों, दुखों को हरण करने वाली तथा जग का मंगल करने वाली राम कथा के रूप में हिन्दी साहित्य के सामने उपस्थित हुई । वस्तुत: महा कवि के कर्तव्य के निर्वाह के लिये व्यष्टि का समष्टि के साथ विलय अत्यन्त स्पृहणीय कहा जा सकता है और इसके लिये कवि साधुवाद का अधिकारी है, किन्तु जहां तक उपर्युक्त आत्म स्वीकृति के निष्पक्ष मूल्यांकन का विषय है, कवि की निजी मान्यता ही कहा जायेगा ।

४- रघुवंश दीपक की रचना में निहित एक उद्देश्य यह भी दिखाई देता है कि कवि ने अपने काल तक चली आती हुई धार्मिक जगत की विषमताओं तथा उस समय तक प्रचलित ईश्वरसंबंधी निर्गुण ,सगुण मतवादों एवं उपासना के विविध रूपों में रामभक्ति को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से ही अपने ग्रन्थ में राम के स्वरूप को निर्धारित किया है। ईश्वर को निर्गुण निर्विशेष,अरूप अलख निरंजन आदि रूपों में कबीर जैसे संतो ने कहकर उसे सर्व साधारण जनता की पहुंच से दूर कर दिया था जिसे महाकवि तुलसी के आविर्भाव ने पुन: जन साधारण केसम्मुख लाकर खड़ा कर दिया। राम परात्पर ब्रह्म होते हुए

भी दशरथ सुवन कौशलपति के रूप में ग्रहण किये गये और नर लीला करते हुए वे मानवीय संवेदनाओं से युक्त, सुख, दुख, राग द्वेष आदि सभी में साधारण मानव के समान ही व्यवहार करते हुए दिखाई गये हैं। रघुवंश दीपक में निर्गुण तथा सगुण का समन्वय स्थापित करते हुये कवि ने उन्हीं विचारों को दुहराया है जिन्हें महा कवि तुलसीदास जी ने मानस अथवा अन्य रचनाओं में किया है। उसका स्पष्ट मत है कि निर्गुण निर्विशेष ब्रह्म सगुणरूप में प्रकट होने से पूर्व प्रत्येक वस्तु में उसी प्रकार निवास करता है जिस प्रकार काष्ठ में अग्नि छिपी हुई रहती है। १ अर्थात् निर्गुण और सगुण में कोई भेद नहीं केवल प्रकट और अप्रकट होने वाले रूप का ही भेद है। इस समन्वायत्म प्रवृति के पीछे भक्ति आन्दोलन की सशक्त पृष्ठभूमि के दर्शन भी होते हैं जिसने युगीन सांस्कृतिक तथा धार्मिक चेतना को बहुत दूर तक प्रभावित किया है। इसी प्रकार ज्ञान तथा भक्ति के तात्विक भेद को भी उन्होंने अपनी समन्वयात्मक प्रतिभा के बल पर अत्यन्त सरल एवं सर्व ग्राह्य रूप प्रदान करने का प्रयास किया जो ज्ञानी योगी तथा गृहस्थ एवं प्रत्येक कोटि के मानव के लिये सुलभ हो सका। हिन्दी साहित्य के भक्ति काल के इतिहास में कबीर, सूर, तुलसी ऐसी प्रतिभाये हैं जिन्होने धार्मिक चिन्ता धारा को नवीन दिशा प्रदान की। कबीर निर्गुण वादी होते हुए भी भक्त थे, सूरदास जी पूर्णत: भक्त थे इसलिये वे भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे किन्तु तुलसीदास जी ने इन दोनो को उत्तम साधन मानकर उनमें समन्वय स्थापित किया यद्यपि भक्ति के लिये उनका आग्रह विशेष रूप से देखने को मिलता है। हमारा कवि भी तुलसीदास जी की भांति इसी समन्वयात्मक प्रवृत्ति का दिखाई पड़ता है। उसने ज्ञान से समन्वित भक्ति को विशेष महत्व दिया है जिसमें उसकी प्रतिभा का उच्चतम् रूप दिखाई देता है। इसी आधार पर उसने रसिक भावना की साधना को भी स्वीकृति प्रदान की है, जिसमें ज्ञान से समन्वित भक्ति का उज्ज्वलतम् रूप मिलता है जो लोक हित में भी सहायक सिद्ध हुई।

---

१- ब्रह्म दास गत अनल अकर्ता। तुम रघुनाथ प्रकट तुम कर्ता।
( रघुवंश दीपक अरण्यकाण्ड पृष्ठ ३७० )

५- रघुवंश दीपक की रचना में जो अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य दिखाई देता है वह है युगीन सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित होकर एक लोकप्रिय नायक के रूप में राम को महाकाव्य का प्रतिपाद्य विषय बनाना। महाकाव्य नीति की सांस्कृतिक चेतना को द्योतक होते हैं अत: उसका कवि भी महाकाव्य के नायक की भांति ही स्वयं सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बन जाता है। १ रघुवंश दीपक एक महाकाव्य है। राम को अपने महाकाव्य का नायक बनाते समय कवि के मन में युगीन परिस्थितियों का सर्वांगीण दृश्य अवश्य रहा होगा। यहां संक्षेप में ही हम उन परिस्थितियों का परिचय यदि प्राप्त कर लें तो रघुवंश दीपक की रचना के मूल में कवि के उद्देश्य के प्रति किसी भी प्रकार की शंका न रह जायेगी। विक्रम की अठारहवीं शताब्दी भारतीय इतिहास का एक ऐसा काल खण्ड है जिसमें भारतीय जन जीवन धार्मिक असहिष्णुता, अन्याय तथा शासकों की धर्मान्धता के क्रूर प्रहारों से छटपटा रहा था। दासता में जकड़ा हुआ जन जीवन विक्षोभ, उत्पीड़न और असुरक्षा के वातावरण से त्रस्त था। शासकों के प्रति अविश्वास, आक्रोश तथा घृणा के भाव उत्पन्न हो गये थे। औरंगजेब तथा उसकेउत्तराधिकारियों को अपनी धर्मान्धता और हिन्दू विरोधी नीति के कारण पग-पग पर निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। देश में चारों ओर क्रान्ति की चिनगारियां भड़क उठी जिन्होंने प्रारम्भ में छोटे-छोटे आन्दोलनों में तथा कालान्तर में एक सशस्त्र राज्य क्रान्ति का रूप ग्रहण कर लिया। निरन्तर संघर्ष के कारण केन्द्रीय राज्य सत्ता प्रभावहीन दुर्बल औरछिन्न भिन्न हो गई थी। दक्षिण में छत्रपति शिवाजी का प्रादुर्भाव पंजाब में गुरु गोविन्दसिंह तथा वन्दा वैरागी राजस्थान में राजसिंह, बुन्देलखण्ड में छत्रसाल आदि जन नायकों ने जनता के टूटते हुये मनोबल को नया सम्बल प्रदान किया और जन जन में व्याप्त घृणा, अपमान तथा आक्रोश को एक जन आंदोलन के रूप में नई दिशा प्रदान की। हमारे कवि सहजराम जी का जीवन काल भी परिस्थितियों की ऐसी ही पृष्ठभूमि का है। कुछ कोउसने निकट से देखा था तो

---

१- डा० गुलाब राय- काव्य के रूप पृष्ठ -६३

कुछ का ऐतिहासिक ज्ञान उसके मस्तिष्क में था। जन मानस में व्याप्त निराशा और कायरता केभावों को दूर कर उसमें असीम साहस और जीवन की उद्दाप लालसा तथा विज्गीषु वृत्ति को जागृत करने की जातीय आवश्यकता का अनुभव उसने किया था और तदनुसार राम के चरित को अपने काव्य का विषय बनाकर उन्होंने युग के एक सजग और प्रबुद्ध महाकवि के कर्तव्य का पालन किया । कवि के 'रघुवंश दीपक ' में राम के उत्तराधिकारियों के भी वर्णन प्रस्तुत करके संघर्ष के दर्शन होते हैं । वह हमारे इस कथन की पुष्टि करता है कि कवि ने 'रघुवंश ' के दीपक श्री राम तथा उनके परवर्ती सम्राटों के उज्ज्वल तथा प्रेरक चरित्रों का वर्णन सोद्देश्य ही किया गया है। वस्तुत: युगीन सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का अवलोकन करने पर हम यह कह सकते हैं कि ' रघुवंश दीपक ' की रचना एक महान् उद्देश्य से प्रेरित होकर की गई थी। वह केवल वाणी के विलास अथवा कवित्व केप्रदर्शन मात्र के लिये नहीं थी ।

भक्ति आन्दोलन से पूर्व राम काव्यों की रचना का उद्देश्य भले ही केवल रावण वध रहा हो तथा शुद्ध इतिवृत्त के रूप में महाकाव्यों की रचना की मुख्य पृष्ठ भूमि भी वह रहा हो किन्तु भक्ति आन्दोलन के परवर्ती काल में रचित राम काव्यों की रचना मेंमात्र रावण वध ही उनका उद्देश्य नहीं था। उसमें भक्ति के विकास, प्रचार तथा हरि चरित गान द्वारा भावुक भक्तों तथा सामान्य जन मानस में आनन्दानुभूति की सृष्टि कर उन्हें राम कथा के मधुर रस का आस्वादन कराना मुख्य उद्देश्य था। साथ ही युगीन सांस्कृतिक चेतना तथा जातीय भावना को अभिव्यक्त करने का महान् उद्देश्य भी इस युग के कवियों के सम्मुख था। रामचरित मानस अथवा उसके बाद की अधिकांश रचनाओं में इसकी स्पष्ट झलक देखी जा सकती है । 'रघुवंश दीपक' की रचना में भी यह तथ्य स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

## रघुवंश दीपक की मौलिक उद्‌भावनायें तथा रचना की नवीनता

पूर्ववर्ती पृष्ठों के विवेचन में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि प्राचीन राम ~~कह~~ साहित्य के अपार मण्डार से कवि ने किस प्रकार विविध रंगो वाली मनचाही सामग्री ग्रहण की है किन्तु कथावस्तु के चयन में उसकी अपनी निजी रुचि एवं मौलिक चेतना कार्यशील रही है। तात्पर्य यह है कि उसमें कथानक को विविध साहित्यिक तथा पौराणिक स्त्रोतों से ग्रहण करके भी घटना प्रसंगों के संयोजन में कवि की निजी मौलिकता तथा नवीनता के दर्शन होते हैं। इस प्रक्रिया की पूर्ण जानकारी के लिये यहां कुछ प्रसंगों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है जिन्हें हम निम्न शीर्षकों में आबद्ध कर सम्पूर्ण 'रघुवंश दीपक' की मौलिक उद्‌भावनाओं तथा रचना की नवीनता संबंधी सामग्री को लक्ष्य कर सकते हैं।

१- कथावस्तु संबंधी मौलिक उद्‌भावना तथा नवीनता।

२- चरित्र उद्‌घाटन में मौलिकता तथा नवीनता।

३- विषयगत मौलिक उद्‌भावना तथा नवीनता।

४- शैलीगत मौलिक उद्‌भावना तथा नवीनता।

(१) (क) सर्व प्रथम हम कथावस्तु संबंधी मौलिक उद्‌भावना तथा रचना की नवीनता पर विचार करेंगे तथा कतिपय उदाहरणों से अपनी बात को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे। रघुवंश दीपक का सम्पूर्ण कथानक किसी एक ही स्त्रोत से नहीं लिया गया। मूल राम कथा में कतिपय ऐसी प्रासंगिक कथाओं को जोड़

दिया गया है जिनका उल्लेख अन्य राम काव्यों में नहीं मिलता। इनमें से मुख्य प्रासंगिक कथा प्रह्लाद चरित्र है। अन्य राम काव्यों में प्रहलाद तथा उसके पिता हिरण्यकश्यप तथा उसके पिता के भाई हिरण्याक्ष का केवल उल्लेख मात्र मिलता है। रघुवंश दीपक के कवि ने इस कथा को पूरे विस्तार के साथ वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने राम नाम के व्यापक प्रभाव तथा अनन्य भक्ति के प्रति पूर्ण निष्ठाप्रदर्शित करने के लिये ही प्रहलाद चरित्र का सविस्तार वर्णन किया है। यह कथा ग्रन्थ की भूमिका के भाग में ही आती है अतः मूल आधिकारिक कथा को पर्याप्त मात्रा में प्रभावित कर उसके मूल प्रवाह में बाधा उत्पन्न करती है।

(ख) द्वितीय प्रासंगिक कथा जो उतनी ही विस्तृत तथा पूर्ण है जितनी प्रथम है हनुमान बाल चरित्र। बाल्मीकि रामायण में इस कथा का वर्णन किया गया है किन्तु अत्यन्त संक्षेप में तथा अपूर्ण। रघुवंश दीपक में कवि ने राम काव्य के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र के जन्म तथा बाल्यावस्था का विस्तार सहित वर्णन कर उनका सुग्रीव की सेवामें जाने के कारण तथा उद्देश्य को भी प्रकाशित किया ~~डाला~~ है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने हनुमान के बाल चरित्र का वर्णन इस उद्देश्य से किया है कि उनके अति बलवान, महान् पराक्रमी, ~~तथा~~ अलौकिक सामर्थ्यवान, विनम्रशील तथा ~~होने/तथा परमप्रिय~~ अनन्य राम भक्त होने की ~~सूचना वह प्रारम्भ में ही~~ देना चाहता है। इस कथा से भी आधिकारिक कथा में पर्याप्त बाधा उत्पन्न हो गई है।

(ग) तृतीय महत्वपूर्ण कथा है श्रवण चरित्र। यह भी वाल्मीकि रामायण तथा रघुवंश दोनों में मिलती है किन्तु रघुवंश दीपक में उसे विस्तार के साथ नवीनता लिये हुए वर्णन किया गया है। इसकी नवीनता यह है कि श्रवण के बाण लगते ही जब वह मूर्च्छित हो जाता है और जब उसे राजा दशरथ उसके माता पिता के समीप घायल अवस्था में ले जाते हैं तो उसकी मृत्यु माता पिता के सम्मुख ही होजाती है। पुत्र की मृत्यु से शोकातुर श्रवण के अंधे माता-पिता दशरथ को जब यह शाप देते हैं कि जिस प्रकार हम पुत्र शोक में अपना शरीर त्याग रहे हैं तुम्हें भी इसी प्रकार पुत्र शोक में ही शरीर

छोड़ना पड़ेगा तो राजा दशरथ को दुख के स्थान पर सुख की अनुभूति होती है क्योंकि वे यह सोचने लगते हैं कि शाप वरदान हो गया और वे निस्संतान होने के महान परिताप से मुक्त हो गये। उन्हें इसमें ही प्रसन्नता होती है कि कम से कम संतान सुख तो मिलेगा। श्रवण चरित्र की इस विशेषता के कारण मूल आधिकारिक कथा में अवश्य ही वेग उत्पन्न होता है और उसे गति मिलती है ।

उपर्युक्त तीन महत्वपूर्ण प्रासंगिक कथाओं के अतिरिक्त अन्य छोटी-कथाओं को भी कवि ने मुख्य कथा के प्रवाह के बीच में इस प्रकार डाल दिया है कि वे मुख्य धारा में पड़ कर उसके साथ ही बढ़ती हुई उसी में विलीन हो जाती हैं। इनमें विश्वावसु गंधर्व की कथा तथा उस के साथ श्रीराम की बाल क्रीड़ा का चित्र, अज मंत्री को नेत्रदान, गंगा जन्म कथा, सिन्धु मन्थन तथा भगवान द्वारा मोहिनी रूप धारण कर अमृत का वितरण, सीताजी द्वारा श्रीराम के पास सारिका का भेजना तथा राम-सीता का विवाह के पश्चात् अयोध्या में विहार वर्णन। ब्राह्मण की गाय की खोज में श्रीराम तथा लक्ष्मण का विभिन्न लोकों में जाना तथा उन लोकों की विशेषता सहित राम की अलौकिकता का वर्णन। इन कथा प्रसंगों में कवि की निजी मौलिकता या नवीनता का एक मुख्य पक्ष यह है कि परम्परागत कथावस्तु के साथ ही वह अपनी रसिक भावना या माधुर्य भाव की उपासना का यथावसर समुचित समायोजन कर लेता है। यहां कवि पौराणिक शैली का अनुसरण करता हुआ प्रासंगिक कथाओं को जोड़ता है ।

(४) कथानक संबंधी जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण मौलिक उद्भावना तथा नवीनता हमें 'रघुवंश दीपक' में देखने को मिलती है वह है प्रबन्ध काव्य के उप-संहार वाले भाग से सम्बद्ध सीता राम के मिलन तथा उनके द्वारा पूर्ण किये गये अश्वमेध यज्ञ एवं पुन: अयोध्या पर राज्य करते हुए सदेह विमानारूढ़ होकर महाप्रयाण करना। अपने तथा भाइयों के सभी पुत्रों को सम्पूर्ण राज्य का वितरण कर श्रीराम सीता सहित सदेह परम धाम को जाते हैं । राम के राज्याभिषेक के बाद की कथा में सीता परित्याग ,लव कुश जन्म तथा अश्वमेध

यज्ञ में घोड़े की रक्षा करते हुए राम की सम्पूर्ण सेना का लव कुश के हाथों पराजित होना व सीता का पृथ्वी में प्रवेश कर जाने की कथा वाल्मीकि रामायण तथा रघुवंश में मिलती है। आचार्य केशवदास जी ने रामचन्द्रिका में इससे आगे बढ़कर सीता का राम के साथ अयोध्या लौटकर यज्ञ पूर्ण करने की कथा का वर्णन किया है। कवि सहजराम जी ने इससे आगे बढ़कर राम-सीता का नित्य मिलन तथा उन्हें सदेह परमधाम जाना दिखाकर राम काव्य धारा में एक नवीनता की सृष्टि की है (जो उनकी निजी रसिक भावना की भक्ति का द्योतक है)। सम्पूर्ण कथा का पर्यवसान दुखान्त न होकर सुखान्त में होता है।

२- कथावस्तु संबंधी मौलिक उद्भावना तथा नवीनता का परिचय हम उपर्युक्त विवेचन में प्राप्त कर चुके हैं। यहां हम 'रघुवंश दीपक' के कवि की चरित्र उद्घाटन में प्रदर्शित की गई मौलिक उद्भावना तथा नवीनता का लक्ष्य करने का भी प्रयास करेंगे। रघुवंश दीपक में सर्वाधिक महत्व पूर्ण चारित्रिक विशेषता तथा नवीनता लिये हुए श्रीराम का चरित्र है। कवि ने श्रीराम के चरित्र में नरत्व तथा ब्रह्मत्व का अपूर्व समन्वय स्थापित किया है। राम के नरत्व को प्रदर्शित करने में कवि ने उनमें मानवोचित विकारों तथा राग द्वेष से पूर्ण प्रसंगों को उपस्थित कर उनकी नर लीला को अत्यन्त स्वाभाविक तथा व्यवहारिक रूप प्रदान कर अनुकरणीय बना दिया है। इसी प्रकार भरत, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, दशरथ, सीता तथा कुश के चरित्र में भी नवीनता का समावेश किया है। इन चरित्रों का विस्तृत परिचय तथा उनमें प्रस्तुत किये गये नवीन परिवर्तन एवं मौलिक उद्भावनाओं को हम परवर्ती पृष्ठों में एतद्विषयक अध्याय में करेंगे। यहां इनकी ओर इतना संकेत मात्र करना ही पर्याप्त होगा कि 'रघुवंश दीपक' में उसके पूर्ववर्ती राम काव्यों की केवल चारित्रिक रूढ़ियों का ही पालन नहीं किया गया अपितु उनमें यथावश्यक परिवर्तन उपस्थित कर उन्हें अधिक स्वाभाविक तथा व्यवहारिक बना दिया गया है।

३- 'रघुवंश दीपक' की रचना में तीसरी नवीनता यह है कि उसमें विषयगत मौलिक उद्भावनायें पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। रघुवंश दीपक

की रचना के बहुमुखी उद्देश्य में एक उद्देश्य यह भी था कि राम की भक्ति तथा उनके चरित्र के यशोगान के प्रचार के साथ साथ समकालीन युगीन समस्याओं के समाधान केलिये एक उच्चादर्शी तथा महच्चरित्र को जन साधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर उनमें जातीय भावना तथा संस्कार को जागृत कर नवीन साहस का संचार किया जाये । वस्तुत: कवि ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य की कथावस्तु तथा चारित्रिक विकास की नवीनता की ओर निरन्तर ध्यान रखा है जो उसके सजग युग बोध का परिचायक है।

विषयगत एक अन्य नवीनता जो `रघुवंश दीपक` में परिलक्षित होती है वह यह कि कवि ने अपने युग में प्रचलित राम भक्ति धारा में रसिक भावना की भक्ति पद्धति का बड़ी कुशलता से समावेश किया है। सहजराम जी ने सम्पूर्ण ग्रन्थ में केवल तीन ही ऐसे कथा प्रसंग प्रस्तुत किये हैं जिनमेंराम - सीता के दामपत्य जीवन के माध्यम से उनकी बिहार लीलाओं का वर्णन किया गया है। इन्हीं प्रसंगों में कवि ने रसिक भावना की समस्त उपासनात्र पद्धति का वर्णन कर अपनी विशिष्ट भक्ति पद्धति का परिचय भी प्रस्तुत कर दिया है। रसिक साधना में वर्णित विभिन्न लोकों का वर्णन करते हुए सहजराम जी ने श्रीराम की नित्य बिहार स्थली साकेत धाम की स्थिति का वर्णन किया है जहां प्रमोद वन में सोमवट की छाया के नीचे राम-सीता रत सिंहासन पर आसीन है तथा जहां पर भू,श्री, लीला तीन शक्तियों सहित श्रीराम नित्य निवास करते हैं । इन्हीं प्रसंगों में कवि ने ` सहजा सखी ` के रूप में स्वयं अपने आपको अपने आराध्य के सामीप्य सुख का अवसर भी प्राप्त कर लिया है वस्तुत: विषयगत उसकी यह नवीनता भी उसके प्रेरक ग्रन्थ ` रामचरित मानस ` से उसकी स्वयं की रचना ` रघुवंश दीपक ` को पूर्णत: भिन्न कर देती है और कवि गोस्वामी ~~ba~~ तुलसीदास जी की मर्यादा वादी दृष्टिकोण को अपना कर भी रसिक साधना का उपासक बना रह सका था।

४- ` रघुवंश दीपक ` में शैलीगत नवीनता के भी दर्शन होते हैं। `रघुवंश को छोड़कर समस्त राम काव्य धारा में एक ही वंश के कई राजाओं के चरित्र

एक ही महा काव्य में नहीं मिलते । कवि सहजराम जी ने `रघुवंश दीपक` की रचना कर इस दिशा में सर्वथा नवीन प्रयोग किया है। श्रीराम के साथ ही उनके पुत्र तथा बाद में पौत्र के चरित्रों का वर्णन कर कवि ने हिन्दी राम काव्य धारा में एक नवीन कीर्ति मान स्थापित किया है ।

निष्कर्ष :

(१) उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुंच जाते हैं कि कवि ने पूर्ववर्ती राम काव्य परम्परा से प्राप्त कथावस्तु की सामग्री का अपने निजी ढंग से समायोजन कर युगीन आवश्यकता की पूर्ति के लिये इतस्तत: बिखरी हुई सामग्री को नये दृष्टिकोण से रखा है ।

(२) अपनी वैयक्तिक भक्ति भावना को परितुष्ट करने के लिये उसने यथावसर कतिपय रसिक भावना की भक्ति के अनुकूल नये प्रसंगों की उद्भावना की है ।

(३) अपनी काव्य चेतना तथा कवि प्रतिभा से वह सर्वथा नवीन प्रसंगों की योजना भी कर सका है ।

(४) ~~(४) अतः~~ हम यह निःसंदिग्ध रूप से कह सकते हैं कि कवि अपनी मौलिक काव्य चेतना में गोस्वामी तुलसीदास जी से बहुत कुछ प्रवृत्तिगत साम्य रखता है। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने परम्परागत काव्य सामग्री को अपने निजी काव्यादर्शों, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों ,युगबोध और निजी भक्ति साधना के अनुरूप परिमार्जित एवं यथावश्यक परिवर्तन के साथ प्रस्तुत किया है, ठीक उसी प्रकार की प्रवृत्ति एवं चेतना कवि श्रीसहजराम जी में भी दिखाई देती है। यह दूसरी बात है कि प्रतिभा की सूक्ष्मता तथा व्यापकता के दृष्टिकोण से हमारा आलोच्य कवि सामर्थ्य की उतनी ऊंचाई पर न पहुंच सका हो ।

---------